www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान) की ओर से प्रो. बी.एल. जैन (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय – मेसर्स पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित। सम्पादक – प्रो. दामोदर शास्त्री

RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 15, Issue: 1, January-June, 2023

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun (Rajasthan)

33वाँ स्थापना दिवस समारोह 06-08

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में कीर्तिमान 09

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र का प्रशिक्षण कार्यक्रम 10

साईबर जागरूकता दिवस 22

बिखेरे राजस्थानी संगीत और फाल्गुनी छटा के रंग 26-27

Grade 'A' by NAAC & Category 'A' by Ministry of Education

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed-to-be University)

Ladnun-341306, District Nagaur (Rajasthan) INDIA

A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values

D.Lit.
Ph.D.
M.A. / M.Sc.

- Jainology and Comparative Religion & Philosophy
- Prakrit & Sanskrit
- Nonviolence and Peace
- Political Science
- Yoga and Science of Living

- English, M.Ed., B.Ed.
- B.A., B.Com, B.Sc.
- Integrated Courses (B.A.-B.Ed. & B.Sc.-B.Ed.)
- Various Diploma & Certificate Courses

Regular and Distance Education

Upcoming Programme : Bachelor of Naturopathy and Yogic Sciences

- Value-based Education with Spiritual Ambience
- Lush Green Campus with Gurukul Environment
- Education for Women Empowerment and Entrepreneurship
- Student Exchange Programme with various National and International Institutions

Highlights :

- Grade 'A' by NAAC, Bangalore
- Category 'A' by Ministry of Education, GoI, New Delhi
- 12B Status by UGC, New Delhi
- India's 10 Best Universities to Watch in 2021 by Education Stalwarts magazine
- "Dr Shri Prakash Dubey Smriti National Philosophy Award" by All India National Philosophy Council.
- 'Best in Class University award' in 2018 at World HRD Congress
- "Best Deemed University in Rajasthan" by Asia Education Summit & Awards, 2018
- Ranked 10th in Top-25 Private/ Deemed Universities in India-2017 by Higher Education Review Magzine
- Recognized in "The 20 Most Admired Universities in India 2017" by The Knowledge Review
- "Jaina Presidential Award" by Federation of Jaina Association of North America
- Presidential award conferred to four faculty members
- 7 World records by the students of Dept. of Yoga and Science of Living
- Smart Classrooms
- Wi-Fi Equipped Safe and Secure Campus
- Rich Placements
- Hostel and Canteen Facility
- Air Conditioned Auditorium
- More than 15 highly Equipped Labs

For more details please visit - www.jvbi.ac.in or Contact Tel. 01581-226110, 224332, 226230

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्वभारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

संयम से क्या मिलेगा ?

प्रश्न किया गया—**संजमेणं भंते! जीवे किं जणयइ?** भन्ते! संयम से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर दिया गया—**संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ।** संयम से जीव अनाश्रव की स्थिति का निर्माण करता है।

सम्यक्तया विरति करना संयम है। प्रश्न हो सकता है कि विरति किससे करें? विरति उन चीजों से करें जो हमारी आत्मा को मलिन बनाने वाली है। विरति उन कार्यों से करें, उन आकर्षणों से करें, जो हमारे स्वभाव को विभाव में ले जाने वाले होते हैं।

इन्द्रियों के दो कार्य हैं। पहला कार्य है— शुद्ध ज्ञान करना यानी स्पर्श, रस, गंध रूप और शब्द कैसा है, यह जानना। दूसरा कार्य है— भोग करना। इन इन्द्रियों के द्वारा विषयों का भोग भी किया जाता है। जैसे प्रशंसा भरे शब्दों को सुनने से मन में आह्लाद का भाव आ गया तो समझना चाहिए श्रोत्रेन्द्रिय का भोग हो गया। इसी प्रकार रूप, गंध, रस और स्पर्श का भी भोग किया जा सकता है। संयम की साधना करने वाला व्यक्ति शुद्ध ज्ञान करे, किन्तु अपनी चेतना को भोग से बचाने का प्रयास करे। जब मन के साथ राग-द्वेष का भाव जुड़ जाता है, तब मलिनता आ जाती है। श्रीमद् भगवद्गीता में सुन्दर कहा गया है-

रागद्वेषवियुक्तैस्तु, विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा, प्रसादमधिगच्छति।।

विषयों का ग्रहण तो किया जा सकता है, किन्तु राग-द्वेष मुक्त इन्द्रियों से विषयों को ग्रहण करने का प्रयास करें। ज्ञाता-द्रष्टा भाव से विषयों का ग्रहण करें। उनके साथ राग-द्वेष का भाव न जुड़े। हम व्यवहार की दुनिया में जीवन यापन कर रहे हैं, विषयों की दुनिया में जी रहे हैं। हमारे कान शब्दों को सुनें, यह कठिन है। हमारी आंखें रूप को न देखें, यह असंभव है। शेष इन्द्रियों के द्वारा भी अपने-अपने विषयों का ग्रहण न हो, यह मुश्किल है। इसलिए मध्यम मार्ग और उचित मार्ग यह बताया गया है-

ण सक्का ण सोउं सद्दा सोयविसयमागता।
रागदोसा उ जे तत्थ ते भिक्खू परिवज्जए।।

साधक के मन में राग-द्वेष का भाव न आए, विषयों के प्रति आसक्ति का भाव न आए। साधक शुद्ध ज्ञान करे अथवा उचित रूप में भोग भी करे परन्तु आसक्त न बने। एक साधक भोजन करता है, किन्तु वह भी शरीर को चलाने के लिए करता है। शरीर हमारा सहयोगी है। हमारी संयम की साधना में सहयोग करता है। साधक शरीर को चलाने के लिए भोजन को ग्रहण करे। जब-जब साधक विषयासक्त बनता है, तब-तब वह साधना से दूर हो जाता है।

संस्कृत साहित्य में मन के लिए कहा गया है—**मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।** मन बंधन का कारण भी बनता है और मोक्ष का कारण भी बनता है। जो मन विषयों में आसक्त रहता है, वह बंधन की ओर ले जाता है और जो मन विषयासक्ति से मुक्त रहता है, वह मुक्ति की ओर ले जाने वाला होता है। आसक्ति से असंयम का पोषण होता है तो अनासक्ति से संयम की साधना होती है। शास्त्रकार ने कहा कि संयम से अनाश्रव की स्थिति का निर्माण होता है। जहां-जहां असंयम होता है, वहां अवश्यमेव आश्रव होता है। जितना-जितना संयम का विकास होता है, उतना-उतना अनाश्रव की स्थिति का निर्माण होता है और संवर की साधना का विकास होता है। एक साधक के सामने संयम ही मुख्य तत्त्व होता है। उसका खाना भी संयम युक्त हो, उसका चलना भी संयम युक्त हो, उसका बोलना, देखना आदि हर क्रियाकलाप संयम युक्त हो।

यौवनं धनसंपत्तिः प्रभुत्वमविवेकता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।।

चार चीजें बताई गई हैं- यौवन, धन-संपत्ति, सत्ता और अविवेक। श्लोककार ने कहा कि इनमें से एक-एक चीज भी विकृत करने वाली है, वहां यदि चारों का योग हो जाए तो फिर कहना ही क्या। किन्तु मेरा मंतव्य है कि यौवन भी विकृत नहीं करता, धन-संम्पत्ति भी विकृत नहीं करती और सत्ता भी विकृत नहीं करती, अगर एक अविवेक साथ में न रहे। यौवन, धन और सत्ता की अवस्था में उन्माद आ सकता है। परन्तु साथ में विवेक हो, संयम हो तो उन्माद को शान्त किया जा सकता है और विवेक युक्त यौवन आदि भी बड़ा काम का होता है।

आर्षवाणी में बहुत महत्त्वपूर्ण प्रश्न किया गया कि संयम से क्या प्राप्त होता है? तात्त्विक भाषा में कहा गया कि ज्यों-ज्यों व्रत, अप्रमाद आदि की साधना बढ़ती है, त्यों-त्यों आश्रव का निरोध होता है, कर्म आगमन का पथ अवरुद्ध होता है। संयम एक ऐसा तत्त्व है जो आन्तरिक समस्याओं का समाधान है तो बाह्य समस्याओं का भी समाधान है। इसलिए हम संयम की साधना करें, यह हमारे लिए श्रेयस्कर है।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

01. सतत प्रगति से विश्व का बेहतरीन संस्थान बना जैन विश्वभारती संस्थान 05

स्थापना दिवस समारोह

01. कुलपति ने विभिन्न नए कोर्सेज के संचालन और सुविधाओं की जानकारी दी 06

सम्मान

01. केन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल का अभिनन्दन 09
02. अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में कीर्तिमान बनाने वाले विद्यार्थियों का सम्मान 09

आई.क्यू.ए.सी.

01. वर्कशॉप ऑन आईपीआर विथ एम्फेसिस ऑन पेटेंट्स एंड कॉपीराइट्स आयोजित 10
02. 'पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र' का द्विदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित 10

उपलब्धि

01. संस्थान को बेस्ट डीम्ड यूनिवर्सिटी अवार्ड व कुलपति को ग्लोबल लाईफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड 11
02. गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय परेड में एनसीसी छात्रा निशा ने लिया हिस्सा 11

स्वास्थ्य जागरूकता

01. रोग पनपने से पहले पहचान और रोकथाम जरूरी-कुलपति 12

योग उत्सव

01. विश्व योग दिवस पर सामूहिक योगाभ्यास 13
02. काउंटडान योगोत्सव कार्यक्रम में किया योग 13

प्राकृतिक चिकित्सा

01. रोगमुक्त भारत पर व्याख्यान में बताई 'वन हेल्थ एप्रोच'' अवधारणा में पशु-पक्षी, वनस्पति, मनुष्य सबकी चिकित्सा एक साथ 14
2. एक संपूर्ण जीवनशैली है प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति - डॉ. अल्ताफुर्रहमान 15
03. नशामुक्त करने की दिलाई शपथ 15

राष्ट्रीय संगोष्ठी

01. दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'स्वतंत्रता-संग्राम में जैन सैनानियों के भूले-बिसरे इतिहास' पर चर्चा 16

विविध

01. महावीर जयंती पर प्राचीन मूल्य आधारित शिक्षा के आदर्श मॉडल पर चर्चा 18
02. स्मृति सभा का आयोजन करके मुनि महेन्द्र कुमार को दी श्रद्धांजलि 19
03. ऊपर उठना चाहते हो तो आस-पास के लोगों को भी ऊपर उठाने में सहायक बनें- प्रो. दूगड़ 19
04. आचार्य महाश्रमण के 62वें जन्मदिन पर कार्यक्रम आयोजित 20
05. वाद-विवाद प्रतियोगिता में चल-वैजयंती प्राप्त करने पर छात्राओं का सम्मान 21
06. साइबर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित 22
07. शिक्षा जगत में आए नवाचारों पर वर्कशॉप आयोजित 23
08. उड्डयन क्षेत्र में कैरियर पर महिला रोजगार परामर्श केंद्र में व्याख्यान का आयोजन 23
09. राष्ट्रीय युवा महोत्सव का आयोजन 24
10. पांच दिवसीय संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम 25
11. पांच दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन 26
12. खेल-कूद प्रतियोगिताएँ 28
13. 'भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को बढ़ावा देने में शिक्षक की भूमिका' पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित 29
14. दो दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी 30
15. महिला सिपाहियों ने सिखाए छात्राओं को हर परिस्थिति में आत्मरक्षा के विशेष गुर 31
16. 'स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन और शिक्षा' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित 31
17. युवा व अहिंसा प्रशिक्षण शिविर आयोजित 32
18. 'भारत का गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य' विषयक मासिक व्याख्यानमाला 34
19. राष्ट्रीय सेमिनार में तेरापंथ धर्मसंघ की पांडुलिपियों पर व्याख्यान 36
20. आचार्य श्रुतसंवर्द्धिनी व्याख्यानमाला में 'आधुनिक युग में सम्यक् दर्शन का महत्त्व' पर व्याख्यान 37
21. स्व. पूनमचन्द भूतोड़िया स्मृति व्याख्यानमाला आयोजित 37
22. रक्तदान शिविर के आयोजन में 47 यूनिट रक्त का संग्रहण 38
23. 'भारत के पंचप्राण' पर परिचर्चा' आयोजित 38
24. एन.एस.एस. का 7 दिवसीय विशेष शिविर आयोजित 39
25. जी-20 पर विविध कार्यक्रम आयोजित 40
26. कमांडिंग ऑफिसर ने किया एनसीसी गतिविधियों का निरीक्षण 41
27. 'पानी बचाओ, जीवन बचाओ' विषय पर संवाद कार्यक्रम आयोजित 42
28. फ्रेशर पार्टी का आयोजन, कान्ता सोनी को मिस फ्रैशर का खिताब 43
29. पर्व जयन्ती पर विविध कार्यक्रम आयोजित 44

RNI-RAJBIL/2009/32418

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

वर्ष-15, अंक- 1
जनवरी - जून, 2023

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
प्रो. दामोदर शास्त्री

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341306
नागौर, राजस्थान
दूरभाष : (01581) 226110, 226230
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

सतत् प्रगति से विश्व का बेहतरीन संस्थान बना जैन विश्वभारती संस्थान

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) अपनी स्थापना के बाद से ही निरन्तर प्रगति मार्ग पर अग्रसर है। कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ के कार्यकाल में इसने सफलता के नये मील पत्थर स्थापित किये हैं। नैक से 'ए' ग्रेड मिलने के अलावा इस संस्थान की सराहना लगातार हो रही है। जिसकी फलश्रुति अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों के माध्यम से हुई है। जैनविद्या एवं योग के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तरीय 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' के रूप में कार्य कर रहे इस संस्थान को विभिन्न श्रेणियों में मूल्यांकन के माध्यम से 'अवार्ड' प्रदान करने वाली देश की प्राचीन संस्था एकेएस वर्ल्डवाइड प्रा. लि. द्वारा दुबई में आयोजित ग्लोबल एजुकेशन समिट-2023 में बेहतरीन पाठ्यक्रमों का निर्माण करने एवं उन्हें लागू करने हेतु 'बेस्ट डीम्ड यूनिवर्सिटी' श्रेणी का 'एक्सीलेंस इन क्यूरिकुलर एस्पेक्टस' अवार्ड प्रदान किया गया है। यह सभी के लिए हर्ष की बात है। साथ ही यह भी गौरव की बात है कि माननीय कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ को इस संस्था द्वारा 'एक्सीलेंट इन लीडरशिप श्रेणी' का 'ग्लोबल लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' प्रदान किया गया। यह अवार्ड उनके द्वारा शिक्षा के विकास हेतु किये गए अप्रतिम कार्यों के लिए प्रदान किया गया। इस वैश्विक शिक्षा पुरस्कार के लिए 57 देशों से प्राप्त नामांकनों में से चयन किया जाना सच में गर्व का विषय है। ये दोनों अवार्ड्स केवल अवार्ड ही नहीं हैं, बल्कि संस्थान की उन्नति के नवीन आयाम कहे जा सकते हैं।

नवीन पाठ्यक्रमों की शुरूआत

संस्थान की गतिशीलता अपने कुलगुरु से सुयोग्य निर्देशन में सदैव गतिमान रही है। संस्थान में नेचुरोपैथी विभाग की स्थापना के बाद यहां 'योग एवं नेचुरोपैथी' का नियमित एवं 'आहार शास्त्र' का ऑनलाईन प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। जैनविद्या विभाग में 'प्राकृत का सामान्य बोध', टैरो रीडिंग तथा 'संस्कृत एवं प्राकृत' (लेवल सैकेंड) के नवीन ऑनलाईन पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं। जैन विद्या विभाग तथा अहिंसा एवं शांति विभाग के विभिन्न ऑनलाईन पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए ऑनलाईन पाठ्य-सामग्री तैयार की जा रही है। शारीरिक शिक्षक प्रशिक्षण के लिए नवीन नियमित कार्यक्रम (बी.पी.एड. एवं एम.पी.एड.) प्रारम्भ किए जाने के लिए राजस्थान सरकार के सम्मुख विचाराधीन है। आगामी सत्र 2023-24 में नियमित एवं दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों को ऑनलाईन माध्यम से प्रवेश की सुविधा प्रदान करने के लिए ऑनलाईन पोर्टल का निर्माण कार्य पूर्ण किया गया है। ऑनलाईन माध्यम से प्रवेश प्रक्रिया अब प्रारम्भ की जा चुकी है। यह सब उपलब्धियां उल्लेखनीय हैं और हमारा उत्साहवर्द्धन करती है।

नेचुरोपैथी हॉस्पिटल की प्रगति

संस्थान के अन्तर्गत आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज आफ नेचुरोपैथी एवं योग में संचालित आचार्य महाप्रज्ञ नेचुरोपैथी हॉस्पिटल का कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है। यहां चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया। होस्पिटल में डॉक्टर्स (2 Female & 1 Male) तथा अन्य सभी सहायक पदों में 1 डाईटीशियन, 3 थैरेपिस्ट, 1 हाउस-कीपिंग सुपरवाईजर एवं प्रशासक की नियुक्तियां पूर्ण की जाकर उपचार का कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है। साथ ही हॉस्पिटल के विकास और सौंदर्यकरण कार्य में परिसर में 350 छायादार एवं फलदार पेड़ों का सघन वृक्षारोपण किया गया है। 700 ईनरी बाड़ एवं 400 फलों व फूलों के नवीन पौधों का पौधारोपण किया गया है। आंतरिक साज-सज्जा को आधुनिक, वातानुकूलित बनाने के साथ मल्टी-मीडिया, मनोरंजन आदि सभी सुविधाएं प्रारम्भ की गई हैं। होस्पिटल में एक बार प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री एवं औषधीय तेलों एवं अन्य दवाओं का संग्रहण करके इसे साधन सम्पन्न किया गया है तथा 2 डीलक्स हाइड्रो थैरेपी मसाज टब एव दो स्टीम केबिन ओजोन जेनेरेटर सहित की व्यवस्थाएं भी की गई हैं। षट्कर्म योग-क्रिया-स्थल, मड-थैरेपी बाथरूम निर्मित किए गए हैं। ओपन जिम्नेजियम, रोड़-लाईट्स एवं पावर बेकअप के लिए जनरेटर-सेट स्थापित किया गया है एवं पैदलपाथ-वे का निर्माण किया गया है। जल-संग्रहण के लिए कुण्डों का निर्माण किया गया है। यहां बॉडी मसाज, स्टीम व सोना बाथ, मड पैक बाथ, सैंड फोर्मेशन, एक्यूपंक्चर, फेसियल व लोकल स्टीम, शिरोधारा, होट व कोल्ड कम्प्रेस एड पैक तथा थ्रोट, एब्डोमिन, आर्म, नी, लैग पैक, नेचुरल, होट एंड कोल्ड हिप बाथ, एनिमा, गेंजी, टर्मरिक, नीम बाथ, जकुजी व सर्कुलर जेट हायड्रोथैरेपी, कटि स्नान, जानु स्नान, ग्रीवा बस्ति आदि की सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाकर उनका प्रयोग प्रारम्भ किया जा चुका है। 7 व 8 जुलाई 2023 को दो दिवसीय निसर्ग उपचार शिविर का आयोजन किया गया था और उसके बाद 14-16 जुलाई 2023 को तीन दिवसीय आचार्य महाप्रज्ञ निसर्ग उपचार शिविर के आयोजन किए गए थे। यह उपक्रम धीरे-धीरे स्थानीय जनों के मध्य लोकप्रिय हो रहा है, जिसका परिचय बढ़ती बाह्य रोगियों की संख्या से मिल रहा है।

संस्थान लगातार नवीन आयाम स्थापित करने के साथ ही प्रगति की गति को सतत बनाए रख रहा है।

– जगदीश यायावर (अतिथि सम्पादक)

जैविभा का 33वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित

जीवन को सुखी बनाने के लिए मुस्कुराइए, दूसरों की प्रशंसा करें और अच्छा करने की ठान लें- प्रो. शर्मा

कुलपति ने विभिन्न नए कोर्सेज के संचालन और सुविधाओं की जानकारी दी

संस्थान के 33वें स्थापना दिवस समारोह में 20 मार्च को सुधर्मा सभा में सारस्वत अतिथि के रूप में प्रबोधित करते हुए महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी बिहार के पूर्व कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि जीवन को सुखी बनाने के लिए मुस्कुराना, प्रशंसा करना सीखना, ठान लेने पर सब कुछ कर सकने का जज्बा रखना, सकारात्मक बने रहना, अधिक अच्छा कर सकने की क्षमता का विकास तथा भारत की परम्पराओं के पालन करना आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों को सफलता के अनेक सूत्र बताए। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों में भी मुस्कुराना नहीं छोड़ना चाहिए। मुस्कुराने से आपका आत्मविश्वास बढेगा। उन्होंने किसी की भी निन्दा करने से बचने और प्रशंसा करने को आवश्यक बताया।

यह विश्वविद्यालय बनेगा विजडम सिटी

समारोह की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने सम्बोधन में बताया कि हम आत्मनिर्भरता की तरफ बढ रहे हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रथम अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी की परिकल्पना से लेकर द्वितीय अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ की दृष्टि और प्रेरणा का उल्लेख करते हुए कहा कि उनकी मंशा के अनुरूप इस संस्थान को एक विजडम सिटी के रूप में विकसित करने और प्राच्य भारतीय विद्याओं का उत्कृष्टतम की दिशा संस्थान बनाने में निरन्तर प्रगति की जा रही है। इसी प्रकार आचार्य महाश्रमण के निर्देशन में उनकी प्रेरणाओं को भी निमित्त बना कर पूरा करने में हम जुटे हैं। उन्होंने इस अवसर पर तीनों अनुशास्ताओं के साथ अब तक के कुलाधिपतियों और कुलपतियों के योगदान की सराहना की।

प्राकृतिक चिकित्सा में डिप्लोमा कोर्स के साथ विभिन्न ऑनलाईन पीजी कोर्सेज

प्रो. दूगड़ ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ की कल्पना के अनुरूप प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेदिक चिकित्सा और योग चिकित्सा के क्षेत्र में हमने कदम बढाए हैं। आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज ऑफ नेचुरोपेथी एंड योग के माध्यम से इसे पूरा करने जा रहे हैं, आगामी सत्र से इस सम्बंध में अनेक पाठ्यक्रमों का

प्रारम्भ किया जा रहा है। उन्होंने विभिन्न ऑनलाईन पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स और अनेक सर्टिफिकेट कोर्स जैनालोजी, संस्कृति, प्राकृत, योगा आदि के तैयार किए जा चुके हैं। प्राकृतिक चिकित्सा में डिप्लोमा कोर्स शुरू किया जा रहा है और उसके बाद सर्टिफिकेट और पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स भी शुरू किए जाएंगे। कुलपति प्रो. दूगड़ ने सुविधाओं में विस्तार के बारे में बताया कि संस्थान में शिक्षकों को शोध परियोजनाओं के लिए ग्रांट दी जाएगी। विभिन्न विषयों के चयन के बाद शोध के लिए सारी फंडिंग संस्थान द्वारा की जाएगी। यह भी तय किया गया है कि संस्थान की आय का दस प्रतिशत हिस्सा लाईब्रेरी के लिए लगाया जाएगा। उन्होंने अगले सत्र में स्टाफ के लिए 15 क्वार्टर्स का निर्माण करवाए जाने व उनके लिए भूमि खरीद किए जाने की घोषणा भी की। कुलपति ने कहा कि प्रतिवर्ष 8 से 10 उत्कृष्ट साहित्य रचनाओं का प्रकाशन संस्थान द्वारा किया जाएगा। इससे शिक्षक व शोधार्थी लाभान्वित हो सकेंगे। उन्होंने बताया कि लोक साहित्य व संस्कृति के सम्बंध में दो परियोजनाएं संस्कृति विभाग को भिजवाई गई है, जिनकी स्वीकृति के शीघ्र मिलने की आशा है। इससे संस्थान द्वारा लोक संस्कृति व साहित्य के क्षेत्र में कार्य किया जा सकेगा। राजस्थानी सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन आदि संभव हो सकेंगे। प्रो. दूगड़ ने बताया कि किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएं देने वालों को 'प्रोफेसर इन प्रेक्टिस' की नियुक्ति अगले सत्र से की जाएगी। इसकी स्वीकृति यूजीसी से मिल चुकी है।

मानवीय मूल्यों का संरक्षण आवश्यक

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति प्रो. आरएस यादव ने स्थापना दिवस को पुनर्मूल्यांकन का अवसर बताते हुए कहा कि अपनी 32 वर्षों की यात्रा में जैन विश्वभारती संस्थान आचार्य तुलसी की परिकल्पना के अनुसार लोगों को अज्ञानता के निराकरण के साथ वंचित व पिछड़ों के सशक्तिकरण

स्थापना दिवस समारोह

की दिशा में कार्य किया है। महिला सशक्तिकरण में इस विश्वविद्यालय का योगदान स्पष्ट झलकता है। समाज को अहिंसा, शांति, सौहार्द-सद्भाव को संदेश यहां से प्राप्त हो रहा है। यहां केवल शिक्षण व डिग्री देना ही नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का कार्य भी किया जा रहा है। उन्होंने वर्तमान में उभर रही राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियों के लिए भी तैयार रहने की आवश्यकता बताई।

उत्कृष्ट कार्यों के लिए किया गया सम्मान

समारोह में श्रेष्ठ विद्यार्थी के सम्मान में हेमकंवर, कल्पज्योति, संतोष ठोलिया, जैन पवित्र राजेश, एनसीसी की श्रेष्ठ केडेट्स के रूप में निशा व पूजा इनाणियां, एनएसएस की स्मृति कुमारी, ममता गोरा व अभिलाषा स्वामी को सम्मानित किया गया। शिक्षक सम्मान में विद्यानिधि सम्मान से डॉ. आभासिंह व लिपि जैन को नवाजा गया। कौशल निधि सम्मान राहुल दाधीच को दिया गया। श्रमनिधि सम्मान महावीर सिंह को दिया गया। इसी प्रकार खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए वर्ष भर की गतिविधियों व प्रगति की जानकारी दी। इस अवसर पर संस्थान की 32 सालों की प्रगति का वृत्त चित्र भी प्रस्तुत किया गया। स्वागत वक्तव्य प्रो. नलिन के. शास्त्री ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ समणी प्रणव प्रज्ञा के मंगल संगान से किया गया। अंत में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कृतज्ञता ज्ञापित की। समारोह में अतिथियों के रूप में प्रो. केएन व्यास, समाजसेवी भागचंद बरड़िया, समणी नियोजिका डा. अमलप्रज्ञा मंचस्थ रहे। कार्यक्रम में गांधी दर्शन समिति की सुमित्रा आर्य, अणुव्रत समिति के शांतिलाल बैद, अब्दुल हमीद मोयल, युवक परिषद के राजकुमार चौरड़िया, विश्व हिन्दू परिषद के नरेन्द्र भोजक, राजेन्द्र खटेड़, राम आनन्द गौशाला के अभयचंद शर्मा, शहर काजी सैयद मोहम्मद मदनी अशरफी, देवाराम पटेल आदि उपस्थित थे।

योगासनों, लोकनृत्य और समाज-सुधार नाटिका ने दर्शकों को मोहा

संस्थान के स्थापना दिवस समारोह के दूसरे सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया गया। सुधर्मा सभा में आयोजित इस कार्यक्रम में नृत्य, नाटिका, योगासनों की प्रस्तति और गीत-संगीत का ऐसा मोहक माहौल बना कि हर कोई वाह-वाह कर उठा। कार्यक्रम का प्रारम्भ नवकार मंत्र पर प्रस्तुति देकर किया गया। यह प्रस्तुति भूमि एवं ग्रुप द्वारा दी गई। इसके बाद अभिलाषा स्वामी ने कविता पेश की। हेमपुष्पा व नीलम के कठपुतली नृत्य को देख सभी अचम्भित रह गए। पूनम एवं समूह ने समाज सुधारक व महिला क्रांति की जनक सावित्री बाई फुले एवं फातिमा शेख पर नाटिका प्रस्तुत की। स्मृति सिंह ने लोकनृत्य को जीवन्त किया। मोनिका एवं समूह द्वारा प्रेम पर शानदार प्रस्तुति दी गई। सबसे विशेष प्रस्तुति में योग एवं जीवनविज्ञान विभाग के विद्यार्थियों द्वारा योगासनों एवं यौगिक क्रियाओं की सामुहिक प्रस्तुतियां देख कर तो दर्शकों ने दांतों तले अंगुलि दबा ली। कार्यक्रम का संचालन प्रगति चौरड़िया ने किया।

मूल्य आधारित शिक्षा देने वाला दुनिया का पहला विश्वविद्यालय-मेघवाल

केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल का समारोह पूर्वक अभिनन्दन

केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा है कि भारत को विश्व का नेतृत्व करना है। हम योग में सफल हुए हैं। अंतरिक्ष केन्द्र के रूप में भी विश्व का नेतृत्व करने जा रहे हैं। पूरी दुनिया में सबसे सस्ती व प्रामाणिक टेक्नीक हमारे पास होने से विकसित देशों के सेटेलाईट भी हमारे यहां से प्रक्षेपण किए जाते हैं। हम इस क्षेत्र में भी अमेरिका व रशिया जैसे विकसित देशों से आगे निकल चुके हैं। हम इस क्षेत्र में सबको पीछे छोड़ रहे हैं। आयुर्वेद में भी हम ग्लोबल लीडर बनेंगे। आने वाले समय में हमारे भारतीय पुरातन ज्ञान, पुरातन सभ्यता, पुरातन संस्कृति, वनस्पति ज्ञान आदि सभी ज्ञान का उत्थान होने जा रहा है। गुलामी के काल में हमारा भारतीय ज्ञान गायब कर दिया गया और जला दिया गया था। वे यहां संस्थान के सेमिनार हॉल में 20 मई को अपने अभिनन्दन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उनके केन्द्र सरकार में विधि एवं न्याय मंत्री बनने के बाद पहली बार विश्वविद्यालय में आने पर अभिनन्दन किया गया। वे इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं। उन्होंने कहा कि यह उनका सौभाग्य है कि वे आचार्य तुलसी की तपोभूमि पर विधि एवं न्याय मंत्री बनने के बाद पहला सम्बोधन दे रहे हैं। उन्होंने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय को दुनिया का पहला ऐसा विश्वविद्यालय बताया, जहां मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान की जाती है। मेघवाल ने कहा कि हमारी सरकार की उच्च प्राथमिकता में है कि नैतिक मूल्यों को शिक्षा व सभी क्षेत्रों में प्रमुखता दी जाए। उन्होंने बताया कि भारत का विकास मानवकेन्द्रित हो और संवेदनाएं भी उसमें समाहित हों। यहां मानव, प्राणी, पर्यावरण आदि सभी

कानून मंत्री मेघवाल का अभिनन्दन

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि अर्जुनराम मेघवाल सदैव दूसरों की सहायता के लिए कार्य करते रहे हैं और लोगों को सदैव सद्प्रेरणाएं देते रहे हैं। मूल्यपरक शिक्षा के लिए जैन विश्वभारती संस्थान समर्पित है। संस्थान नए मानव के निर्माण के लिए कार्य कर रहा है। हमें इस बात का हर्ष है कि कुलाधिपति के रूप में एक सुयोग्य नेतृत्व में संस्थान को कार्य करने का अवसर मिला है। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उन्हें अभिनन्दन पत्र व स्मृति चिह्न भेंट किए। प्रो. दामोदर शास्त्री ने उन्हें शॉल समर्पित किया। अभिनन्दन पत्र का वाचन प्रो. नलिन के. शास्त्री ने किया। प्रारम्भ में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा. युवराज सिंह खंगारोत ने किया।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में कीर्तिमान बनाने वाले विद्यार्थियों का सम्मान

जयपुर में 05-06 अप्रेल को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त करके समूचे लाडनूं क्षेत्र का गौरव बढाने पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने संस्थान की छात्राओं का सम्मान किया। कुलपति ने कहा कि व्यक्तित्व विकास, संस्काराधारित शिक्षा और शिक्षणेत्तर रचनात्मक गतिविधियां इस संस्थान की विशेषता हैं। इनसे विद्यार्थियों को जीवन की हर प्रकार की प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त होती है। उन्होंने छात्र-छात्राओं के सुखद भविष्य व उतरोतर सफलता की कामना करते हुए उन्हें सम्मानित किया व बधाई दी। जयपुर में राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 18वें अन्तर्राष्ट्रीय युवा महोत्सव ‘घूमर’ में दो दिनों में लाडनूं के जैन विश्वभारती संस्थान के विद्यार्थियों ने अपनी छाप छोड़ते हुए कुल 6 विद्यार्थियों ने विभिन्न कीर्तिमान बनाए।

इस घूमर में विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी, जिनमें अंग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिता में तेजस्विनी शर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में हेमपुष्पा चौधरी ने द्वितीय स्थान और हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता में अभिलाषा स्वामी द्वितीय रही। अंग्रेजी कविता प्रतियोगिता में दिव्या पारीक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इडियन फोक डांस (एकल लोकनृत्य) प्रतियोगिता में पूजा इनाणियां ने द्वितीय स्थान बनाया। वेस्टर्न डांस (एकल पश्चिमी नृत्य) प्रतियोगिता में आशीष गौड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अन्तर्राष्ट्रीय युवा महोत्सव में देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों के साथ नेपाल, बांग्लादेश आदि अनेक देशों के विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के उच्च शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने भाग लिया था। इनके सम्मान के अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के साथ डा. अमिता जैन भी मौजूद रही।

अपने आइडिया, खोज, निर्माण को सुरक्षित बनाएं, पेटेंट व कॉपीराइट करवाएं- डा. इन्द्रप्रीत कौर

वर्कशॉप ऑन आईपीआर विथ एम्फेसिस ऑन पेटेंट्स एंड कॉपीराइट्स आयोजित

संस्थान के इंटरनल क्वालिटी ऐश्योरेंस सेल (आईक्यूएसी) के तत्वावधान में आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम में 1 अप्रेल को आयोजित वर्कशॉप ऑन आईपीआर विथ एम्फेसिस ऑन पेटेंट्स एंड कॉपीराइट्स में मुख्य वक्ता के रूप में आईजीईएन एज्यु. सोलुशन प्रा. लि. चंडीगढ की निदेशक डा. इन्द्रप्रीत कौर ने पॉवर प्रजेंटेशन के माध्यम से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को कॉपीराइट, आईएसबीएन नम्बरों, पेटेंट, ट्रेडमार्क आदि के महत्व को उजागर करते हुए सरल भाषा में किसी भी आइडिया, खोज और निर्माण आदि का पेटेंट करवाने के सम्बंध में जानकारी प्रदान की और डुलीकेसी व पायरेसी से बचाव के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि कॉपीराइट, पेटेंट व ट्रेडमार्क ये बौद्धिक संपदा के संरक्षण के अन्तर्गत आते हैं। इनसे अपनी वस्तु, अपनी सोच, अपनी बुद्धि को सुरक्षित किया जा सकता है। पेटेंट किसी आइडिया, खोज या आविष्कार का किया जाता है। कॉपीराइट कोई म्युजिक, आडियो, पुस्तक आदि का किया जा सकता है और ट्रेडमार्क किसी सिम्बल, लोगो, चिन्ह, नाम आदि का किया जा सकता है। कौर ने बताया कि कॉपीराइट लेखक के मूल कार्यों की रक्षा करता है और पेटेंट आविष्कारों या खोजों की रक्षा करता है।

पेटेंट, ट्रेडमार्क व कॉपीराईट कैसे करवाएं

डायरेक्टर डा. इन्द्रप्रीत कौर ने यूटिलीटी पेटेंट, डिजाइन पेटेंट और प्लांट पेटेंट के बारे में भी बताया और पेटेंट करवाने, ट्रेडमार्क करवाने और कॉपीराइट करवाने के लाभों के बारे में बताते हुए उसकी पूरी प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। वर्कशॉप में चंडीगढ विश्वविद्यालय के प्रो वायस चांसलर डॉ. मनप्रीत सिंह मन्ना ने भी कॉपीराइट और पेटेंट के व्यावहारिक पहलुओं के बारे में जानकारी प्रदान की। वर्कशॉप की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने 'सबसे पहले सोचें और नया सोचें' का संदेश दिया और कहा कि व्यक्ति को हमेशा नवीन कार्यों के बारे में सोचना और उन्हें क्रियान्वित करते रहना चाहिए। अपने विचारों और खोजों की सुरक्षा के उपायों पर भी ध्यान देना चाहिए। उन्होंने अपने अहिंसा व शांति सम्बंधी नोट्स की कॉपीराइट नहीं करवाए जाने पर एक अन्य शिक्षक व शिक्षार्थी द्वारा अपने नाम से उनका प्रकाशन करवा लेने के बारे में उदाहरण दिया और कॉपीराइट व पेटेंट की आवश्यकता प्रतिपादित की। कार्यक्रम में ओएसडी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने अतिथि परिचय प्रस्तुत किया। स्वागत वक्तव्य जैनोलोजी की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने प्रस्तुत किया। प्रारम्भ में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का परिचय प्रस्तुत किया।

संस्कृति मंत्रालय की राष्ट्रीय पांडुलिपि योजना के तहत 'पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र' का द्विदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन योजना के अन्तर्गत संस्थान में संचालित 'पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र' में संस्थान में संरक्षित 6000 से अधिक पाण्डुलिपियों से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी को भारत सरकार की 'राष्ट्रीय पाण्डुलिपि अभियान' योजना के अन्तर्गत निर्मित ऑनलाईन पॉर्टल पर संरक्षित करने हेतु 27-28 मार्च, 2023 को द्विदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम एवं 'पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र' के समन्वयक मोहन सियोल ने बताया कि यह कार्यक्रम प्रमुख प्रशिक्षक के रूप में मंत्रालय से आए विशेषज्ञ श्री शिशिर पेढी के निर्देशन में आयोजित हुआ, जिसमें कार्यक्रम-समन्वयक, जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन एवं प्राकृत तथा संस्कृत विभाग के सम्पूर्ण संकाय सदस्य, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की सहभागिता रही। श्री शिशिर पेढी ने संस्थान के केन्द्रीय पुस्तकालय एवं 'पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र' का भी भ्रमण किया गया तथा संस्थान के कार्यों की गुणवत्ता से अति उत्साहित एवं प्रभावित होकर आश्वस्त किया कि संस्थान में शीघ्र ही निकट भविष्य में एक 21-दिवसीय पाण्डुलिपि अध्ययन प्रशिक्षण कार्यशाला का भी आयोजन मंत्रालय के सहयोग से करवाया जाएगा।

जैविभा संस्थान को मिला 'बेस्ट डीम्ड यूनिवर्सिटी' अवार्ड और कुलपति प्रो. दूगड़ को 'ग्लोबल लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड'

विभिन्न श्रेणियों में मूल्यांकन के माध्यम से 'अवार्ड' प्रदान करने वाली देश की प्राचीन संस्था ए.के.एस. वर्ल्डवाइड प्रा. लि. द्वारा दुबई में आयोजित ग्लोबल एजुकेशन समिट-2023 में 30 अप्रेल को जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) को बेहतरीन पाठ्यक्रमों का निर्माण करने एवं उन्हें लागू करने हेतु 'बेस्ट डीम्ड यूनिवर्सिटी' श्रेणी का 'एक्सीलेंस इन क्यूरिकुलर एस्पेक्ट्स' अवार्ड प्रदान किया गया। इसी कार्यक्रम में संस्थान के माननीय कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ को शिक्षा के विकास हेतु उनके द्वारा किये गए अप्रतिम कार्यों के लिए 'एक्सीलेंट इन लीडरशिप श्रेणी' का 'ग्लोबल लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' प्रदान किया गया। यह सम्मान उन्हें गत 30 अप्रेल को दुबई में आयोजित ग्लोबल एजुकेशन सम्मिट एंड अवार्ड कार्यक्रम 2023 में प्रदान किया गया। इस वैश्विक शिक्षा पुरस्कार के लिए 57 देशों से 985 नामांकन प्राप्त हुए थे, जिनके मूल्यांकन के पश्चात अवार्ड प्रदान करने वाली संस्था ने अवार्ड हेतु जैन विश्वभारती संस्थान एवं संस्थान के माननीय कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के नामों का चयन किया। इस वैश्विक शिक्षा शिखर सम्मेलन के सम्मानित अतिथि दुबई में क्रोएशिया गणराज्य के महावाणिज्य दूतावास के महावाणिज्यदूत जैस्मीन डेल्विक एवं विशिष्ट अतिथि अबू धाबी में हंगरी के दूतावास के मिशन उपप्रमुख लेज्लो मार्टन और दुबई में अजरबैजान गणराज्य के जनरल कांसुलेट के उप-परिषद खनलार पशाजदे थे।

गणतंत्र दिवस की राष्ट्रीय परेड में एनसीसी छात्रा निशा ने लिया हिस्सा

गणतंत्र दिवस पर नई दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली में लालकिला के सामने आयोजित समारोह (आरडीसी) में विशिष्ट प्रस्तुति में जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय में संचालित नेशनल कैडेट कोर की 3 राज बटालियन की एनसीसी छात्रा निशा ठोलिया ने भाग लिया। सफलता पूर्वक भाग लेकर आई इस छात्रा का यहां आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 28 जनवरी को कार्यक्रम आयोजित किया जाकर स्वागत-सम्मान किया गया। प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने निशा को विश्वविद्यालय का गौरव बताया तथा कहा कि यह विश्वविद्यालय लगतार राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर अपनी एक अलहदा पहचान बनाए रखने में कामयाब हुआ है। एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डा. आयुषी शर्मा ने भी छात्राओं को निरन्तर सफलता के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि एनसीसी के 61 हजार कैडेट्स में से राजस्थान से कुल 24 कैडेट का राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस समारोह में होने वाले गणतंत्र परेड में एनसीसी की परेड के लिए चयन किया गया, जिसमें नागौर जिले के लाडनूं आचार्य कालू कन्या विद्यालय की छात्रा निशा चयनित की गई। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ इस कैडेट को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी हैं। गौरतलब है कि इससे पूर्व संस्थान की छात्रा पूजा इनाणियां भी दिल्ली में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में आयोजित कालबेलिया नृत्य में सहभागिता करते हुए अपनी कला का प्रदर्शन कर चुकी हैं।

रोग पनपने से पहले पहचान और रोकथाम जरूरी- कुलपति प्रो. दूगड़

कैंसर पहचान के लिए विशेष स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि कैंसर वैश्विक स्तर पर मृत्यु का दूसरा प्रमुख कारण बना हुआ है। भारत में कैंसर के मामले निरन्तर बढते जा रहे हैं। समय पर उपचार के अभाव में यहां कैंसर के बाद जीवित रहने वालों की संख्या भी बहुत कम है। यह चिंताजनक है। इसके लिए रोग के पनपने से पहले ही उसकी पहचान और रोकथाम जरूरी है। वे यहां जैन विश्व भारती के सभागार हॉल में वर्ल्ड कैंसर केयर चेरिटेबल सोसायटी के अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित मोबाईल वाहनों से जैन विश्व भारती के जीवन विज्ञान भवन में आयोजित तीन दिवसीय विशेष चिकित्सा परीक्षण शिविर (27-29 जून) के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे। शिविर में आम लोगों के स्वास्थ्य की विभिन्न प्रकार की जांचें नि:शुल्क की गईं। यह आयोजन यहां डा. बीएस राठौड़ आर्गेनाईजेशन एवं जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर अतिथियों के रूप में समागत डा. धर्मेन्द्र ढिल्लों, पुरूषोत्तम राठौड़, डा. विजयसिंह ठाकुर, डा. बहादुर सिंह टंडन, डा. विजय सिंह घोड़ावत, डा. देवेन्द्र जैन आदि का स्वागत-सम्मान उत्तरीय अर्पित कर एवं साहित्य भेंट करके कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने किया।

धर्म से जीवन स्वस्थ बनता है

इस अवसर पर सान्निध्य प्रदान करते हुए मुनिश्री रणजीत कुमार ने अपने आशीर्वचन में डा. बीएस राठौड़ की स्मृति में परोपकार का कार्य किया जाने को श्रेष्ठ बताया तथा कहा कि डा. ज्योत्सना द्वारा लाडनूं के प्रत्येक व्यक्ति के स्वस्थ रहने की भावना को साकार करने का निरन्तर प्रयास परमार्थ का अच्छा कार्य है। उन्होंने कहा कि चिकित्सक व्यक्ति को शरीर से स्वस्थ बनाते हैं और धर्म व्यक्ति के जीवन को स्वस्थ बनाता है। उन्होंने बताया कि धर्म से मन प्रसन्न होता है और प्रसन्न मन से शरीर भी स्वस्थ रहता है।

14 लाख कैंसर के मामले हर साल बढ रहे हैं

वर्ल्ड कैंसर केयर सोसायटी के डा. धर्मेन्द्र ढिल्लों ने इस अवसर पर कहा कि हमारी वर्ल्ड कैंसर सोसायटी पूरे देश में और दुनिया भर में कैंसर की रोकथाम के लिए कार्य कर रही है। हर साल कैंसर के 14 लाख मामले बढ रहे हैं। इनमें से 10 लाख की मौत हो जाती है। कैंसर का पता तब चलता है, जब व्यक्ति लास्ट स्टेज में पहुंच जाता है, तब व्यक्ति का बचना नामुमकिन हो जाता है। इसके लिए स्वस्थ लोगों को ही समझना होगा और बचने के लिए हर साल टेस्टिंग करवानी चाहिए। लक्षण ध्यान में आते ही उनको दूर करने का इलाज करने से कैंसर हो ही नहीं पाता है। इसलिए सभी को चाहिए कि वे जांच करवाएं। प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा एवं ऑनलाईन अध्ययन केन्द्र के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए डा. बीएस राठौड़ के जीवन को स्मरण किया और श्रद्धांजलि अर्पित की। अंत में डा. ज्योत्सना राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन नीतेश माथुर ने किया।

मोटे अनाज की पोषकता पर पोस्टर प्रतियोगिता में खुशी रही प्रथम

अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष-2023 के अन्तर्गत संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 8 फरवरी को पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय 'पोषणाय जागृतम' अर्थात 'पोषक या मोटे अनाज के महत्त्व के बारे में जागरूकता' रखा गया। प्रतिभागियों ने मिलेट्स के लगभग सभी प्रकारों तथा उनमें समाहित लाभों को पोस्टर में समाहित करने का प्रयास किया। भारत में उपलब्ध कुछ सामान्य फसलों, जिनमें बाजरा, रागी (फिंगर मिलेट), ज्वार (सोरघम), समा (छोटा बाजरा), बाजरा (मोती बाजरा) और वरिगा (प्रोसो मिलेट) आदि शामिल हैं, के महत्त्व को आकर्षक पोस्टर्स के माध्यम से उजागर किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर खुशी जोधा रही। द्वितीय स्थान पर कोमल प्रजापत तथा तृतीय स्थान पर संतोष ठोलिया एवं प्रगति शर्मा रहीं। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने छात्राओं में सृजनात्मकता की प्रशंसा करते हुए जीवन में इसी तरह आगे बढ़ते रहने का संदेश दिया।

योग का लक्ष्य है वैश्विक एकात्मता कायम करना- कुलपति प्रो. दूगड़

विश्व योग दिवस पर किया सामूहिक योगाभ्यास

विश्व योग दिवस के अवसर पर 21 जून को जैन विश्वभारती संस्थान के महाप्रज्ञ सभागार में सामूहिक योगाभ्यास किया गया। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने योग दिवस की शुभकामनाएं देते हुए योग दिवस को एकात्मता की स्थापना को सशक्त माध्यम के रूप में रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि योग से शरीर, मन और चित्त की शुद्धि होती है। इस शुद्धीकरण से एकात्मता का विकास होता है। योग का उद्देश्य विश्व के प्राणी मात्र के प्रति एकात्म भाव की समुत्पत्ति है। इस अवसर पर योग एवं जीवन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित प्रोटाकोल के अनुसार योगाभ्यास करवाया, जिसमें गर्दन, कमर, घुटनों आदि की विभिन्न क्रियाएं करवाई गईं तथा अनेक योगासनों एवं प्राणायाम, प्रार्थना और ध्यान का अभ्यास भी करवाया गया। अंत में डा. युवराज सिंह खंगारोत ने आभार ज्ञापित किया।

उच्च वैश्विक ऊर्जाओं को शरीर व मस्तिष्क द्वारा ग्रहण करने का माध्यम है योग- कलेक्टर सामरिया

योगोत्सव कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारियों सहित सैकड़ों लोगों ने किया योग

जिला कलेक्टर पीयूष सामरिया ने कहा है कि योग जीवन का अभिन्न अंग है। योग से शरीर सकारात्मक ऊर्जा ग्रहण करता है। योग का यह उत्सव शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य ऊर्जा का वैश्विक ऊर्जा के साथ समन्वय रहेगा। शैक्षणिक व खेल आदि की तरफ विभिन्न विद्यार्थियों का रूझान होता है, लेकिन योग ऐसा संगम है कि इसमें शरीर अनुशासन प्राप्त करता है, इससे मानसिक शक्ति मिलती है और उच्च स्तरीय ऊर्जाओं को शरीर व मस्तिष्क ग्रहण करता है। वे यहां भारत सरकार के आयुष मंत्रालय, जैन विश्व भारती में संयुक्त तत्त्वावधान में सुधर्मा सभा में 18 अप्रेल को आयोजित योगोत्सव काउंटडाउन-64 में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। यह 21 जून को आयोजित किए जाने वाले विश्व योग दिवस से 64 दिन पूर्व रखे गए इस योगोत्सव काउंडटन कार्यक्रम के अवसर पर जिलाधीश नागौर पीयूष समारिया मुख्य अतिथि के रूप में मंचासीन रहे एवं प्रो. बच्छराज दूगड़, कुलपति, जैन विश्व भारती संस्थान कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम में जैविभा संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने प्रेक्षाध्यान की विधि, प्रयोग और लाभ के सम्बंध में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। मुनिश्री रणजीत कुमार ने मंगलपाठ करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। उन्होंने अपने पाथेय में कहा कि योग जीवन को रूपांतरण करने की महान प्रक्रिया है। यह योग का आयोजन मानसिक, शारीरिक व भावात्मक सभी दृष्टियों से मूल्यवान बने।

आसन, योग क्रियाओं व प्रेक्षाध्यान के करवाए प्रयोग – काउंटडाउन योगोत्सव में जैन विश्वभारती संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत नें योग-विद्यार्थियों की टीम के साथ सभी उपस्थित नागरिकों को योगाभ्यास करवाया गया एवं योग मुद्राओं की सुन्दर प्रस्तुतियां दी। समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा ने कार्यक्रम की थीम प्रेक्षाध्यान एवं योगा के बारे में बताया एवं प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। उन्होंने इस अवसर पर दीर्घ श्वासप्रेक्षा का प्रयोग भी करवाया। समणी प्रणवप्रज्ञा ने गीत के माध्यम से ध्यानयोगाभ्यास के संकल्प की प्रेरणा प्रदान की। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़ ने स्वागत-भाषण प्रस्तुत किया। आंगतुक जिला कलेक्टर पीयूष सामरिया, उपखंड अधिकारी अनिल कुमार, तहसीलदार डा. सुरेन्द्र भास्कर व अन्य अतिथियों को स्मृति चिह्न व शॉल भेंट करके जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरंचद लुंकड़, मुख्य न्यासी रमेशचंद बोहरा व परामर्शक भागचंद बरड़िया ने स्वागत किया। कार्यक्रम में उपखंड स्तरीय समस्त प्रशासनिक अधिकारियों उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार, पुलिस उप अधीक्षक, बीसीएमओ, सीबीईओ, नगरपालिका उपाध्यक्ष, पार्षदगणों की उपस्थिति रही। योगोत्सव में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के अलावा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, युवक परिषद, अणुव्रत समिति, भारत विकास परिषद आदि विभिन्न सामाजिक संस्थाओं तथा गुरुकुल डिफेन्स, लकी डिफेन्स व विभिन्न विद्यालयों व योगा एकेडमी द्वारा भी कार्यक्रम में सहभागिता की गई। कार्यक्रम का संचालन डा. विजयश्री शर्मा द्वारा किया गया।

दैनिक आचरण व व्यवहार में सुधार से रोगों से बचाव संभव- डॉ. डी.सी. जैन

‘रोगमुक्त भारत’ पर व्याख्यान में बताई ‘वन हेल्थ एप्रोच’ अवधारणा में पशु-पक्षी, वनस्पति, मनुष्य सबकी चिकित्सा एक साथ

वीवीएमसी एवं सफदरजंग हास्पिटल नई दिल्ली के न्यूरोलोजी विभाग के पूर्व हेड व प्रोफेसर डा. डीसी जैन ने कहा है कि भारत को रोगमुक्त बनाने के लिए अपने दैनिक आचरण में सुधार करने की जरूरत है। सोने, भोजन करने, फल व सब्जियां खाने के तरीकों व समय में पर्याप्त सुधार करके अपने आपको रोगों से दूर रखा जा सकता है। संस्थान के महादेवलाल सरावगी अनेकान्त शोधपीठ के तत्वावधान में 25 फरवरी को संचालित वार्षिक व्याख्यानमाला ‘आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञासंवर्द्धिनी व्याख्यानमाला’ के अन्तर्गत यहां आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम में एक दिवसीय व्याख्यान में ‘रोगमुक्त भारत का आध्यात्मिक-वैज्ञानिक आधार’ विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने आधुनिक चिकित्सा की अहिंसक प्रणाली व प्राणवान की रक्षा के दायित्व के सम्बंध में आयोजित विश्व सम्मेलनों एवं विविध संगठनों का सहयोग लेकर जो अभियान उन्होंने संचालित किया, उसका असर देखने को मिला और आज अमेरिका में 50 से 60 प्रतिशत तक लोग हिंसा से दूर हो गए हैं। इंग्लेंड व अन्य कुछ यूरोपीय देशों में भी इसका प्रभाव हुआ है।

रोगों को दूर रखने का तरीका है जैन धर्म में

उन्होंने बताया कि जैन धर्म में जो शुद्धता का चिंतन पानी को छानने के माध्यम से बताया है, वह भी रोगों को दूर रखने का ही तरीका है। फल-सब्जियां धोकर खाना जरूरी है, इनसे जूनोसिस बीमारियों से बचा जा सकता है। बदलते तापमान के कारण 200 तरह की बीमारियां पैदा होती है। विभिन्न पक्षियों से भी बीमारियां पैदा होती है। परिषहज बीमारियां भी होती हैं, जो कठिनाइयों के कारण होती हैं। छुआछूत के बिना फैलने वाली बीमारियों में हृदयरोग, ब्लड प्रेशर, डायबीटीज, स्मरण शक्ति का कम होना आदि के नाम गिनाते हुए उन्होंने बताया कि आज हर घर में ऐसी बीमारियां मिलेंगी। अलकोहल के सेवन, दवाइयों के असर, देर तक सोना, एनीमल फूड प्रयोग में लेने, भोजन देरी से करने, अधिक भोजन करने आदि से ये बीमारियां पनपती हैं। उन्होंने इनसे बचने के लिए प्लांट बेस्ड भोजन व न्यूट्रीशन, नियमित भोजन, व्यायाम, पैदल चलने सहित विविध उपाय बताते हुए कहा कि जीवन में सच्चाई व ईमानदारी हो तो जीवन स्वस्थ व सम्मान-योग्य बनता है।

वन हेल्थ एप्रोच

उन्होंने बताया कि एक अवधारणा सामने आई है, ‘वन हेल्थ एप्रोच’, जिसमें जानवरों, मनुष्यों व पेड़-पौधों तक को रोगों से बचाया जाता है। इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वीकार किया है और भारत ने भी माना है। इसमें पशु-पक्षी, वनस्पति, मनुष्य सबकी चिकित्सा एक साथ होगी। उन्होंने बताया कि चिकित्सा जगत में 2 करोड़ जीवों को कष्ट दिया जाता है, जानवरों पर एक्सपरिमेंट किया जाता है, जिसे काफी प्रयासों के बाद देश में अब एनसीईआरटी ने बंद करवा दिया है। उन्होंने कहा कि दुनिया को राह दिखाने के लिए हमें जिद नहीं बल्कि लोगों की राय को समझ कर उसका निराकरण करना चाहिए।

आधि, व्याधि, उपाधि की चिकित्सा भी जरूरी

व्याख्यानमाला की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि व्यक्ति को रोग मुक्त किया जाना संभव है। परिस्थिति के विपरीत होते हुए भी उससे बिना प्रभावित हुए यथास्थिति बने रहना ही स्वस्थ रहना है। परिषह-विजय महत्त्वपूर्ण है, विपरीत परिस्थितियों को सहने की क्षमता महत्त्व रखती है। उन्होंने रोगों को केवल शारीरिक ही नहीं आधि, व्याधि, उपाधि में विभाजित करते हुए उनकी चिकित्सा को भी जरूरी बताया। कार्यक्रम का प्रारम्भ समणी प्रणव प्रज्ञा के मंगल-संगान से किया गया। अतिथियों के स्वागत-सम्मान के पश्चात जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। समणी नियोजिका डा. समणी अमलप्रज्ञा ने अतिथि-परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में शोधार्थी अच्युतकांत जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर प्रो. नलिन के. शास्त्री, कुलसचिव प्रो. बीएल जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, वित्ताधिकारी आरके जैन, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़, डा. मनीष भटनागर, दीपाराम खोजा, पंकज भटनागर, डा. अमिता जैन, डा. सरोज राय, डा. लिपि जैन, विनोद कस्वां, प्रमोद ओला, जगदीश यायावर आदि उपस्थित रहे।

एक सम्पूर्ण जीवन शैली है प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति- डॉ. अलताफ-उर-रहमान

प्राकृतिक चिकित्सा पर व्याख्यान का आयोजन

संस्थान में प्राकृतिक चिकित्सा पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें सुप्रसिद्ध नेचुरोपैथिक चिकित्सा विशेषज्ञ डा. अलताफ-उर-रहमान ने 11 मार्च को अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. नलिन के. शास्त्री ने की और शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष व कुलसचिव प्रो. बीएल जैन विशिष्ट अतिथि थे। मुख्य वक्ता डा. रहमान ने प्राकृतिक चिकित्सा को सर्वश्रेष्ठ पद्धति बताते हुए कहा कि इसमें स्वास्थ्य लाभ के साथ रोगों का पूरी तरह से उन्मूलन कर शरीर को उसकी प्राकृतिक अवस्था में लाया जा सकता है। इस चिकित्सा पद्धति में रोगों के मूल कारण को समाप्त करने हेतु प्रचुर मात्रा में उपलब्ध प्राकृतिक तत्त्वों का ही उचित इस्तेमाल किया जाता है। प्राकृतिक चिकित्सा मात्र एक चिकित्सा सिस्टम नहीं, अपितु यह एक सम्पूर्ण जीवन शैली है। डॉ. रहमान ने कहा कि मानव शरीर स्वयं रोगों से लड़ने में सक्षम होता है, इसके लिए संतुलित संरक्षण विधि का नाम ही प्राकृतिक चिकित्सा है। प्रकृति से निकटता रखकर आदमी सदैव सेहतमंद बना रह सकता हैं। ऐलोपैथिक डॉक्टर भी स्वस्थ शरीर हेतु अब लोगों को प्राकृतिक स्थलों पर घूमने या बागवानी करने की सलाह दे रहे हैं।

पंच तत्त्वों पर आधारित है नेचुरोपैथी

पंच तत्त्वों पर आधारित नेचुरोपैथी के बारे में उन्होंने बताते हुए कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा सभी तरह के पहलुओं जैसे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक का उपचार एक साथ करती है। नेचुरोपैथी में उपचार के लिए पंच तत्त्वों आकाश, जल, अग्नि, वायु और पृथ्वी को आधार मानकर चिकित्सा प्रायोजित की जाती है। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में जोड़ों के दर्द, ऑर्थराइटिस, स्पॉन्डलाइटिस, सियाटिका, पाइल्स, कब्ज, गैस, एसिडिटी, पेप्टिक अल्सर, फैटी लीवर, कोलाइटिस, माइग्रेन, मोटापा, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, श्वांस रोग, दमा, ब्रॉनकाइटिस आदि समस्त प्रकार के रोगों का सफलतम उपचार संभव है। डा. रहमान ने बताया कि नेचुरोपैथी में मड बाथ, मिट्टी की पट्टी, वेट शीट पैक, हॉट आर्म एंड फुट बाथ, सन बाथ, कटि स्नान, स्टीम बाथ, एनीमा, स्पाइन स्प्रे बाथ, मॉर्निंग वॉक, जॉगिंग के साथ उपवास, दुग्ध-कल्प, फलाहार, रसाहार, जलाहार भी इलाज के तरीकों में शामिल हैं। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रो. नलिन के. शास्त्री ने स्वागत वक्तव्य के साथ विषय का परिचय प्रस्तुत किया। अंत में कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने आभार ज्ञापित किया। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने कार्यक्रम का संचालन किया।

नशामुक्त भारत पखवाड़ा मनाया, नशामुक्त करने की दिलाई शपथ

संस्थान में यूजीसी के निर्देशानुसार मनाए जा रहे ‘नशामुक्त भारत पखवाड़ा’ का 26 जून को यहां शपथ-ग्रहण के साथ समापन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में यहां पिछले 15 दिनों से नशामुक्ति पखवाड़े के तहत विभिन्न आयोजन किए गए। कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस अवसर पर नशा मुक्ति पखवाड़ा की जानकारी देते हुए संस्थान के सभी सदस्यों एवं उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति की शपथ दिलवाई तथा सबको प्रेरित किया कि एकजुट होकर नशामुक्त भारत अभियान के तहत स्वयं के साथ ही अपने परिवार, मित्र, समुदाय को भी नशामुक्त रखने का प्रयास करें। उन्होंने बताया कि परिवर्तन भीतर से शुरू होता है, इसके लिए स्वयं से शुरू करेंगे, तो अपने देश को नशामुक्त बनाने के संकल्प को भी साकार कर पाएंगे। इस अवसर पर उपस्थित सभी सदस्यों ने शपथ ग्रहण करते हुए देश को नशामुक्त करने में अपना योगदान देने की प्रतिज्ञा ली। कार्यक्रम में कुलसचिव प्रो. बीएल जैन, वित्ताधिकारी राकेश कुमार जैन, उप कुलसचिव विनीत सुराणा, सहायक कुल सचिव दीपाराम खोजा, पंकज भटनागर, डॉ. युवराजसिंह, जगदीश यायावर, डॉ. वीरेन्द्र भाटी, शरद जैन, रमेश चारण, रमेश सोनी आदि उपस्थित रहे।

देश का प्रत्येक नागरिक जैन दर्शन का समर्थक है- प्रो. दुबे

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'स्वतंत्रता-संग्राम में जैन सैनानियों के भूले-बिसरे इतिहास' पर चर्चा

संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में 'स्वतंत्रा-संग्राम में जैन सैनानियों के भूले-बिसरे इतिहास' विषयक आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (3 व 4 फरवरी) के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में सरदार वल्लभ भाई पटेल पुलिस सुरक्षा एवं आपराधिक न्याय विश्वविद्यालय जोधपुर के कुलपति डॉ. आलोक त्रिपाठी ने कहा है कि आजादी की लड़ाई केवल स्वतंत्रता प्राप्त होने तक ही समाप्त नहीं हो गई थी, बल्कि आज स्वतंत्रता के सामने नई चुनौतियां मौजूद हैं, जिनके मुकाबले के लिए नए संघर्ष व नए तरीके होंगे। उन्होंने आजादी के सेनानियों को लेखबद्ध करने की जरूरत बताते हुए कहा कि इतिहास के पन्नों में दबे स्वतंत्रता सेनानियों की जानकारी को बाहर लाना देश की बहुत बड़ी सेवा होगी। इतिहास में तथ्य होते हैं और ये तथ्य आईना होते हैं। महात्मा गांधी के पीछे जैन समाज के तथ्य ही थे और उन्हीं को लेकर वे आगे बढे थे।

आवश्यक है इतिहास का पुनर्लेखन

यहां आचार्य महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में आयोजित इस सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए जैविभा के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि जैन समाज ने स्वतंत्रता के लिए बहुत बलिदान दिए हैं। इनका इतिहास भले ही लिखा गया या नहीं लिखा गया हो, लेकिन इन्न बलिदानों को भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने कहा कि इतिहास अपने स्वार्थो से लिखा जाता है। इसीलिए आज इतिहास के पुनर्लेखन पर कार्य चल रहा है। यह आवश्यक भी है, क्योंकि जिस नजरिए से देश का इतिहास लिखा गया, वह अंग्रेजों का था। उन्होंने आजादी के पूर्व और आजादी के बाद तब तक जैन समाज के देश को दिएगए योगदान का जिक्र किया और बताया कि आज देश में मात्र 0.49 प्रतिशत जैन आबादी है, लेकिन देश के कुल दान का 60 प्रतिशत हिस्सा जैन समाज का है। देश के कुल टेक्स का 24 प्रतिशत हिस्सा जैन समाज के लोग देश को देते हैं। देश में सबसे ज्यादा गौशालाओं का संचालन जैन समाज के लोग कर रहे हैं।

जैन समाज के पांच हजार लोगों ने की जेल-यात्राएं

राष्ट्रीय सेमिनार की विशिष्ट अतिथि डॉ. ज्योति जैन (खतौली) ने प्रारम्भ में विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि जब आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है, तो ऐसे में हमें भुला दिए गए आजादी के संघर्ष करने वाले शूरवीरों को भी याद करना चाहिए। 1857 से लेकर 1947 तक आजादी के लिए बहुत बलिदान दिए गए, जिनकी शोध में पता चला कि आजादी के लिए जैन समाज का बहुत योगदान रहा था। जैन समाज के लोगों ने स्वयं संघर्ष में सीधा भाग लिया, वहीं बहुत सारे जेलों में बंद लोगों के परिवार के भरण-पोषण का बीड़ा भी उठाया। उन्होंने स्वयं द्वारा लिखित पुस्तक के प्रथम व द्वितीय भाग को तैयारी करने के बारे में आई मुसीबतों का विवरण भी प्रस्तुत किया। डॉ. जैन ने बताया कि आजादी के लिए जैन समाज के 5 हजार लोगों ने जेल-यात्राएं कीं और करीब 22 ने अपना बलिदान तक दिया था। महिलाएं भी स्वतंत्रता आंदोलन में पीछे नहीं रहीं, उन्होंने भी जेल-यात्राएं की थीं। देश के संविधान के निर्माण में भी अनेक जैन समाज के लोगों का योगदान रहा था। राष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन सत्र के प्रारम्भ में जैन विद्या विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। सेमिनार का प्रारम्भ समणी प्रणव प्रज्ञा के मंगल संगान से किया गया। अंत में संगोष्ठी समन्वयक समणी अमलप्रज्ञा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने किया।

पराधीनता से मुक्ति के लिए जैन समाज ने लगाई प्राणों की बाजी

समापन समारोह के मुख्य अतिथि जगद्गुरू रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर के कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने कहा कि इस देश का प्रत्येक नागरिक जैन दर्शक का समर्थक ही है। सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, अपरिग्रह का कोई विरोध नहीं कर सकता है। हर व्यक्ति को दैहिक, दैविक व भौतिक दुःखों से मुक्ति के लिए जैन दर्शन मागदर्शक सिद्ध होता है। विषयों के समग्र प्रतिपादन के लिए अनेकांत उपयोगी है। उन्होंने कहा कि देश को पराधीनता से मुक्ति दिलवाने के लिए जैन समाज के लोगों ने भी प्राणों की बाजी लगाई थी। उनका इतिहास लिखा जाना चाहिए।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए जैविभा विश्वविद्यालय के विशिष्ट अधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने कहा कि जैन को जातिवाद में बांधने के बजाए कर्मणा जैन की संतों की कल्पना को साकार करना चाहिए। उन्होंने कलिंग नरेश खारवेल से लेकर चन्द्रगुप्त, चामुंडराय आदि से होते हुए राज्य व्यवस्थाओं व सैन्य कार्यों से जुड़े लोगों के बारे में बताया और नेताजी सुभाष बोस के सहयोगी रहे राजकुमार काशलीवाल और अन्य स्वतंत्रता आंदोलन से सम्बद्ध रहे जैन समाज के लोगों का विवरण देते हुए योगदान को उल्लेखित किया। विशिष्ट अतिथि साहित्य संस्कृति विद्यापीठ के पूर्व निदेशक प्रो. देव कोठारी ने भी अपने चिार रखते हुए संगोष्ठी के विषय की उपादेयता बताई और जैन समाज की सहभागिता को प्रतिपादित किया। कार्यक्रम में सुषमा स्वरूप व प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने के अपने दो दिनों के अनुभवों को साझा किया और संगोष्ठी की उपयोगिता बताई। प्रारम्भ में कार्यक्रम समन्वयक डॉ. समणी अमलप्रज्ञा ने दो दिवसीय संगोष्ठी का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने किया।

विभिन्न सत्रों में विद्वानों ने किए पत्रवाचन

इस सेमिनार के प्रथम सत्र का आयोजन प्रो. देव कोठारी की अध्यक्षता में किया गया। सारस्वत अतिथि प्रो. श्रेयांस कुमार सिंघई रहे। इस सत्र में विद्वान शोधवेत्ताओं प्रो. जयकुमार जैन, डॉ. सुमति जैन, डॉ. श्वेता जैन व सुबोध जैन ने विषय से सम्बंधित पत्रवाचन किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। द्वितीय सत्र का आयोजन प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन की अध्यक्षतामें हुआ, जिसमें सारस्वत अतिथि डॉ. रविन्द सहाय रहे। प्रो. श्रेयांस कुमार जैन, डॉ. सुरेन्द्र सोनी, डॉ. ज्योति बाबू, डॉ. योगेश जैन, डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा च स्वस्तिका जैन ने अपने पत्रवाचन किए। संयोजन अच्युतकांत ने किया। तृतीय सत्र में अध्यक्ष प्रो. सुषमा सिंघवी और सारस्वत अतिथि प्रो. अशोक कुमार जैन रहे। इस सत्र में प्रो. कमलेश कुमार जैन, डॉ.. सुनीता इंदौरिया, प्रो. जिनेन्द्र जैन व डॉ. कमल नौलखा आदि 60 सम्भागियों ने अपने पत्रवाचन किए। संयोजन सव्यसाची सारंगी ने किया।

महावीर जयंती पर प्राचीन मूल्य आधारित शिक्षा के आदर्श मॉडल पर चर्चा

आधुनिक व्यवस्थाओं में आवश्यक तत्त्व हैं भगवान महावीर के सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र- डॉ. मन्ना

चंडीगढ विश्वविद्यालय के वायस चांसलर प्रो. डॉ. मनप्रीत सिंह मन्ना ने 'प्राचीन मूल्यों पर आधारित शिक्षा के आदर्श मॉडल' के बारे में बोलते हुए कहा कि शिक्षक को किसी कुर्सी या कार्यालय की चाह नहीं होती है, शिक्षक को तो सिर्फ सम्मान चाहिए। आज विद्यार्थी की सोच में पैसे चुका कर शिक्षा हासिल करने की भावना प्रबल हो गई है, जबकि विद्यार्थी के लिए रोल मॉडल के रूप में शिक्षक होना चाहिए, न कि कोई अभिनेता। वे भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत इंडियन काउंसिल ऑफ फिलोसोफिकल रिसर्च नई दिल्ली के सौजन्य से जैन विश्वभारती संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में 1 अप्रेल को आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम में आयोजित महावीर जयंती समारोह में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने दूरस्थ शिक्षा का महत्त्व बताते हुए 'स्वयं' पोर्टल का महत्व समझाया। उन्होंने गूगल और तोते में तुलना करते हुए कहा कि गूगल पर बार-बार पोस्ट किए गए गलत तथ्य को भी सत्य के रूप में दिखा दिया जाता है। उन्होंने भगवान महावीर के सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र के सिद्धांत के महत्त्व को आधुनिक व्यवस्थाओं में आवश्यक तत्त्व के रूप में उजागर किया। उन्होंने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पांच वैश्विक मूल्यों को बताते हुए सत्य, शांति, अहिंसा, प्रेम व सदाचरण के महत्त्व को प्रतिपादित किया।

विजन और मिशन विशेष है; जैविभा का

एआईसीटीई नई दिल्ली के पूर्व निदेशक डा. मन्ना ने स्वाध्याय के महत्त्व को बताते हुए कहा कि तकिए के बगल में पुस्तक का होना जरूरी है, अगर उसकी जगह मोबाईल ने ले ली तो जीवन बेकार हो जाता है। डा. मन्ना ने देश के 1100 से अधिक विश्वविद्यालयों में अन्य शिक्षा के साथ आचरण की शिक्षा दिए जाने को आवश्यक बताया। उन्होंने बताया कि वे देश में कश्मीर से कन्याकुमारी तक 457 विश्वविद्यालयों का भ्रमण कर चुके हैं। सबका विजन और मिशन अलग-अलग होता है, लेकिन यह जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय उन सबसे अलग है। इसका जो विजन और मिशन है, वह देश के प्रत्येक व्यक्ति व परिवार का होना चाहिए।

मूल्यों व आचरण आधारित शिक्षा सबसे अधिक महत्त्व रखती है। उन्होंने कहा कि इसके लिए छोटे-छोटे मानवीय मूल्यों, ध्यान आदि से सम्बंधित अल्पकालीन कोर्सेज का संचालन किया जाना चाहिए। उन्होंने अपने सम्बोधन में बार-बार जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के शांत व आध्यात्मिक वातावरण की प्रशंसा की और कहा कि जहां 500 से अधिक मोर बेधड़क विचरण करते हों, उनका पोषण होता हो, वह स्थान निश्चित रूप से शांत व आध्यात्मिक होता है। उन्होंने कहा कि किसी भी शोध का लाभ अगर आम आदमी के उपयोगी नहीं होता है, तो वह शोध किसी काम की नहीं रहती।

स्वयं का निर्माण करे व्यक्ति

समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि भगवान महावीर ने कहा था, स्वयं सत्य खोजें। व्यक्ति सत्य की खोज अपने स्तर पर कर सकता है। व्यक्ति को स्वयं का निर्माण करना चाहिए, जिसके लिए पुरूषार्थ जरूरी होता है। विनोबा भावे का उद्धरण देते हुए उन्होंने कहा कि महावीर ने सबसे पहले महिलाओं को दीक्षित करने और उन्हें पुरुष के समान मानने का काम किया था। उन्होंने इस अवसर पर नई शिक्षा नीति की कुछ व्यावहारिक समस्याओं के बारे में भी बताया। कार्यक्रम में ओएसडी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने अतिथि परिचय प्रस्तुत किया। स्वागत वक्तव्य विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने प्रस्तुत किया।

जैन सिद्धांतों पर 100 पुस्तिकाएं तैयार

प्रारम्भ में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि जैन सिद्धांतों पर आधारित 100 छोटी-छोटी पुस्तिकाएं तैयार की जा रही हैं, जिनमें से 15 पुस्तकें तैयार हो चुकी हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय में शिक्षा के साथ संस्कारों के उन्नयन और आध्यात्मिक प्रेरणा की विशेषता बताई। समण प्रणव प्रज्ञा के मंगल संज्ञान से कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़, मुख्य ट्रस्टी रमेश सी. बोहरा व पूर्व अध्यक्ष डा. धर्मचंद लूंकड़ थे। संचालन प्रो. एपी त्रिपाठी ने किया।

अवधान में पारंगत और 15 भाषाओं के विद्वान् थे मुनि महेन्द्र कुमार- कुलपति
स्मृति सभा का आयोजन करके मुनि महेन्द्र कुमार को दी श्रद्धांजलि

संस्थान के सेमिनार हॉल में 7 अप्रेल को आयोजित स्मृति सभा में तेरापंथ धर्म संघ के यशस्वी साधक प्रेक्षा प्राध्यापक प्रो. मुनि महेंद्र कुमार को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने सभा में बताया कि मुनिश्री महेन्द्र कुमार ने जैन विश्वभारती संस्थान के विचार के प्रस्फुटन से लेकर इसके विकास की यात्रा तक निरन्तर योगदान किया था। वे श्रमनिष्ठ, संघनिष्ठ व कर्तव्यनिष्ठ थे, जिन्होंने समयबद्धता पूर्वक कार्य के प्रति समर्पण रह कर सम्पूर्ण समाज को अपनी सेवाएं दी। वे काम और अध्यात्म के सिवाय कोई बात नहीं करते थे। कुलपति ने उनके संस्मरणों एवं योगदानों व अवदानों का विवरण देते हुए 86 वर्ष की अवस्था के बावजूद काम में लगे रहने और जैन आगमों पर काम करने के साथ ही उनके बाद काम को आगे बढाने का पूरा चिंतन किया था। केवल अंग्रेजी ही नहीं, बल्कि वे विश्व की विभिन्न 15 भाषाओं में भी पारंगत थे। वे अवधान विद्या में भी दक्ष थे और एक हजार डिजीट की संख्या तक आसानी से याद रख सकते थे। अपने प्रवचनों में विभिन्न पुस्तकों के रेफरेंस देना उन्हें प्रामाणिक बनाता था। उन्होंने जैन धर्म के वैज्ञानिक पक्ष को सशक्तता के साथ प्रस्तुत किया था तथा तेरापंथ धर्मसंघ को एक नयी पहचान देने में सहयोग प्रदान किया था। सभा में प्रो. समणी कुसुम प्रज्ञा, प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. बीएल जैन, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी व डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। स्मृति सभा में सभी ने दो मिनट का मौन रख कर महेन्द्र मुनि को श्रद्धांजलि दी। सभा का संचालन डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल ने किया।

ऊपर उठना चाहते हों तो आस-पास के लोगों को भी ऊपर उठाने में सहायक बनें- प्रो. दूगड़
नववर्ष पर नए संकल्प लेने और अपने स्वप्नों को जीने का आह्वान

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि स्वप्न लेने के बाद झपकी नहीं लें। उस स्वप्न को पूर्ण रूपेण जिएं और अपने पुरूषार्थ पूर्वक उस स्वप्न को पूरा करें। असंभव कुछ भी नहीं होता। पुरुषार्थ से सब संभव है। आगे बढना हमारी नियति होती है। स्वयं को ऊपर उठाना चाहते हो तो आस- पास के दूसरे लोगों को भी ऊपर उठाने में सहायक बनें। उन्होंने 2 जनवरी को नए वर्ष पर नए संकल्प के लिए आह्वान करते हुए कहा कि समय किसी के लिए रुकता नहीं। समय आपके पीछे रहना चाहिए। सूर्य की तरफ देखने से परछाई पीछे छूट जाती है। संकल्प लेकर ही आगे बढ सकते हैं। सफलता कभी भी अंतिम नहीं होती और असफलता कभी भी स्थाई नहीं होती है। अपनी पहचान और अपना भविष्य व्यक्ति स्वयं ही बनाता है। दूसरा पहचान नहीं देता। हर व्यक्ति अपने आपको सबसे बेहतर जानता है। आपकी छवि बनने पर कोई दूसरा उसे खराब नहीं सकता।

क्षमताओं का करें पूरा उपयोग – उन्होंने कहा कि सबमें क्षमताएं विद्यमान हैं, उनका पूरा उपयोग करना चाहिए। युवा टीम आगे आए और स्वेच्छा से काम हाथ में लें और काम हाथ में लेने के बाद उसे बेहतर करके दिखाएं। उन्होंने प्रेरित करते हुए कहा, सतत काम में लगे रहिए। काम नहीं करना भी एक सजा होता है। अपनी क्षमता का पूरा उपयोग करें।

नये वर्ष में नया संकल्प लेकर काम करें, पुरजोर प्रयत्न करें। उन्होंने कहा, संस्थान में नए चेहरे आगे आएं। स्वच्छता पर ध्यान दें, विकास व सुधार की सोचें। केवल अपने तक सीमित रहने के बजाए संस्थान के लिए भी सोचें। अकेडमिक काम, नैक का काम, युनिवर्सिटी की रैंकिंग का काम है, डेटा मैनेजमेंट का काम, रिपोर्ट तैयार करने आदि सब केवल कुछ ही लोगों तक सीमित नहीं रहे और अन्य लोग भी सीखें। नववर्ष के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में सबको बधाई व शुभकामनाएं देते हुए संस्थान के विभिन्न विभागाध्यक्षों डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, प्रो. रेखा तिवाड़ी, प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. नलिन के. शास्त्री ने भी विचार व्यक्त किए और नए संकल्पों के साथ साल में जुटने की जरूरत बताई। कार्यक्रम का संचालन संचालन डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल ने किया।

आचार्य महाश्रमण के 62वें जन्मदिन पर कार्यक्रम आयोजित

आचार्य महाश्रमण सत्यनिष्ठ हैं और सदैव निरवद्य भाषा का प्रयोग करते हैं- कुलपति प्रो. दूगड़

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि इस संस्थान के लिए संवैधानिक रूप से अनुशास्ता का पद है। वर्तमान में अनुशास्ता के रूप में विश्वविद्यालय पर आचार्यश्री महाश्रमण का आध्यात्मिक अनुशासन है। उन्होंने यहां सेमिनार हॉल में अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के 62वें जन्मदिवस पर 29 अप्रेल को आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए आचार्य महाश्रमण को अतुलित ज्ञान सम्पदा के धनी, जिज्ञासुवृति के साथ अनुसंधान प्रवृति एवं सप्रमाण बात करने वाले, संयम सम्पन्न संत बताया। प्रो. दूगड़ ने कहा कि आचार्य तुलसी से उन्होंने संयम ग्रहण किया और अचार्य महाप्रज्ञ से ज्ञानसम्पदा बढाई। आचार्य महाश्रमण तीव्र स्मरण शक्ति के धनी हैं। उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने उनकी स्मृति क्षमता को अद्भुत बताया। उन्होंने कहा कि उनमें आगमों का ज्ञान भरा है और वे आगमनिष्ठ भी हैं। उनके व्याख्यान आगम पर ही आधारित होते हैं। सत्य निष्ठा के गुण का उल्लेख करते हुए कुलपति ने कहा कि कि आचार्य महाश्रमण निरवद्य भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा के मिथ्यात्व दोष नहीं आता, और विचारों में अनेकांत होने से वे सत्यनिष्ठ भी बने रहते हैं। प्रो. दूगड़ ने महाश्रमण की पदयात्रा का उल्लेख करते हुए कहा कि करीब 10 सालों से वे सतत् चल रहे हैं और मौसम की हर अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति के बावजूद उनके कदम नहीं डगमगाते। इस पदयात्रा से उनके अनुभव प्रगाढ हुए हैं और उनके ज्ञान की प्रगाढता में वृद्धि हुई है। उन्होंने आचार्य महाश्रमण को अल्प-आहारी व श्रमनिष्ठ बताया तथा साथ ही कहा कि अपरिग्रही होने के बावजूद वे विकास और टैक्नोलोजी के विरोधी नहीं हैं। विकास को देख कर वे प्रसन्न होते हैं, हालांकि वे स्वयं मोबाईल, लैपटोप आदि का उपयोग तक नही करते। इस अवसर पर उन्होंने आचार्यश्री महाश्रमण के दीर्घायु, यशस्वी और स्वस्थ रहने की कामना की।

कार्यक्रम में प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डा. युवराज सिंह खंगारोत व डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने भी सम्बोधित किया और आचार्यश्री महाश्रमण की जीवन यात्रा और वैशिष्ट्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए उनसे प्रेरणा लेकर अपना जीवन सार्थक बनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल ने किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त शैक्षणिक, गैर शैक्षणिक स्टाफ के साथ मेडिकल कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी का मेडिकल स्टाफ भी उपस्थित रहा।

मंगलभावना व अभिनन्दन समारोह का आयोजन

संत जहां भी जाते हैं, मंगल भावों का प्रसार करते हैं- मुनिश्री विजय कुमार

मुनिश्री विजय कुमार ने कहा है कि संत अकिंचन होते हैं। उनके पास मंगलभावना ही होती है। वे जहां भी जाते हैं, मंगल भावों का ही प्रसार करते हैं। वे यहां जैन विश्व भारती स्थित वृद्ध साधु सेवा केन्द्र में एक साल तक प्रवास करके सेवाएं देने के उपरांत 19 फरवरी को छापर विहार करने से पूर्व आयोजित मंगलभावना समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। जैन विश्व भारती स्थित महाश्रमण विहार भवन में आयोजित इस समारोह में जहां मुनिश्री विजय कुमार के प्रति मंगलभावना व्यक्त की गई, वहीं मुनिश्री अभिजीत कुमार के मुम्बई से पदयात्रा करते हुए लाडनूं में मंगलप्रवेश करने एवं वृद्ध साधु सेवा केन्द्र का प्रभार सम्भालने के लिए उनका अभिनन्दन समारोह भी संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम में मुनिश्री रणजीत कुमार, मुनिश्री श्रेय कुमार ने भी अपने भाव व्यक्त किए। मुनिश्री कौशल कुमार ने गीत प्रस्तुत किया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा की ओर से श्रीमती राज ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। जैन विश्वभारती संस्थान की ओर से डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल, डा. शांता जैन, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बैद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की ओर से विनीत सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल की ओर से नीता नाहर ने मंगलभावनाएं एवं अभिनन्दन भावों को व्यक्त किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ महिला मंडल की बहिनों ने मंगलाचरण के अन्तर्गत स्वागत गीत व मंगलगीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन विजयश्री ने किया।

गणतंत्र दिवस समारोह मनाया

युवाओं में मौजूद है नैतिक मूल्यों व संस्कृति को बचाने की ललक- प्रो. दूगड़

संस्थान विश्वविद्यालय में गणतंत्र दिवस पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने 26 जनवरी को झंडारोहण किया। एनसीसी की केडट्स छात्राओं ने परेड कमांडर अंडर ऑफिसर गरिमा राठौड़ के निर्देशन में परेड की और ध्वज को सलामी दी। पायलट के रूप में सार्जेंट ममता गोरा व कैडेट दिव्या भास्कर थी। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि देश की आजादी के लिए अनेक कुर्बानियां देने वाले शहीदों के बलिदानों को भुलाना नहीं चाहिए, बल्कि उनके आदर्शो के अनुसार देश के लिए कार्य करना चाहिए। उन्होंने आजादी के अमृत महोत्सव के सम्बंध में आयोजित कार्यक्रमों एवं विश्वविद्यालय की छात्राओं की राष्ट्र-हित सम्बंधी उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि देश का युवा वर्ग आज सजग है और राष्ट्र की रक्षा करने में सक्षम है। आजादी के समय जिस प्रकार जन-जन में संघर्ष करने और स्वतंत्रता हासिल करने की ललक थी, लोगों में भी वैसी ही ललक अब राष्ट्र के नैतिक मूल्यों एवं संस्कृति को बचाने के लिए मौजूद है। यह उत्तम भविष्य का संकेत है। कार्यक्रम में कुलसचिव प्रो. बीएल जैन व प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी भी मंचस्थ रहे।

इस अवसर पर छात्रा टीना कुमारी व कोमल प्रजापत ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए, जिन्हें खूब सराहा गया। देश रंगीला, आयो रे शुभ दिन आयो रे एवं तूं सारे जहां से प्यारी मेरे भारत की बेटी गीतों पर पूजा व साक्षी ने समूह नृत्य प्रस्तुत किया। अभिलाषा स्वामी ने कविता पाठ किया और हर्षिता पारीक ने वंदे मातरम् गायन किया। कार्यक्रम का संचालन डा. युवराज सिंह खंगारोत ने किया। कार्यक्रम में उप कुलसचिव विनीत सुराणा, प्रो. दामोदर शास्त्री, डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डा. बलवीर सिंह चारण, डा. जेपी सिंह, डा. प्रगति भटनागर, डा. लिपि जैन, प्रमोद ओला, महिमा जैन, डा. अमिता जैन, डा. आभा सिंह, डा. सरोज राय, लेफ्टिनेंट डा. आयुषी शर्मा आदि उपस्थित रहे।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में चल-वैजयंती प्राप्त करने पर छात्राओं का सम्मान

सेठ नारायणदास बांगड़ स्मृति अखिल राजस्थान अन्तर्महाविद्यालय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता- 2022-23 में चल-वैजयन्ती प्राप्त करने पर संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने छात्रा अभिलाषा स्वामी व ममता गोरा को सम्मानित किया और उन्हें बधाई देते हुए उनकी उतरोत्तर प्रगति के लिए कामना की। यह वाद-विवाद प्रतियोगिता डीडवाना के राजकीय बांगड़ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आयोजित की गई थी। प्रतियोगिता में जैन विश्वभारती संस्थान की छात्राओं अभिलाषा व ममता गोरा ने भाग लेकर विषय के पक्ष व विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किए थे। इस प्रस्तुति में दोनों ही छात्राएं अव्वल रही।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजेता रही छात्राओं का सम्मान

वीर तेजा महिला शिक्षण एवं शोध संस्थान मारवाड़ मूण्डवा में आयोजित हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम व तृतीय स्थान पर काबिज रहने पर 13 जनवरी को संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित स्वामी विवेकानन्द क्लब की सदस्य छात्रा हेमपुष्पा चौधरी एवं अभिलाषा स्वामी को यहां प्रतीक चिह्न प्रदान करके सम्मानित किया गया। इन छात्राओं ने युवा दिवस पर 'दृढ़ जनसंख्या नियंत्रण नीति निर्माण ही आबादी असंतुलन के खतरों का कारगर समाधान' विषय पर पक्ष एवं विपक्ष में अपने विचार प्रकट किए थे। प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने यहां इन विजेता छात्राओं को यहां संस्थान का प्रतीक चिन्ह प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया।

विवेकान्द क्लब के प्रभारी अभिषेक चारण एवं सह संचालक प्रेयस सोनी को क्लब द्वारा संचालित गतिविधियों के लिए बधाई देते हुए प्रो. त्रिपाठी ने क्लब के उत्तरोत्तर विकास के लिए शुभकामनाएं व्यक्त की।

साइबर जागरूकता दिवस मनाया

अनुशासन, धैर्य एवं बुद्धिमत्ता से अपनी निजता भंग होने से बचाएं- एएसपी नेहरा

साइबर जागरूकता दिवस कार्यक्रमों की श्रंखला में संस्थान के आईसीटी हॉल में 2 मार्च को साईबर सुरक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एडिशनल एसपी डीडवाना विमलसिंह नेहरा थे और विशिष्ट अतिथि के रूप में पुलिस उप अधीक्षक राजेश ढाका थे। एडिशनल एसपी नेहरा ने कार्यक्रम में आधुनिक एवं पुरातन सम्बंधों की व्याख्या करते हुए वर्तमान समय में सार्वजनिक होती निजता के प्रति चिंता जाहिर करते हुए, इसके निवारण हेतु सभी को अनुशासन, धैर्य एवं बुद्धिमत्ता से जीवन जीने की सलाह दी। डीएसपी राजेश ढाका ने कहा कि वर्तमान में आधुनिकता की अति के रूप में कई प्रकार के साइबर क्राईम जन्मे हैं। आधुनिक एप्स का प्रयोग करते समय हमें पूर्ण सावधानी बरतनी चाहिए और जरूरी है कि किसी भी एप को बिना सोचे समझे डाउनलॉड नहीं करें। यदि कोई बैंकिंग की आधुनिक सुविधाओं के नाम पर ठगी हो भी गयी हो तो उसकी सूचना तुरन्त 1930 नम्बर पर दें, ताकि बड़े नुकसान से बचा जा सके।

पुलिस विभाग के साइबर एक्सपर्ट हेड कांस्टेबल गजेंद्र सिंह चारण ने विश्वविद्यालय की छात्राओं में साइबर जागरूकता लाने के लिए इस क्षेत्र के अनुभवों को व्यक्त किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य दिया। अंत में कुलसचिव एवं शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारी लाल जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर ने कार्यक्रम का संचालन किया।

'ऑनलाइन सुरक्षित रहें अभियान' के तहत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित

क्विज प्रतियोगिता आयोजित

भारत सरकार के इलेक्ट्रोनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में 'ऑनलाइन सुरक्षित रहें अभियान' के अंतर्गत क्विज प्रतियोगिता का आयोजन 11 फरवरी को ऑफलाइन तथा ऑनलाइन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि 'स्टे सेफ ऑनलाइन' नामक यह अभियान ऑनलाइन जोखिम और सुरक्षा उपायों के बारे में सभी उम्र के उपयोगकर्ताओं को संवेदनशील बनाने और साइबर स्वच्छता को बढ़ावा देने पर केंद्रित है, जिससे नागरिकों की साइबर सुरक्षा को मजबूत किया जा सके। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी शर्मा ने बताया की संस्थान में प्रति माह 'ऑनलाइन सुरक्षित रहें अभियान' के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। यह क्विज प्रतियोगिता भारत सरकार के एलेक्ट्रोनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा आयोज्य है, जिसमें संस्थान के समस्त विद्यार्थियों तथा शिक्षक एवं शिक्षकेतर सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

साइबर सुरक्षा प्रतिज्ञा कार्यक्रम का आयोजन

भारत सरकार के एलेक्ट्रोनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन व निर्देशन में 'ऑनलाइन सुरक्षित रहें अभियान' के अंतर्गत 'साइबर सुरक्षा प्रतिज्ञा' का ऑफलाइन तथा ऑनलाइन आयोजन 15 मार्च को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल.जैन ने संस्थान के सभी अकादमिक, अनाकदमिक सदस्यों एवं समस्त विद्यार्थियों को साइबर जागरूकता एवं सतर्कता की प्रतिज्ञा, शपथ ग्रहण के रूप में करवाई तथा कहा कि वर्तमान डिजिटल युग में तकनीकी ने जहां जीवन को अत्यधिक सुगम बनाया है, वहीं प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ते साइबर अपराध चिंतनीय बन गया है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने बताया की जी-20 की भारत की अध्यक्षता के दौरान, ऑनलाइन दुनिया में सुरक्षित रहने के लिए विशेष रूप से विकलांग व्यक्तियों सहित नागरिकों के बीच जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से 'स्टे सेफ ऑनलाइन' नामक एक अभियान चलाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत यह सत्यनिष्ठ प्रतिज्ञा कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

साइबर जागरूकता रैली निकाली

भारत सरकार के इलेक्ट्रोनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार 'ऑनलाइन सुरक्षित रहें अभियान' के अंतर्गत 29 अप्रेल को साइबर जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली में विभिन्न साईबर जागरूकता की तख्तियां हाथों में लेकर एवं साईबर जागरूकता के नारे लगा कर लोगों में ऑनलाईन धोखाधड़ी से बचने की चेतना छात्राओं ने उत्पन्न की। रैली से पूर्व शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल.जैन ने कहा, साइबर अपराधों के प्रति जागरूक तथा सतर्क रहने के लिए भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे अभियान 'स्टे सेफ ऑनलाइन' के निर्देशों का पालन करना चाहिए। छोटी-छोटी सावधानियों, अनजान लिंक पर क्लिक नहीं करना, मजबूत पासवर्ड रखना, किसी को भी ओटीपी नहीं बताना, सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत फोटोग्राफ अपलोड नहीं करना आदि से स्वयं को तथा अपने परिजनों को साइबर ठगों से बचाया जा सकता है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी शर्मा ने बताया कि संस्थान में प्रति माह आयोजित 'ऑनलाइन सुरक्षित रहें अभियान' की जानकारी दी। रैली व कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

शिक्षा जगत् में आए नवाचारों पर वर्कशॉप आयोजित

मूल दस्तावेज साथ रखने के बजाय डीजी लॉकर एवं एबीसी आईडी से सत्यापित करवाएं दस्तावेज- सुराणा

संस्थान के आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम में विद्यार्थियों की अंकतालिका एवं अन्य शैक्षणिक दस्तावेजों को सत्यापित एवं संग्रहित करने के लिए शिक्षा जगत में आए नवाचारों से अवगत करवाने के लिए 9 मार्च को आयोजित वर्कशॉप में मुख्य वक्ता उप-कुलसचिव विनीत सुराणा ने डीजी लॉकर, राष्ट्रीय शैक्षणिक भंडार (एनएडी), एबीसी आईडी आदि के बारे में विस्तार से बताया और इस बात पर बल दिया कि अब साक्षात्कार के समय या अन्य किसी आवश्यक कार्य के लिए अपने मूल दस्तावेजों को साथ रखने की कोई आवश्यकता नहीं होगी, बल्कि डीजी लॉकर एवं एबीसी आईडी के माध्यम से ही दस्तावेज सत्यापित करवाए जा सकेंगे। इन्होने तीनों ही प्रणालियों के उद्देश्य एवं वर्तमान में आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ये प्रणालियां एवं नवाचार विद्यार्थियों के लिए काफी लाभदायक होंगे, जिनसे वे अपने दस्तावेजों को डिजिटल रूप से संग्रहित रख सकते हैं। उन्होंने इन तीनों ही प्रणालियों के शुरु करने की प्रक्रिया एवं इनको प्रयोग करने के तरीकों पर भी जानकारी प्रदान की। वर्कशॉप के प्रारंभ में संस्थान के कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने इस वर्कशॉप के आयोजित करने के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और विद्यार्थियों के हित में काफी उपयोगी माना। इस कार्यक्रम में संस्थान के संकाय सदस्य, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

शोध अनुभाग में दस दिवसीय पी-एच.डी. कोर्स वर्क आयोजित

नव शोधार्थियों को सिखाए अच्छे शोध कार्य के गुर

संस्थान के शैक्षणिक ब्लॉक स्थित सेमिनार हॉल में आयोजित दस दिवसीय पीएचडी कोर्स वर्क में देश भर से 24 शोधार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में सभी नव प्रवेशित शोधार्थियों को शोध से जुड़े विभिन्न विषयों पर व्याख्यान व जानकारी प्रदान की गई। ऑनलाईन एजुकेशन एवं डिस्टेंस स्टडी सेंटर के निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने शोध के विविध पहलुओं को समझाते हुए शोधार्थियों को अधिक से अधिक श्रम व अधिक से अधिक अध्ययन करने का आह्वान किया। शोध निदेशक डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने शोध के विविध कार्यों पर प्रकाश डाला। डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने अपने शोधार्थियों को शोध तैयार करने के विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। इसी प्रकार अन्य प्राध्यापकों ने शोध की गुणवत्ता, शोध की विशेषताओं आदि पर प्रकाश डाला।

छिपे हुनर को प्रकट कर क्षमता में अनवरत वृद्धि करें- प्रिंस शर्मा

उड्डयन क्षेत्र में कॅरियर पर महिला रोजगार परामर्श केंद्र में व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित रोजगार परामर्श केंद्र में 12 अप्रेल को नागरिक उड्डयन विभाग द्वारा समय-समय पर निकलने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं एवं विभिन्न अंतरराष्ट्रीय उड्डयन संस्थानों में कैरियर को लेकर दिल्ली से इंडिगो फ्लाइट गुरुग्राम व दिल्ली के कस्टमर केयर अधिकारी एवं गुणवत्ता विशेषज्ञ प्रिंस शर्मा का व्याख्यान हुआ। उन्होंने अपने व्याख्यान में उड्डयन क्षेत्र में समय-समय पर निकलने वाली विज्ञप्तियों, उनसे संबन्धित तैयारियों एवं छिपे हुनर को प्रकट करने की क्षमता में वृद्धि के सम्बन्ध में बताते हुए कई रोचक जानकारियां भी दी। शर्मा ने कहा कि उड्डयन संस्थानों में ग्राहक सेवा कार्यकारी अधिकारी, पायलट, क्रू कैबीन मेम्बर्स आदि क्षेत्रों में छात्राएं अपना भाग्य आजमा सकती हैं। कक्षा 12वीं पास होने के साथ ही छात्राएं इस क्षेत्र को कैरियर विकल्प के रूप में चुन सकती हैं। साथ ही वर्तमान में बढ़ती साइड एजेंटशिप अपनाते हुए पढ़ाई के साथ-साथ भी आमदनी के अपने इस विकल्प को चुना जा सकता.है। इस फील्ड में उच्च गुणवत्ता वाली कंप्यूटर स्किल को महत्त्वपूर्ण मानते हुए छात्राओं को इस क्षेत्र में कैरियर चुनने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि आधुनिक परिदृश्य में नागरिक उड्डयन क्षेत्र में कैरियर की तलाश एक बेहतरीन रोजगार विकल्प माना जा सकता है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रिंस शर्मा का संस्थान का प्रतीक चिह्न देकर स्वागत एवं सम्मान किया गया। अंत में एंप्लॉयमेंट गाइडेंस सेंटर प्रभारी अभिषेक चारण ने आभार ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय युवा महोत्सव का आयोजन

जैन परम्परा में त्याग और परोपकार दोनों निहित हैं- संत धीरजराम महाराज

रामस्नेही सम्प्रदाय के संतश्री धीरजराम महाराज ने कहा है कि जैन परम्परा ने भारतीय संस्कृति को बहुत कुछ दिया है। जैन परम्परा में त्याग और परोपकार दोनों निहित रहे हैं। जीवन को आनन्दमय बनाने के लिए आर्ट ऑफ लिविंग के मूल जनक महावीर रहे हैं। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि अगर मेरा अगला जन्म हो, तो उसमें वे जैन बनना चाहेंगे। वे संस्थान के महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष में आयोजित किए जा रहे राष्ट्रीय युवा महोत्सव के दूसरे दिन 13 जनवरी को समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने जैन विश्वभारती संस्थान द्वारा सारे विश्व में शिक्षा और संस्कारों के भाव प्रकट करने को सराहनीय बताया। स्वामी विवेकानन्द के जीवन के कई प्रसंगों के बारे में बोलते हुए संत धीरजराम ने कहा कि उन्होंने भारतीय संस्कृति में प्रवाहित सामाजिक समरसता को अभिव्यक्त किया तथा कहा कि जन्म से सभी इंसान ही होते हैं, जातियां नहीं होती हैं, ये सब बाद में बनती है। हमें अपनी संस्कृति के अनुरूप समरसता का पालन करना चाहिए। उन्होंने जिज्ञासु बने रहने को आवश्यक बताया और कहा कि जिज्ञासा जीवन के लिए अनिवार्य है। उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक विचारों और स्वामी विवेकानंद के सिद्धांतों को सार्थक करने का आह्वान किया।

अपनी शक्तियों को पहचानें

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि ध्यान की एकाग्रता और ब्रह्मचर्य पालन से स्मरण शक्ति तीव्र बनती है। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के जीवन के प्रसंगों का उल्लेख भी किया और कहा कि व्यक्ति सब कुछ खो दे, तो अधिक बुरा नहीं है, लेकिन अगर वो अपनी उम्मीद को खो देता है तो बहुत बुरा होता है। कुलपति ने कहा कि सारे ब्रह्मांड की शक्तियां व्यक्ति में निहित होती हैं, आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी शक्तियों को पहचानें और उनका उपयोग करें। अगर व्यक्ति ईश्वर पर भरोसा करे, तो उसे भाग्य के अनुसार मिलता है, लेकिन अगर अपनी शक्तियों पर भरोसा करें, तो उसे वह सब मिलता है, जो वह चाहता है। विश्व में शक्ति की पूजा होती है, शक्तिहीनता की कभी नहीं। अहिंसा का सिद्धांत भी शक्ति से ही संभव होता है। उन्होंने आह्वान करते हुए कहा कि सभी अपनी शक्ति पर विश्वास करते हुए ही स्वामी विवेकानंद बनने की ओर बढ सकते हैं। कार्यक्रम में प्रो. नलिन के. शास्त्री और कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल ने किया।

व्यावसायिक कौशल विकास के लिए अल्पकालिक पाठ्यक्रम आयोजित

संस्थान द्वारा लघु कौशल विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत पुरूषों एवं महिलाओं के लिए 15 फरवरी से विभिन्न अल्पकालिक व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रमाणपत्र कोर्स प्रारम्भ किए गए। प्रभारी शैक्षणिक अधिकारी विजय कुमार शर्मा ने बताया कि इन अल्पावधि के सर्टिफिकेट कोर्सेज में बेसिक ट्रेनिंग ब्यूटी कल्चर प्रोग्राम में हेयर स्टाईल, नैल आर्ट, पेडिक्योर, मेनिक्योर और मेकअप का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जाएगा। यह कोर्स केवल महिलाओं के लिए 30 दिवसीय अवधि का था। एक माह का इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स महिला-पुरूषों सभी के लिए 50 सीटें निर्धारित थी। टैली एंड एकाउंटिंग कोर्स भी 30 दिवसीय था। शर्मा ने बताया कि इनके अलावा कोरल ड्रा एंड फोटो शोप का कोर्स 20 दिनों का था। सभी कोर्स में प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता सीनियर सैकेंडरी रखी गई थी।

लंदन में जेवीबी पिनर सेंटर पर कुलाधिपति पहुँचे

संस्थान के कुलाधिपति व भारत सरकार के विधि एवं न्याय मंत्री तथा संस्कृति व संसदीय कार्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल 5 जून सोमवार को लंदन में जैन विश्व भारती के जेवीबी पिनर सेंटर पधारे। डॉ. समणी प्रतिभा प्रज्ञा और समणी पुण्य प्रज्ञा की उपस्थिति में इस जेवीबी पिनर सेंटर में इंग्लेंड में रहने वाले प्रवासी भारतीयों ने श्री मेघवाल से मिल कर उनका स्वागत किया और उनसे बातचीत करके स्वदेश के बारे में और जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के बारे में जानकारी प्राप्त की। केन्द्रीय मंत्री ने लंदन में जेवीबी पिनर सेंटर की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की और उनके विदेश में रह कर अच्छा कार्य करते हुए भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के सराहनीय कार्य के लिए हर्ष जताया।

पांच दिवसीय संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम

सभी राजनैतिक दलों की सहमति से देश में एक साथ लागू हो राष्ट्रीय शिक्षा नीति- प्रो. दाधीच

वर्द्धमान ओपन यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच ने कहा है कि दुनिया के शिक्षा क्षेत्र में जो चल रहा है, उसे यहां भी लागू करने की जरूरत है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को क्रियान्वित किया जाना चाहिए, कहीं ऐसा नहीं हो कि यह केवल किताबों में ही पढने के लिए रह जाए। उन्होंने कहा कि हमारे देश में में आवश्यक है कि कोई भी नीति लागू किए जाने से पूर्व उस पर समस्त राजनैतिक दलों की सहमति बने, अन्यथा समस्याएं खड़ी हो सकती हैं। इसके लिए सर्वदलों की सामूहिक बैठक बुलाई जाकर सहमति पूर्वक इसे लागू करना चाहिए। सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों की भी सहमति इसमें आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा नीति में अनेक बातें ऐसी हैं, जो राज्यों द्वारा लागू की जानी है। वे संस्थान में 8 मई को संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम के अन्तर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर विचार-विमर्श के लिए आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के शुभारम्भ समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अनेक राष्ट्रव्यापी बातें हैं, जो सबको स्वीकार्य होनी चाहिए। स्वास्थ्य व शिक्षा ये दो ऐसे विषय हैं, जिन पर कोई विवाद नहीं हो सकता। उन्होंने नीति का सेगमेंटेशन नहीं करके पूरे देश में एकसाथ लागू करने की आवश्यकता बताई। डिप्टी रजिस्ट्रार विनीत सुराणा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में प्रारम्भ में डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने मुख्य वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया। अंत में कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने किया।

ऑनलाईन पाठ्यक्रमों से अधूरी शिक्षा को किया जा सकता है पूरा

सकांय संवर्द्धन कार्यक्रम में तृतीय दिवस 10 मई को उप कुलसचिव विनीत सुराणा ने दूरस्थ एवं ऑनलाईन शिक्षा के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। उन्होंने मूक्स एवं स्वयं पोर्टल के महत्त्व और उपयोग के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि आज के व्यस्त समय में शिक्षा को किसी कारणवश पूरा नहीं कर पाने पर अब काम के साथ पढ़ाई को भी जारी रखने के लिए छात्रों को शिक्षा के अन्य विभिन्न साधनों से खुली सामग्री, खुली जानकारी और खुली प्रौद्योगिकी के लिए अवसर मिलने लगे हैं। सिर्फ लैपटॉप या कम्प्यूटर पर इंटरनेट कनेक्शन के साथ कोई कहीं से भी और किसी भी समय आसानी से शिक्षा प्राप्त करने के लिए पूरे पाठ्यक्रम के साथ जुड़ा रह सकता है। उन्होंने दूरस्थ शिक्षा को इसके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण तरीका बताया तथा कहा कि ई-लर्निंग को भी शिक्षा के लिए सुविधाजनक साधन माना गया है। उन्होंने कहा कि यह खुला ऑनलाइन पाठ्यक्रम कई विषय-विशेषज्ञों और प्रमुख विद्वानों द्वारा विश्व के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों तक पहुंच प्रदान करता है।

नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क एवं इंडियन नोलेज सिस्टम की जानकारी दी

सकांय संवर्द्धन कार्यक्रम के अन्तर्गत 'उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की क्रियान्विति' विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिवस 12 मई को उप-कुलसचिव विनीत सुराणा ने नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क एवं इंडियन नोलेज सिस्टम के सम्बंध में यूजीसी की गाइड लाईन के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि चाहे वोकेशनल एजुकेशन हो या एकेडमिक एजुकेशन सबको क्रेडिट सिस्टम के अन्तर्गत लाया गया है। इसकी क्रेडिट एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) के अन्तर्गत जमा रहेंगी। नेशनल क्रेडिट फ्रेमवर्क द्वारा स्कूल से लेकर कॉलेज, यूनिवर्सिटी तक के स्तर पर हासिल किए गए क्रेडिट को एक साथ जोड़ दिया जाएगा। इस क्रेडिट फ्रेमवर्क में व्यावसायिक या कौशल शिक्षा के द्वारा अर्जित क्रेडिट को भी शामिल किया जाएगा। राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क के अनुसार एक शैक्षणिक वर्ष को किसी छात्र द्वारा उपयोग किये गए घंटों की संख्या के आधार पर परिभाषित किया जाएगा और इसी आधार पर शैक्षणिक वर्ष के अंत में इन्हें क्रेडिट प्रदान किया जाएगा। सुराणा ने इंडियन नोलेज सिस्टम के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सभी शिक्षकों को भारतीय ज्ञान प्रणाली की जानकारी होनी जरूरी है। इसके तहत उच्च शिक्षा के छात्रों को उनके शैक्षणिक पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में योग, आयुर्वेद, भारतीय संस्कृति आदि भारतीय ज्ञान प्रणाली के विविध पहलुओं पर आधारित पाठ्यक्रम तैयार किए जाएंगे। उन्होंने पांच प्रकार के रिफ्रेशर कोर्सेज के बारे में जानकारी दी। एफडीपी कार्यक्रम के समापन सत्र में कुलपति के ओएसडी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने कार्यक्रम को उपयोगी बताया। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने एनईपी 2020 के सभी पहलुओं की जानकारी को आवश्यक रूप से ग्रहण करने की जरूरत पर बल दिया। अंत में कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने आभार ज्ञापित किया।

प्रधानमंत्री के 'परीक्षा पर चर्चा' कार्यक्रम को सामूहिक रूप से देखा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 'परीक्षा पर चर्चा' कार्यक्रम के अवलोकन एवं बसंत पंचमी पर्व पर 27 जनवरी पर कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के शिक्षा विभाग में किया गया। कार्यक्रम के दौरान विशाल स्क्रीन पर सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों ने प्रधानमंत्री के 'परीक्षा पर चर्चा' में उन्हें ध्यानपूर्वक सुना। प्रधानमंत्री ने अपने सम्बोधन में प्रेरित करते हुए अनेक उदाहरणों द्वारा विद्यार्थियों को उनके हित के सम्बंध में समझाने का प्रयत्न किया। उन्हें सुनकर विद्यार्थियों की अनेक समस्याओं का समाधान स्वतः ही संभव हो पाया। छात्राध्यापिकाओं ने बताया कि प्रधानमंत्री का कार्यक्रम उन्हें बेहद उपयोगी लगा और इसका लाभ उन्हें जीवन में मिलेगा। इसी दौरान आयोजित बसंत पंचमी पर्व कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि हमें समय प्रबंधन रखते हुए अपने ज्ञान में वृद्धि करते रहना चाहिए। अपना अधिकतम समय ज्ञानार्जन में लगाना चाहिए और हमेशा सकारात्मक सोच बनाए रखनी चाहिए। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

पांच दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

सांस्कृतिक कार्यक्रम में छात्राओं ने बिखेरे राजस्थानी संगीत और फाल्गुनी छटा के रंग

चित्त को आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाता है संगीत- प्रो. शास्त्री

संस्थान में आयोजित पांच दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता के 21 फरवरी को शुभारम्भ समारोह में मुख्य अतिथि प्रो. नलिन के. शास्त्री ने रंगीले राजस्थान का जिक्र करते हुए कहा कि रंग हमारे मन में होता है। राजस्थान में भक्ति का अप्रतिम प्रवाह भक्त मीरा के स्वरों से गूंजा, शौर्य की गाथाएं यहां कण-कण में व्याप्त है, उनकी बिरदावलियां गाने वाले इस धरती को संगीत देते हैं। उन्होंने कहा कि संगीत चित को आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाता है। सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं को उन्होंने निर्मल आनन्द को चित में संग्रहित करने का उत्सव बताया और कहा कि इस उत्सव को वे स्पन्दन के रूप में देखते हैं। अध्यक्षता करते हुए शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि केवल पाठ्यक्रम की शिक्षा एकांगी होती है। सर्वांगीण शिक्षा ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक होनी चाहिए। संगीत को उन्होंने चिंताओं एवं तनाव से मुक्त करने वाला बताया। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि प्रो. रेखा तिवाड़ी ने जीवन में रंग, उमंग और उत्साह को जरूरी बताया। अंत में डा. लिपि जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता में उभर कर आई राजस्थानी कला

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के पांचवें दिवस आयोजित क्लासिकल व सामूहिक लोक नृत्य प्रतियोगिता में छात्राओं ने राजस्थानी संस्कृति के विभिन्न रंग जमकर बिखेरे। प्रतियोगिता में कुल 15 समूहों ने अपनी नृत्य प्रस्तुति दी, जिनमें अधिकांश में राजस्थानी संस्कृति की गूंज सुनाई दी। प्रतियोगिता में सुमन रेगर समूह, चेतना शर्मा समूह, पूजा शर्मा समूह, सपना समूह, पूजा चौधरी समूह, वंदना समूह, लीलाधर समूह, हर्षिता चौधरी समूह, सोनू समूह, राधा समूह ने मारवाड़ी गानों पर, हरुम निशा समूह, पूनम राय, ममता गोरा समूह, प्रियंका भंसाली समूह तथा मोनिका समूह ने राजस्थानी गानों पर प्रस्तुतियां देकर पूरे माहौल को राजस्थानी संस्कृति से ओतप्रोत कर दिया। निर्णायक मोबिन आगबान ने अपनी नृत्य प्रस्तुति से सभी को चकित किया। निर्णायक प्रगति चौरड़िया व प्रमोद ओला ने भी प्रतिभागियों को अभिप्रेरित किया। प्रतियोगिताएं के समापन सत्र में प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने कहा कि कला की प्रस्तुति में विशेषताएं लाने के लिए प्रेरित किया।

एकल नृत्य में दिव्या भास्कर व सामूहिक नृत्य में पूनम राय समूह प्रथम रहे

पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता में स्मृति कुमारी प्रथम, दिव्या भास्कर एवं साक्षी द्वितीय, मनीषा तृतीय स्थान पर रही। वाद-विवाद प्रतियोगिता में हंसा प्रथम, अभिलाषा द्वितीय, ममता गोरा एवं सिमरन बानो तृतीय स्थान पर रही। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में हेमकंवर प्रथम, प्रमिला द्वितीय, अभिलाषा तृतीय स्थान पर रही। बिना आग के व्यंजन प्रतियोगिता में साक्षी शर्मा प्रथम, कल्पना सोनी द्वितीय, चेतना तृतीय स्थान पर रही। एकल नृत्य प्रतियोगिता में दिव्या भास्कर, पूजा हिनानियाँ एवं मेराज प्रथम, ऐश्वर्या सोनी द्वितीय, हेमकंवर तृतीय स्थान पर रही। सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता में पूनम राय समूह प्रथम, पूजा चौधरी समूह द्वितीय, सपना निठारवाल समूह तृतीय स्थान पर रही। अंत में सांस्कृतिक प्रभारी डा. अमिता जैन ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा हर्षिता पारीक ने किया।

एकल नृत्य में बिखेरे राजस्थानी संगीत और फाल्गुनी छटा के रंग

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के चतुर्थ दिवस आयोजित एकल नृत्य प्रतियोगिता में भी छात्राओं ने जमकर राजस्थानी संस्कृति के विभिन्न रंग बिखेरे ओर फाल्गुनी छटा से भी माहौल को सराबोर कर दिया। प्रतियोगिता में कुल 67 छात्राओं ने अपनी नृत्य प्रस्तुति दी, जिनमें अधिकांश में राजस्थानी संस्कृति की अनुगूंज सुनाई दी। प्रतियोगिता में आयोजित कार्यक्रम के दौरान छात्रा मोनिका बुरड़क, पूनम राय, ज्योति बुरड़क, पिंकी रैगर, लक्ष्मी, खुशी मेघवाल, सपना, निशा पारीक, प्रियंका मेघवाल, मनीषा राठौड़, हेमपुष्पा चौधरी, सादिया बानो, कोमल प्रजापत व रूचिका ने प्रसिद्ध राजस्थानी गीतों पर खासी धूम मचाई और पूरे माहौल को राजस्थानी संस्कृति से ओतप्रोत कर दिया। इसी प्रकार मनीषा सिंघाड़िया, वंदना आचार्य, मनीषा झांझरिया, सोनम, पूजा इनाणियां, ज्योति सैन, मनोजा, निधि शर्मा, रूचिका पारीक आदि सभी छात्राओं ने भी अपनी रंगारंग प्रस्तुतियों ने सबको राजस्थानी रंग में रग डाला।

पंजाबी, गुजराती, दक्षिण भारतीय नृत्यों की प्रस्तुति

कार्यक्रम में विविधता लाते हुए मोनिका जोशी ने मीरां की भक्ति पर तथा ऐश्वर्या सोनी ने भरत नाट्यम, कत्थक नृत्य, ओड़ीसी नृत्य, मणिपुरी नृत्य आदि दक्षिण भारतीय नृत्यशैलियों को जीवन्त किया। दिव्या भास्कर ने पंजाबी नृत्य प्रस्तुत किया। राधिका चौहान ने गजल पर नृत्य की प्रस्तुति दी। एकल नृत्य प्रतियोगिता की निर्णायक रचना बालानी, मधु जैन व श्वेता खटेड़ रही। प्रारम्भ में तीनों निर्णायकों का स्वागत-सम्मान किया गया। परिचय व स्वागत वक्तव्य सांस्कृतिक प्रभारी डा. अमिता जैन ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा हंसा कंवर ने किया।

वाद-विवाद, सामान्य ज्ञान एवं बिना आग के व्यंजन प्रतियोगिताओं का आयोजन

इनसे पूर्व सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में वाद-विवाद, सामान्य ज्ञान एवं बिना आग के व्यंजन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। वाद-विवाद प्रतियोगिता में 26, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में 28, बिना आग के व्यंजन प्रतियोगिता में 36 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया एवं आनंद उठाया। इनमें वाद-विवाद प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. अशोक भास्कर, डॉ. अभिषेक शर्मा, डॉ. आयुषी शर्मा, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. अभिषेक शर्मा, खुशाल जांगिड, तनिष्का सोनी रहे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में निर्णायकों का पुष्पगुच्छ द्वारा सम्मान किया गया। अंत में सांस्कृतिक प्रभारी डॉ. अमिता जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन ऐश्वर्या सोनी ने किया।

नाटक, आशु भाषण एवं पोस्टर-पेंटिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में दूसरे दिवस नाटक, आशु भाषण एवं पोस्टर-पेंटिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सांस्कृतिक सचिव डा. अमिता जैन ने विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतियोगिता को आवश्यक बताया। नाटक प्रतियोगिता में लगभग 50, आशु भाषण प्रतियोगिता में लगभग 30, पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता में लगभग 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया। नाटक प्रतियोगिता के निर्णायक प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. सव्यांची सारंगी, आशु भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. बलवीर सिंह, प्रेयश सोनी और पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. मनीषा जैन, खुशाल जांगिड रहे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में निर्णायकों को पुष्पगुच्छ भेंट करके सम्मान किया गया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. लिपि जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन मोनिका जोशी ने किया।

गायन में कोमल प्रजापत प्रथम रही

डा. लिपि जैन ने प्रतिवेदन एवं परिणाम घोषित करते हुए बताया कि गायन प्रतियोगिता में कोमल प्रजापत प्रथम, सिमरन बानो द्वितीय, गोदावरी तृतीय स्थान पर रही। रंगोली प्रतियोगिता में सपना समूह प्रथम, विशाखा समूह द्वितीय, नजमा समूह तृतीय स्थान पर रही। मेहंदी प्रतियोगिता में सुमित्रा जोगी प्रथम, मनीषा, संगीता व निशा द्वितीय तथा सिमरन बानो तृतीय स्थान पर रही।

अनुपयोगी सामग्री का उपयोग प्रतियोगिता में अभिलाषा स्वामी एवं निकिता प्रथम, पूजा शर्मा, राधिका, निधि द्वितीय, साक्षी शर्मा तृतीय स्थान पर रही। नाटक प्रतियोगिता में मुमुक्षु दीप्ति समूह प्रथम, पूजा चौधरी समूह द्वितीय स्थान पर रही। आशु भाषण प्रतियोगिता में हर्षिता पारीक एवं हेमकंवर प्रथम, मुमुक्षु रिजुल द्वितीय, हेमपुष्पा एवं मुमुक्षु वीनू तृतीय स्थान पर रही।

खेल-कूद प्रतियोगिताएँ

कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, लम्बी कूद, ऊंची कूद, दौड़ प्रतियोगिताएं आयोजित

संस्थान में आयोजित वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं (13-15 फरवरी) में कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, लम्बी कूद, ऊंची कूद, दौड़ आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन सभी प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने जमकर दमखम दिखाया। प्रतियोगिताओं के अंतिम निर्णय में कबड्डी का फाइनल मैच योग तथा जीवन विज्ञान विभाग की टीम एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की टीम के मध्य हुआ, जिसमें आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की टीम विजेता रही। खो-खो का फाइनल मैच योग तथा जीवन विज्ञान विभाग की टीम का शिक्षा विभाग की टीम नं. एक के साथ मुकाबला हुआ, जिसमें शिक्षा विभाग की टीम विजेता रही। बैडमिंटन के फाइनल मैच में बीए चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा हेमपुष्पा विजयी रही। लंबी कूद, ऊंची कूद, 100 मीटर दौड़ प्रतियोगिताओं में 100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता (महिला वर्ग) में सुषमा ने प्रथम स्थान तथा निशा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 100 मीटर दौड़ (पुरुष वर्ग) में महेंद्र ने प्रथम तथा आशीष कुमार ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। लम्बी कूद में महिला वर्ग में अनीता ने प्रथम स्थान तथा किस्मत बानो तथा सुषमा ने संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में महेंद्र ने प्रथम तथा आशीष ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। ऊंची कूद महिला वर्ग में निशा प्रथम तथा किस्मत बानो द्वितीय स्थान पर रही।

हार-जीत से महत्वपूर्ण है खेल की भावना

तीन दिनों तक लगातार चली इन वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं का शुभारंभ विशेषाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने कबड्डी खेल से किया। प्रो. शास्त्री ने खिलाड़ियों से परिचय करते हुए बताया कि खेल में हार-जीत महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि खेल रुचिपूर्वक एवं खेल की भावना से खेलना महत्त्वपूर्ण है।

कार्यक्रम में दूरस्थ व ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी मुख्य अतिथि तथा कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन विशिष्ट अतिथि थे। इन खेल प्रतियोगिताओं के दौरान उप-कुलसचिव विनीत सुराणा, अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवारी, परीक्षा नियंत्रक डॉ. युवराज सिंह, योग तथा जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. सरोज राय, डॉ. अमिता जैन, डॉ. लिपि जैन, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, प्रमोद ओला, कुशाल जांगिड़, श्वेता खटेड़, तनिष्का शर्मा, देशना चारण, घासी लाल शर्मा, डॉ. लिपि जैन, डॉ. सुनीता इंदौरिया, डॉ. विनोद कस्वां, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, अभिषेक शर्मा आदि उपस्थित रहे। सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन खेल समन्वयक डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ खेल सचिव डॉ. बलबीर सिंह तथा खेल प्रशिक्षक दशरथ सिंह की देखरेख में किया गया।

स्टाफ ने लिया खेलकूद प्रतियोगिताओं में हिस्सा

संस्थान में स्टाफ सदस्यों के बीच खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन स्टाफ सदस्यों की खेलों में रूचि बढाने एवं उनके स्वास्थ्य को दुरूस्त बनाने के लिए किया गया। इसमें वॉलीबॉल व बैडमिंटन प्रतियोगिताओं में सभी सदस्यों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में आयोजित बैडमिंटन मैच में डॉ. लिपि जैन विजेता रहीं और प्रगति चौरड़िया उपविजेता रहीं। वॉलीबॉल प्रतियोगिता में टीम द्वितीय ने विजय प्राप्त की। प्रतियोगिता के दौरान विश्वविद्यालयकर्मी विनीत सुराणा, दीपाराम खोजा, पंकज भटनागर, डा. सत्यनारायण भारद्वाज, डा. अमिता जैन, डा. आभासिंह, श्वेता खटेड़, प्रमोद ओला, देशना चारण, विनोद कस्वा, ओमप्रकाश सारण, सब्यसांची सारंगी, घासीलाल शर्मा, राहुल दाधीच, अभिषेक शर्मा, तिल कुमार, अमीलाल चाहर आदि ने खेलों में हिस्सा लिया।

भारत में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ क्रियात्मक शिक्षा देने की परम्परा रही है- प्रो. शास्त्री

'भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को बढ़ावा देने में शिक्षक की भूमिका' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 'भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को बढ़ावा देने में शिक्षक की भूमिका' विषय पर 20-21 फरवरी को आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिवस मुख्य वक्ता के रूप में विश्वविद्यालय के विशेषाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने गुरु के महत्त्व को बताते हुए चाणक्य व चन्द्रगुप्त मौर्य, रामकृष्ण परमहंस व नरेन्द्र विवेकानन्द के उदाहरण प्रस्तुत किए। उन्होंने ऋग्वेद के 10वें सूक्त का मंत्र उल्लेखित करते हुए आंगिरस के विद्या सम्बंधी विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ क्रियात्मक ज्ञान की शिक्षा देने की परम्परा रही है। वेदों में आचार्य को वाचस्पति, वसुपति, भूपत, ज्ञान निधि, मनुर्भव, वाक्तृत्वविद, दूरदर्शी, प्रसन्नचित आदि गुणों से सम्पन्न होना आवश्यक माना है। उन्होंने शिक्षक के गुण बताते हुए कहा कि शिक्षक छात्र में स्वयं को देखते हैं और परिवर्तन के पहरूआ होते हैं। शिक्षक अपने दृष्टिकोण से लचीला होता है, सामाजिक परिवेश के साथ समन्वय करते हैं। शिक्षक अच्छा परामर्शदाता होता है। शिक्षक मूल्यों का संचरण करता है, ताकि मूल्यनिष्ठ समाज का निर्माण हो सके। शिक्षक भविष्य का संरक्षक होता है, अज्ञान के अंधेरे को दूर करता है, आत्मविश्वास से लबरेज होता है, प्रोत्साहक होता है और छात्रों को कठोर अनुशासन के साथ उद्यम के लिए प्रेरित करता है। सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने शिक्षा के स्वरूप को राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के अनुरूप बनाने पर जोर दिया तथा कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा, शिक्षक, विद्यार्थी सभी को बेहतरीन नजरिए से देखा गया है। कार्यक्रम के अंत में सेमिनार प्रभारी डा. सरोज राय ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डा. आभा सिंह, प्रमोद ओला, अभिषेक शर्मा आदि सभी संकाय सदस्य एवं छात्राध्यापिकाओं के अलावा देश भर के अनेक विद्वान भी सम्मिलित हुए।

18 विद्याओं व 64 कलाओं से सम्पन्न है भारतीय ज्ञान परम्परा- प्रो. अमिता पांडे

संस्थान के शिक्षा विभाग में 'भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को बढ़ावा देने में शिक्षक की भूमिका' विषय पर 21 फरवरी को आयोजित राष्ट्रीय सेनिमार में मुख्य वक्ता के रूप में लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली की प्रोफेसर अमिता पांडे भारद्वाज ने कहा कि भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशेषता है। इसमें सभी को उर्वरतायुक्त शिक्षा प्रदान करके भारत को न्यायसंगत एवं जीवन्त ज्ञान से समाज-विकास में योगदान देना शामिल है। फिर से एक ज्ञान-महाशक्ति के रूप में भारती की पहचान बनाने और प्राचीन विश्वगुरू की छवि को कायम करने में यह सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मूल भारत की व्यापक ज्ञान परम्परा है। भारतीय ज्ञान परम्परा में 18 विद्याएं और 64 कलाएं समाहित है, जो सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिकता में परिवर्तित करती हैं। वेद हमारे प्राचीन ग्रंथ हैं। उनका ज्ञान उपवेद और वेदांगों में आया है। इनमें प्रत्येक विषय का विशद विवेचन उपलब्ध हैं, जो भारतीय ज्ञान परम्परा की समग्रता को बताता है। ऐसा कोई विषय नहीं है, जो हमारे ज्ञान परम्परा में नहीं आया है।

सकारात्मक सोच, समर्पण भाव व प्रतिबद्धता से होता है अध्यापन कार्य

प्रो. पांडे ने कहा कि शिक्षा को मात्रा से नहीं, गुणात्मकता से लिया जाना चाहिए। शिक्षा उत्तरदायी होनी चाहिए। केवल ज्ञान देना हमारी परम्परा नहीं रही है, बल्कि आत्म-विकास और समग्र विकास का उद्देश्य रहा है। उन्होंने अध्यापन शिक्षा के सम्बंध में कहा कि अध्यापक तैयार करना सभी शिक्षा से अलग होता है। अध्यापन शिक्षा शिक्षक बनाने की प्रक्रिया पर आधारित है, जिसमें विद्यालयी अध्यापक तैयार करने पर जोर दिया जाता है। शिक्षा नीति में बहुविषयक शिक्षा पर जोर दिया गया है।

विद्यालयी शिक्षा में सभी विषय समाहित करने होंगे। अध्यापक को एक सकारात्मक सोच के साथ समर्पण भाव से प्रतिबद्ध होकर ईमानदारी, समझदारी व जिम्मेदारी से अध्यापन कार्य करवाना होता है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में वक्ता परिचय के बाद विषयवस्तु पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष व रजिस्ट्रार प्रो. बीएल जैन ने कहा कि भारतीय ज्ञान की जो परम्परा रही है, उसे आज समूचे विश्व में विभिन्न देशों ने अपनाया है। कार्यक्रम का संचालन डा. सरोज राय ने किया। कार्यक्रम में डा. आभा सिंह, प्रमोद ओला, अभिषेक शर्मा आदि सभी संकाय सदस्य एवं छात्राध्यापिकाओं के अलावा देश भर के अनेक विद्वान भी सम्मिलित हुए।

उच्च चिंतन, स्वाधीनता के भाव हैं साहित्य सृजन की आत्मा- डा. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'

दो दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी

'स्वतंत्रता आंदोलन एवं हिंदी साहित्य' विषय पर दो दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी (27-28 जनवरी 2023) का शुभारंभ संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय तथा दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कवि-साहित्यकार डॉ. नरेंद्र शर्मा 'कुसुम' ने उच्च चिंतन, स्वाधीनता का भाव, सृजन की आत्मा आदि को साहित्य का उद्देश्य मानकर आलस्य के भाव को मृत्यु का लक्षण माना और कहा कि साहित्य ऐसा होना चाहिए, जो कि समाज को ऊंचाइयों की ओर अग्रसर करे। उन्होंने निराला, माखनलाल चतुर्वेदी, भारतेंदु हरिश्चंद्र, भवानी प्रसाद मिश्र, जर्मन लेखक हरबर्ट रसैल आदि के उद्धरणों द्वारा विषय प्रतिपादित किया।

कलम की ताकत और लोकनायकों का योगदान

संगोष्ठी के सारस्वत अतिथि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर नरेन्द्र मिश्र ने कलम की ताकत और लोक नायकों के योगदान की सराहना करते हुए भारतीय आजादी में दोनों के योगदान को एक सिक्के के दो पहलु के रूप में स्वीकार किया। मैथिलीशरण गुप्त के साथ ही सियारामशरण गुप्त सरीखे उनके अग्रज के योगदान पर भी दृष्टिपात किया और शिवमंगल सिंह सुमन, जयशंकर प्रसाद, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी, राम प्रसाद बिस्मिल, जगदंबा प्रसाद, वंशीधर शुक्ल, सोहनलाल द्विवेदी आदि के कर्तव्यनिष्ठ लेखन एवं भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान आम जनमानस में जगाए गए स्वाभिमान व देश प्रेम के भावों की भरपूर प्रशंसा की, लेकिन साथ ही साहित्यकारों की देश प्रेम एवं आदर्शवादिता से विमुख वर्तमान पीढ़ी को भी पुनः कर्तव्यनिष्ठ सृजन हेतु जागरूक किया।

गुलदस्ते की तरह है भारत की सांस्कृतिक विशेषताएं

इस अवसर पर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिंदी प्रोफेसर व प्रख्यात कवि एवं गजलकार प्रो. शंभुनाथ तिवारी ने हिंदुस्तान की सांस्कृतिक विशेषता को विभिन्न सुमनों को चुनकर बनाए हुए गुलदस्ते के समान बताया तथा कहा कि इसमें अकेले किसी का महत्त्व न होकर सभी का सामूहिक सौंदर्य विद्यमान रहता है।

उन्होंने हिंदी की पहली प्रगतिशील रचना 'भारत-भारती' और प्रेमचंद के सोजे वतन' के उद्धरणों द्वारा विषय की सार्थकता को सिद्ध किया एवं पेड़ के विकास में जड़ का महत्त्व बताते हुए भारतीय आदर्शों, संस्कारों एवं संस्कृति के महत्त्व को इससे जोड़ा। संगोष्ठी का संयोजन प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने किया।

विभिन्न विद्वानों ने किया शोध-पत्रों का वाचन

उद्घाटन सत्र के पश्चात संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के हिंदी सह आचार्य डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह द्वारा की गई। इस सत्र में डॉ. सुमति कुमार मीणा, सुंदरम् शांडिल्य, डॉ. महेश कुमार दायमा, डॉ. सर्वेश कुमार मिश्र, डॉ. प्रदीप कुमार दुबे, आशीष कुमार मिश्र, डॉ. अशोक कुमार चारण व डॉ. श्रुति पारीक ने संगोष्ठी से संबंधित विभिन्न उप-विषयों पर आधारित अपने शोध पत्रों का वाचन भी किया। इन सत्रों का प्रारंभ श्वेता जैन एवं प्रगति चौरड़िया के मंगलसंगान के साथ किया गया। दोनों सत्रों में स्वागत वक्तव्य एवं आभार ज्ञापन क्रमशः प्रो. बनवारीलाल जैन व डॉ. प्रगति भटनागर तथा प्रो. रेखा तिवारी व प्रयस सोनी द्वारा किया गया। प्रथम सत्र का संचालन कार्यक्रम समन्वयक अभिषेक चारण ने किया।

सामाजिक जागरूकता के लिए शिक्षक-अभिभावक बैठक जरूरी - प्रो. त्रिपाठी

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 21 अप्रेल को शिक्षक-अभिभावक बैठक प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। प्रो. त्रिपाठी ने बैठक में शिक्षा में गुणवत्ता लाने को अनिवार्य बताते हुए बैठक के महत्व को उजागर किया और कहा कि निश्चित रूप से शिक्षक-अभिभावक एवं विद्यार्थी ही शिक्षा की सच्ची त्रिवेणी हैं। इससे सामाजिक जागरूकता बढ़ती है और विद्यार्थियों के हित में एक स्वस्थ एवं सर्वांगीण विकास का पथ भी तैयार होता है। बैठक की शुरुआत छात्रा कान्ता सोनी एवं समूह द्वारा स्वागत गीत से की गई। स्वागत वक्तव्य डॉ. प्रगति भटनागर द्वारा दिया गया। इस दौरान बीएससी चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा खुशी जोधा ने पीपीटी के माध्यम से उपस्थित अभिभावक समूह को विश्वविद्यालय की खूबियों एवं महाविद्यालय की गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया। विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकायों की गुणवत्ता को डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, अभिषेक शर्मा एवं अभिषेक चारण द्वारा शब्दगत किया गया। तत्पश्चात, महाविद्यालय के सभी शिक्षकों ने प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. बलबीर सिंह, तनिष्का शर्मा, प्रगति चौरड़िया आदि ने अपना परिचय प्रस्तुत किया। अभिभावकों की ओर से श्रीमती रीना शर्मा, मनीषसिंह राजपुरोहित, मेहनाज बानो एवं श्रीमती नीतू शेखावत द्वारा महाविद्यालय की शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक गतिविधियों, संस्थान के नैतिक जीवन मूल्यों, शांत वातावरण एवं छात्राओं की सुरक्षा की दृष्टि से किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए संस्थान के उत्तरोत्तर विकास हेतु शुभकामनाएं दी। अंत में शिक्षक-अभिभावक बैठक के समन्वयक अभिषेक चारण द्वारा आभार ज्ञापित किया गया।

महिला जीवन में आत्मरक्षा प्रशिक्षण की महती आवश्यकता- डीएसपी ढाका

महिला सिपाहियों ने सिखाए छात्राओं को हर परिस्थिति में आत्मरक्षा के विशेष गुर

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 3 मार्च को नागौर से आई महिला पुलिसकर्मियों की एक विशेष टीम ने छात्राओं को सेल्फ डिफेंस ट्रेनिंग प्रदान की। इस विशेष पुलिस टीम में महिला पुलिसकर्मी संगीता, बिंदु एवं बबीता ने छात्राओं को विभिन्न प्रकार से आत्मरक्षा करने के अनेक गुर सिखाए। ट्रेनिंग के दौरान छात्राओं को सदैव काम में लिए जाने वाले एवं सहज उपलब्ध संसाधनों से जीवन रक्षा के कई नायाब तरीके बताए, साथ ही छात्राओं को आत्मविश्वास एवं दबंग आवाज अंगीकार करने हेतु प्रेरित कर इस हुनर को जीवन का एक अभिन्न अंग बना लेने का संदेश भी दिया। महिला सिपाहियों की इस टीम द्वारा छात्राओं को विपरीत समय में साहस के साथ आत्मरक्षा हेतु प्रयोगिक प्रदर्शन करते हुए सिखाने का प्रयास किया गया। छात्राएं भी बेहद सजग रहकर यह सीखने को उत्सुक रही। महिला सिपाही प्रशिक्षकों की यह विशेष टीम लाडनूं पुलिस उप अधीक्षक राजेश ढाका द्वारा भिजवाई गई। पुलिस उप अधीक्षक ढाका ने शिविर का उद्घाटन करते हुए वर्तमान हालातों एवं कमोबेश सामाजिक अधःपतन के चलते महिलाओं के जीवन में आत्मरक्षा की महती आवश्यकता पर प्रकाश डाला। प्रारंभ में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने छात्राओं के लिए जीवन भर काम आने वाले इस आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम को संचालित करने को श्रेष्ठ बताया और उन्होंने आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम को संस्थान के प्रोस्पेक्टस का हिस्सा मानते हुए संस्थान की संकल्पना में महिला सुरक्षा हेतु प्रतिबद्धता जाहिर की। कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्या डॉ. प्रगति भटनागर ने किया तथा अंत में सहायक आचार्या प्रगति चौरड़िया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन और शिक्षा' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर 12-13 जनवरी, 2023 को "स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन और शिक्षा" विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में अपेक्स यूनिवर्सिटी जयपुर के शिक्षा विभाग के डीन प्रो. अशोक सिडाना ने कहा है कि किसी भी मुसीबत से भागना नहीं चाहिए, बल्कि उसका डट कर मुकाबला करना चाहिए। अपने आप को शक्ति से ओतप्रोत एवं चिन्ता रहित रखना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द के विचारों को हमें आत्मसात् करना चाहिए। कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ के मार्गदर्शन में आयोजित इस ऑफलाईन व ऑनलाईन मिश्रित मोड के सेमिनार में अग्रसेन स्नातकोत्तर केशव विद्यापीठ जामडोली जयपुर की प्राचार्या प्रो. रीटा शर्मा ने कहा कि साहसी एवं निडर बनने, विपत्तियों से नहीं घबराने, उनका डटकर मुकाबला करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि हमें जागृत रह कर लक्ष्य पर पूरा ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। इससे पूर्व आयोजना के प्रथम दिवस मुख्य वक्ता आरबीएस कॉलेज आगरा के शिक्षा संकाय के प्रो. विनोद कुमार ने अन्तर्निहित पूर्णता को जानने और अपना विकास करने के लिए आत्मावलोकन की आवश्यकता बताई तथा व्यवहार से चरित्र, चरित्र से जीवन, जीवन से मानव निर्माण के साथ स्व-अनुशासन, स्व-अभिप्रेरणा, आत्मानुभूति, आत्मनियंत्रण, समानता आदि को स्पष्ट करते हुए स्वामी विवेकानंद के जीवन दर्शन पर अपने विचार रखे। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि एक समय पर एक ही कार्य को तन्मय होकर करना चाहिए।

समस्याओं से जूझने पर ही विकास संभव

दो दिवसीय आयोजन में कार्यक्रम के संयोजक एवं शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने स्वामी विवेकानंद के जीवन दर्शन को युवाओं को समस्याओं से लड़ने की सीख देने वाला बताया और निर्भीकता पूर्वक कार्य करने, उच्च आदर्शों से चारित्रिक गठन करने, चुनौतियों से विचलित नहीं होने की सीख देने वाला बताया। उन्होंने कहा कि जो युवा समस्याओं से जूझता है, वही विकास की ओर अग्रसर होता है और जो समस्याओं से डर जाता है, वह अपना विकास नहीं कर पाता है। युवाओं को अपनी अन्तर्निहित क्षमताओं का विकास करते रहना चाहिए। कार्यक्रम में डॉ. विनोद उपाध्याय, मौसम पारीक, जेपी सिंह, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. सरोज राय, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी लाल, डॉ. बलवीर सिंह, प्रमोद ओला, खुशाल जांगिड, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी लाल, डॉ. बलवीर सिंह, प्रगति चौरड़िया आदि के अलावा अनेक संस्थानों के संकाय सदस्य एवं विद्यार्थियों सहित कुल 146 प्रतिभागियों ने सेमिनार में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डा. अमिता जैन ने किया।

अहिंसा व शांति का प्रशिक्षण उन्नत जीवन बनाने के लिए सहायक

एक दिवसीय युवा व अहिंसा प्रशिक्षण शिविर आयोजित

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्त्वावधान में 21 जनवरी को एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में स्थानीय सूरजमल भूतोड़िया राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की 75 बालिकाओं ने भाग लिया।

शिविर के बौद्धिक सत्र में विभागाध्यक्ष डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने अहिंसा एवं शांति सम्बंधी जीवन मूल्यों की महता व उपयोगिता पर प्रकाश डाला तथा उनके द्वारा मानवीय मूल्यों के साथ उन्नत जीवन बनाने और जीवन में लाए जाने वाले बदलावों को रेखांकित किया। सर्वत्र व्याप्त हिंसा एवं युद्ध के माहौल में अहिंसा व शांति के मार्ग को उन्होंने समाधान के रूप में प्रस्तुत किया। सहायक आचार्य बलवीर सिंह चारण ने संस्थान के पाठ्यक्रमों व गतिविधियों के बारे में बताया। शिविर के प्रायोगिक सत्र में डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने विद्यार्थियों को आसन, प्राणायाम और यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाया। विद्यालय की शिक्षिका मरूधर कंवर व रश्मि ओझा ने विद्यार्थियों के चहुंमुखी विकास के लिए अहिंसा व शांति के प्रशिक्षण को आवश्यक बताया। विभाग की सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन ने लघु कहानी व वीडियो क्लिप के माध्यम से दया, मैत्री व सहभागिता के विकास की तरफ विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करवाया। शिविर का प्रारम्भ छात्रा टीना एवं समूह के स्वागत गान के साथ किया गया।

बहुत उपयोगी है हिंसा के वातावरण में अहिंसा का प्रशिक्षण- डॉ. राठौड़

अहिंसा व शांति की आवश्यकता पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा संचालित प्रसार कार्यक्रम के तहत 24 मार्च को ग्राम खानपुर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओ को 'वर्तमान समय में अहिंसा एवं शांति की उपयोगिता' पर जानकारी दी गई। विभागाध्यक्ष डॉ. रविन्द्र सिह राठोड़ ने बताया कि वर्तमान सामाजिक समस्याओं के पीछे व्यक्ति का स्वार्थ ही निहित रहता है। अपने उद्देश्य पूरे करने के लिए आज व्यक्ति किसी भी हद तक गिर सकता है और वह किसी भी तरह की हिंसा, चाहे वह शारीरिक हो या फिर संरचनात्मक, वह करने के लिए तैयार रहता है। हिंसा के वातावरण में हत्या, लूट, भ्रष्टाचार, चोरी, धोखाधड़ी बलात्कार आदि करने में व्यक्ति निःसंकोच बन चुका है। इसलिए आज के समय में अहिंसा प्रशिक्षण की अति आवश्यकता है। कार्यक्रम में स्कूल के अध्यापकों ने भी अहिंसा के महत्त्व और महावीर की अहिंसा के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि महान बनने के लिए अहिंसा एवं शांति के गुणों का होना आवश्यक है। इनसे ही मनुष्य सफलता प्राप्त करता है। शिक्षा विभाग के प्राध्यापक डॉ. आभा सिंह ने भी बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए अहिंसा का होना बताया। विभाग की छात्राओं उषा टाक, संगीता जानू, ज्योति रेगर, हारून्निशा ने भी इस कार्यक्रम में अपनी सहभागिता निभाई।

फेयरवेल पार्टी का आयोजन

मनीषा मिस फेयरवेल व प्रियंका मिस ब्यूटी चुनी गई

संस्थान के अहिंसा और शांति विभाग के अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए 12 मई से फेयरवेल पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्रा हरूनिशा, कल्पना, निशा तथा ज्योति ने फाइनल ईयर के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं रखी। उत्तरार्द्ध वर्ष के विद्यार्थियों के लिए पेपर-नृत्य व गुब्बारा बैलेंस प्रतियोगिताएं पूर्वार्द्ध वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा रखी गई। कार्यक्रम में मनीषा तुनगरिया ने कविता के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति दी। छात्रा संगीता जानू एवं उषा टाक ने सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया। इस फेयरवेल पार्टी में मनीषा तुनगरिया 'मिस फेयरवेल' के रूप में चुना गया। प्रियंका मेघवाल को 'मिस ब्यूटी' का ताज दिया गया। मिस्टर फ्रेशर के रूप में लीलाधर स्वामी को 'किंग ऑफ द डे' चुना गया। इसके अलावा 'स्टार ऑफ द डे' का खिताब जयश्री जांगिड़ को दिया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने फाइनल ईयर के विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की एवं विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि उच्च शिक्षा के लिए शिक्षा एवं शोध कार्यों के साथ जुड़े रहें एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें। इस अवसर पर फाइनल ईयर के विद्यार्थियों ने डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन एवं डॉ. बलबीर सिंह आदि अपने शिक्षकों को प्रतीक चिन्ह भेंट कर उनका सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन सिमरन बानो व दीपांशी ने किया।

एक दिवसीय युवा व अहिंसा प्रशिक्षण शिविर आयोजित

विद्यार्थियों ने सीखे योग एवं अहिंसक रहने के प्रभावशाली उपाय

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्त्वावधान में 'अहिंसा एवं शांति की संस्कृति' विषय पर एक दिवसीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 23 जनवरी को किया गया। शिविर में स्थानीय आदर्श विद्या मंदिर के छात्र-छात्राओं ने योगाभ्यास कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया। योग प्रशिक्षक दशरथ सिंह द्वारा उन्हें योग के विभिन्न आसनों के अभ्यास करवाए। तीन सत्रों में विभाजित इस शिविर के उद्घाटन सत्र में एनिमेटेड वीडियो के माध्यम से बच्चों को दूसरों का सहयोग एवं परस्पर सहभागिता के लिए हमेशा प्रयासरत रहने का संदेश दिया गया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने वर्तमान परिदृश्य में अहिंसा एवं शांति की नीति को व्यक्तिगत स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक उपयोगी बताते हुए शिविर के महत्व व आवश्यकताओं के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि वर्तमान में उभर रही है समस्त समस्याओं का समाधान अहिंसक नीतियों से किया जाना सहजता पूर्वक संभव है। छात्रा खुशी जोधा ने संस्थान के विभिन्न पाठ्यक्रम एवं विशिष्ट विशेषताओं का पीपीटी के माध्यम से प्रदर्शन कर विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान की। सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन ने प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य के दौरान शिविर के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। शिविर के दूसरे सत्र में विभाग के विद्यार्थियों सिमरन, हरुनिशा, निशा, कल्पना, दिपांशी, ज्योति, जयश्री जांगिड़, लीलाधर, धीरज आदि ने उत्साहवर्धनक एवं सामाजिकता के विकास सम्बंधी प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम व नुक्कड़-नाटक प्रस्तुत किए। इस अवसर पर विद्यालय की शिक्षिका चित्रा प्रजापत ने संस्थान द्वारा आयोजित अहिंसा प्रशिक्षण शिविर आदि कार्यक्रमों को लाभदायक बताते हुए कहा कि इनसे विद्यार्थियों में नैतिक एवं मानवीय गुणों का विकास होता है। कार्यक्रम का संयोजन सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने किया।

विद्यार्थियों ने किया शांतिपीठ का शैक्षणिक भ्रमण

संस्थान के अहिंसा और शांति विभाग के विद्यार्थियों द्वारा सरदारशहर में 11 मार्च को आचार्यश्री महाप्रज्ञ की शांतिपीठ के दर्शन किए। इस शैक्षणिक भ्रमण के दौरान छात्राओं ने शांतिपीठ के दर्शन करने के साथ ही उसी परिसर में अध्यात्म और तकनीकी के अनुपम समन्वय की थीम पर आधारित आचार्य महाप्रज्ञ म्यूजियम में आचार्यश्री के जीवनदर्शन को अनेक माध्यमों से जीवंत रूप प्रदान करने वाली डॉक्यूमेंट्री फिल्म एवं झांकियों का अवलोकन भी किया, जो काफी प्रेरणादायी रही।

विद्यार्थियों के साथ विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन तथा डॉ. बलबीर सिंह भी इस समूह में सम्मिलित रहे।

फार्म 4
(नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
2.	प्रकाशन अवधि	:	अर्द्धवार्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	प्रो. बनवारीलाल जैन
	क्या भारत के नागरिक है ?	:	हाँ
	पता	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
4.	प्रकाशक का नाम	:	प्रो. बनवारी लाल जैन
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
5.	सम्पादक का नाम	:	डॉ. दामोदर शास्त्री
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
6.	उन व्यक्तियों के नाम पते जो पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान

मैं प्रो. बनवारी लाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रो. बनवारी लाल जैन
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

‘भारत का गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य’ विषयक मासिक व्याख्यानमाला

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा ‘भारत का गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य’ विषय पर एक मासिक व्याख्यामाला का संचालन किया जाता है। इस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रत्येक महिने एक उप विषय पर देश के ख्यातनाम विद्वान का व्याख्यान होता है। प्राकृत भाषा के उत्थान की दिशा में ये व्याख्यान मील का स्तम्भ साबित हो रहे हैं। इस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत आयोजित मासिक व्याख्यान इस प्रकार रहे-

प्राकृत कथा साहित्य का महत्त्व- डॉ. सुमत कुमार जैन

‘प्राकृत कथा साहित्य का महत्त्व’ विषयक व्याख्यान में 31 जनवरी, 2023 को मुख्य वक्ता मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के जैनविद्या और प्राकृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सुमत कुमार जैन ने प्राकृत कथा साहित्य के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए अनेक महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी। उन्होंने आगमों में निहित ज्ञान को समझने के लिए कथाओं को आधार बनाया गया है, क्योंकि कथाओं में हमारे जन-जीवन को बड़ी सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया गया है। प्राकृत कथा साहित्य के माध्यम से हम आगमों में वर्णित दार्शनिक सिद्धान्तों को भी आसानी से समझ सकते हैं। ऐसा यह प्राकृत कथा साहित्य विशाल मात्रा में लिखा गया है। प्रो. दामोदर शास्त्री ने अध्यक्षता करते हुए कथा साहित्य के अध्ययन के लिए प्राकृत भाषा एवं व्याकरण को गम्भीरता से पढ़ने पर विशेष जोर दिया और बताया कि प्राकृत कथा साहित्य में अनेक ऐसे सिद्धान्तों का निरूपण प्राप्त होता है, जो आगमों में निरूपित तो है लेकिन वहां अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण से हुआ तथा स्वागत भाषण डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने दिया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया और कार्यक्रम के अन्त में डॉ. सब्यसाची सारंगी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 40 प्रतिभागियों ने ऑनलाईन सहभागिता की।

गूढ विषयों को समझना आसान हो जाता है कथा साहित्य से- प्रो. ऋषभचन्द जैन

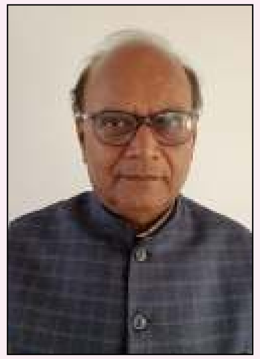

एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म. प्र.) के प्रो. ऋषभचन्द जैन ‘फौजदार’ ने 25 फरवरी 2023 को आयोजित व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि कथा का इतिहास मानव इतिहास के समकक्ष ही है। उन्होंने कथाओं के अनेक प्रकारों का उल्लेख करते हुए प्राकृत के कथाकार कोउहल द्वारा विरचित श्रेष्ठ कथा-ग्रंथ ‘लीलावई कहा’ का परिचय अनेक दृष्टियों से प्रस्तुत किया। प्रो. जैन ने ‘लीलावई कहा’ के काव्य-तत्त्वों पर विचार प्रस्तुत करते हुए, उसे महाकाव्य की उपमा दी। उन्होंने बताया कि इस कथा-ग्रन्थ में वर्णित वन, उपवन, ऋतुओं के वर्णन आदि के माध्यम से भारतीय संस्कृति और भौगोलिक स्थिति का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है तथा वर्तमान में हमारी जानकारी को वृद्धिगत करने में यह महत्वपूर्ण है। प्रो. जैन ने इस कथा-ग्रन्थ को अनेक दृष्टियों से उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण बताया और कहा कि यह अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा कि कथाएं शिक्षा प्राप्ति का उत्कृष्ट माध्यम हैं। इन कथाओं के माध्यम से गूढ़ से गूढ़ विषय को भी आसानी से समझा जा सकता है। कार्यक्रम में जुड़े अनेक प्रतिभागियों ने अपने विचार एवं जिज्ञासाएं रखी, जिनका समाधान प्रो. ऋषभचन्द जैन ने किया। कार्यक्रम में डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने स्वागत भाषण एवं विषय-प्रवर्तन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। अन्त में सव्यसाची षड़ंगी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 25 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

जैनागमों में निहित है पर्यावरण-संरक्षण के सूत्र- डॉ. रायगौण्डा तातोबा पाटिल

मासिक व्याख्यानमाला के 21वें व्याख्यान में ‘प्राकृत साहित्य में पर्यावरण’ विषय पर 29 मार्च 2023 को हुए व्याख्यान में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के सह-आचार्य रायगौण्डा तातोबा पाटिल ने कहा है कि प्राकृत साहित्य के आधारभूत जैनागमों में पर्यावरण संरक्षण के अनेक सूत्र निहित हैं। आचारांगसूत्र में वर्णित षड्जीवनिकाय का वर्णन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। आगमों में अनेक स्थानों पर वायुप्रदूषण, ध्वनिप्रदूषण, जलप्रदूषण आदि को रोकने का विधान बताया गया है। उन्होंने प्राकृत भाषा में लिखित अभिलेखों का भी उल्लेख करते हुए बताया कि अशोक ने पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्ष लगवाये तथा सभी को वृक्ष लगाने के निर्देश दिये। पशुओं को खाने पर पाबन्दी लगाई। इस प्रकार उन्होंने आगमों, अभिलेखों तथा स्वतन्त्र प्राकृत साहित्य से अनेक उद्धरणों के माध्यम से पर्यावरणीय चिंतन को प्रस्तुत किया। डॉ. पाटिल ने पर्यावरण प्रदूषण का कारण अनियन्त्रित मन को बताते हुए कहा कि मन पर नियन्त्रण करके पर्यावरण को बचाया जा सकता है और मन पर नियन्त्रण के अनेक उपाय जैन आगमों एवं प्राकृत साहित्य में वर्णित है। अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि आगमों में वर्णित सूत्र पर्यावरणीय चिन्तन का अतिसूक्ष्म वर्णन किया गया है। मनुष्य सभी जीवों के प्रति मैत्री-भाव रखे। सभी जीवों को आत्मवत् समझे आदि अनेक सूत्रों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का उल्लेख मिलता है। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राकृत की अध्येता बहनों के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं विषयप्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया, संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सारंगी ने किया। व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 25 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

ज्योतिषीय सिद्धांत पुरुषार्थ और जीने की कला सिखाते हैं- प्रो. महावीर प्रकाश चन्द्र शास्त्री

मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 29 अप्रेल को ‘प्राकृत साहित्य में वर्णित सामुद्रिक शास्त्रीय सिद्धांत’ विषय पर प्रो. महावीर प्रकाशचन्द्र शास्त्री ने कहा कि प्राकृत साहित्य विविध विषयों का खजाना है और साथ ही यह साहित्य सामुद्रिक सिद्धांतों की अमूल्य निधि भी है। प्राकृत साहित्य में तीर्थंकरों के शारीरिक लक्षण, वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत मंदिरों का निर्माण, भवनों के निर्माण की कला आदि की जानकारी, रत्नों को राशि के अनुसार धारण करना तथा उनके प्रभाव को स्पष्ट करना आदि अनेक विषयों को सामुद्रिक शास्त्र प्रकट

करता है। सामुद्रिक शास्त्र हमें भविष्य के प्रति सजग करता है। प्रो. शास्त्री ने कहा कि ज्योतिष शास्त्र में वर्णित ज्योतिषीय सिद्धांत हमें भाग्यवादी नहीं, अपितु पुरुषार्थ करने की शिक्षा देते हैं। ये सिद्धांत हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं अर्थात् हमारे लिए करणीय और अकरणीय का ज्ञान करवाते हैं। सामुद्रिक शास्त्र सिद्धांत ज्योतिष का ही विषय है। इसके अन्तर्गत ज्योतिष, रत्नशास्त्र, वास्तुशास्त्र आदि को परिगणित किया जाता है। व्याख्यान की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि सामुद्रिक शास्त्र विशाल और महत्त्वपूर्ण हैं। आगमों में भी अनेक स्थानों पर सामुद्रिक शास्त्रीय सिद्धांत प्राप्त होते हैं। उन्होंने बताया कि सामुद्रिक शास्त्र शब्द की व्युत्पति ‘स’ और ‘मुद्र’ से मिलकर हुई है अर्थात मुद्रा (चिह्न) से युक्त, और जो शास्त्र इन लक्षणों को व्याख्यायित करता है, वह सामुद्रिक शास्त्र कहलाता है। सामुद्रिक शास्त्र जीवन को सही मार्ग पर ले जाने के लिए आवश्यक है। कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण से किया गया। स्वागत वक्तव्य डा. समणी संगीतप्रज्ञा ने प्रस्तुत किया। संचालन डा. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। अंत में डा. सब्यसाची सारंगी ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों के 40 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राकृत भाषा और उसके विभिन्न रूप- प्रो. कमलकुमार जैन

‘प्राकृत भाषा और उसके विभिन्न रूप’ विषयक व्याख्यान का आयोजन 20 मई, 2023 को किया गया। मुख्य वक्ता जैन अध्ययन केन्द्र, सावित्रीबाई फूले विद्यापीठ, पूना के प्रो. कमलकुमार जैन ने प्राकृत भाषा के विभिन्न रूपों की चर्चा करते हुए प्राकृत भाषा की प्राचीनता एवं उसके जनसामान्य की भाषा होने के बारे में बताया तथा प्राकृत भाषा के विभिन्न रूपों में मागधी, शोरसेनी, अर्द्धमागधी, पैशाची आदि भाषाओं के उपयोग एवं महत्त्व के विषय में बताया। अध्यक्षता करते हुए प्रो. दामोदर शास्त्री ने प्राकृत भाषा को आगमों की भाषा स्वीकार करते हुए उसके आगमिक और लौकिक रूपों की विस्तृत चर्चा की तथा प्राकृत के अध्ययन के लिए संस्कृत को भी जानने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण से हुआ तथा स्वागत भाषण डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने दिया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया और कार्यक्रम के अन्त में डॉ. सब्यसाची सारंगी द्वारा सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया। ऑनलाइन कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 45 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राकृत भाषा और साहित्य की रूपरेखा- सुकुमार शिवाजीराव जगताप

’प्राकृत भाषा और साहित्य की रूपरेखा’ विषयक व्याख्यान 24 जून 2023 को आयोजन किया गया। व्याख्यानकर्ता महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, अहमदाबाद के सुकुमार शिवाजीराव जगताप थे। उन्होंने प्राकृत भाषा और साहित्य की रूपरेखा के अन्तर्गत प्राकृत भाषा के विभिन्न रूपों और साहित्य के विभिन्न विधाओं की चर्चा की। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. दामोदर शास्त्री ने प्राकृत भाषा और साहित्य के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि प्राकृत भाषा सरल, सुबोध एवं सर्वग्राही है तथा साहित्य सरस एवं जनसामान्य के अनुकूल है। कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण से हुआ तथा स्वागत भाषण डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने दिया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया और कार्यक्रम के अन्त में डॉ. सब्यसाची सारंगी द्वारा सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया। ऑनलाइन कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

‘प्रजातांत्रिक गणतंत्र, भारतवर्ष का नामकरण एवं राजनैतिक आदर्श’ पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

प्रेम शांति साहित्य संस्कृति संस्थान लखनऊ के आदिनाथ मेमोरियल ट्रस्ट के तत्वावधान में26 जनवरी को ‘प्रजातांत्रिक गणतंत्र, भारतवर्ष का नामकरण एवं राजनैतिक आदर्श’ विषय पर एक राष्ट्रीय स्तर का वेबिनार जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग की व्याख्याता डा. समणी संगीतप्रज्ञा के सान्निध्य में आयोजित किया गया। वेबिनार में उन्होंने देश चक्रवर्ती सम्राट भरत के जीवन और आदर्शों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि भरत ने स्वयं अपनी प्रजा का योगक्षेम किया और सभी तत्कालीन राजाओं को संदेश दिया कि न्यायप्रिय प्रजापालक राजा का कर्तव्य है कि गाय के प्रति ग्वाले की भावना के अनुरूप राजा का भाव भी अपनी प्रजा के प्रति सेवा का ही होना चाहिए। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रो. भागचन्द्र भास्कर की अध्यक्षता में आयोजित इस वेबिनार में प्रयागराज के प्रो. डा. रमेश सिंह, वरिष्ठ इतिहासकार डा. पवन गौड़ व लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के शोधार्थी प्रशांत जैन ने वक्ता के रूप में सम्बोधित किया और भारतवर्ष के संस्थापक चक्रवर्ती भरत के जीवन, आदर्श और तत्कालीन शासन व्यवस्था के बारे में शोधपरक रोशनी डाली। वेबिनार की संयोजक डा. प्रभाकिरण जैन दिल्ली एवं शैलेन्द्र जैन लखनऊ थे।

उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित मौलिक मूल्यों से संभव है राष्ट्र का पुनर्निर्माण- समणी डा. संगीतप्रज्ञा

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग एवं भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 22 फरवरी को ‘भारतीय संस्कृति में निहित मौलिक मूल्य तथा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में उनकी प्रासंगिकता (जैन साहित्य के विशेष संदर्भ में)’ विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में जैन विश्वभारती संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग की समणी डा. संगीतप्रज्ञा ने सारस्वत वक्ता के रूप में ‘उत्तराध्ययन-सूत्र में वर्णित मौलिक मूल्य एवं राष्ट्र के पुनर्निर्माण में उनकी प्रासंगिकता’ विषय पर अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। डा. संगीतप्रज्ञा ने उत्तराध्ययनसूत्र में आए हुए मूल्यों के बारे में बताते मुख्य रूप से शिक्षाशील व्यक्ति के आठ स्थानों एवं सुविनीत के पन्द्रह स्थानों की चर्चा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा, यदि युवा पीढी आज भी इन स्थानों का पालन अपने जीवन में करें तो निश्चित ही हमारे देश का वर्तमान और भविष्य बहुत अच्छा हो सकता है।

पांडुलिपि लेखन से इतिहास का संरक्षण होता है- समणी डा. संगीतप्रज्ञा
राष्ट्रीय सेमिनार में तेरापंथ धर्मसंघ की पांडुलिपियों पर व्याख्यान

राजस्थान सरकार के कला एवं संस्कृति विभाग के अन्तर्गत राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान द्वारा 'मुनि जिनविजय और पांडुलिपि सम्पदा का वर्तमान प्रसंगिकता' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय की ओर से समणी डा. संगीतप्रज्ञा ने 'तेरापंथ में पांडुलिपि लेखन का उद्भव और विकास' विषय पर अपना व्याख्यान 19 मार्च को प्रस्तुत किया। डा. संगीतप्रज्ञा ने महाश्रमण द्वारा रचित पाण्डुलिपि एवं इस विधा में प्रमुखता से दिए जा रहे योगदान के विभिन्न पक्षों को उजागर किया। उन्होंने कहा कि पांडुलिपि लेखन से इतिहास चिरस्थाई बनता है। साथ ही यह कला के विकास में भी सहायक है। उन्होंने प्रजेंटेशन के माध्यम से तेरापंथ में आचार्य भिक्षु से लेकर वर्तमान तक लिखी गई पांडुलिपियों के बारे में बताया तथा कहा कि तकनीकी के आधुनिक युग में भी तेरापंथ धर्मसंघ में शासन गौरव साध्वीश्री कल्पलता वर्तमान में पांडुलिपि लेखन में तत्पर हैं। बीकानेर के होटल भंवरनिवास में आयोजित इस राष्ट्रीय सेमिनार में देश भर के अनेक विद्वानों ने अपने विद्वत्तापूर्ण विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कला एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला ने बताया कि पाण्डुलिपि की विषय-वस्तु सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय सेमिनार की विशिष्ट अतिथि जिला उपभोक्ता प्रतितोष आयोग की अध्यक्ष चंद्रकला जैन ने अपने वक्तव्य में पांडुलिपियों की बहुल्यता एवं सहजने की परंपरा के आधार पर राजस्थान को एक विशिष्ट राज्य बताया। उन्होंने बताया कि मुनि जिनविजय के प्रयासों से राजस्थान में प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में एकत्र की गई पांडुलिपियों की संख्या 1,29,000 तक पहुंच पाई।

वसंत ऋतु में ज्ञान-विज्ञान सीखने के साथ आहार-संयम का अनुपालन जरूरी

बसन्त पंचमी महोत्सव का आयोजन

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा बसन्त पंचमी का पर्व 25 जनवरी 2023 को धूमधाम से मनाया गया। माता सरस्वती की पूजा-अर्चना के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। समणी मृदुप्रज्ञा के मंगलाचरण के बाद कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने कहा कि भारत में छः ऋतुए होती हैं, जबकि अन्य देशों में दो या तीन ऋतुएं ही पाई जाती है। उन्होंने बसन्त ऋतु के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए इसके वैज्ञानिक और आयुर्वेदिक पक्ष को भी उजागर किया तथा कहा कि इस ऋतु में हमें ज्ञान-विज्ञान को सीखने के साथ-साथ आहार-संयम का अनुपालन भी करना चाहिए। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रो. रेखा तिवारी ने माता सरस्वती को ज्ञान की देवी बताते हुए उनकी आराधना करने पर बल दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. दामोदर शास्त्री ने ज्ञान के महत्त्व को छोटी-छोटी बातों के माध्यम से प्रतिपादित किया। उन्होंने बताया कि ज्ञान का सार ही आचार या व्यवहार है। डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने प्रारम्भ में अतिथियों का स्वागत तथा विषय प्रवर्तन किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया तथा अन्त में सब्यसाची सारंगी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

विश्व निद्रा दिवस पर अच्छी नींद के लिए
प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों को अपनाने पर जोर

संस्थान के शिक्षा विभाग में विश्व निद्रा दिवस का आयोजन 17 मार्च को किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने बताया कि वर्ल्ड स्लीप सोसायटी द्वारा 2008 से प्रतिवर्ष विश्व निद्रा दिवस मनाया जाना शुरू किया गया। इसके लिए इस वर्ष की थीम 'स्वास्थ्य के लिए नींद आवश्यक है' निर्धारित करके मनाया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि अनिद्रा की बीमारी का दुष्प्रभाव व्यक्ति की कार्यशैली, शरीर एवं मन पर पड़ रहा है। अनिद्रा से कैंसर, बीपी, मधुमेह, हृदयरोग आदि के रूप में उभर कर सामने आ रही है। भारतीय संस्कृति के प्राचीन मूल्यों से जीवन जीने और प्रातः जल्दी उठने, रात्रि में 10 बजे से पहले सो जाने, समय पर भोजन ग्रहण करने, सात्त्विक भोजन करने, मद्यपान व धूम्रपान से बचने का पूरा प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा रखे गए विविध प्रश्नों पर उनकी जिज्ञासा शांत की गई।

आचार्य श्रुतसंवर्द्धिनी व्याख्यानमाला में 'आधुनिक युग में सम्यक् दर्शन का महत्व' पर व्याख्यान

अहंकार और अज्ञान दूर करने पर ही सम्यक् दर्शन व पोजिटीव एटीट्यूट संभव- प्रो शाह

संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शनविभाग के अन्तर्गत महादेवलाल सरावगी अनेकान्त शोधपीठ के तत्त्वावधान में आचार्य तुलसी श्रुतसंवर्द्धिनी व्याख्यानमाला में एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया। एलडी इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलोजी अहमदाबाद के पूर्व निदेशक एवं श्रुत रत्नाकर के संस्थापक व पायोनियर ट्रस्टी प्रो. जितेन्द्र बी. शाह ने इस वार्षिक व्याख्यानमाला में 'आधुनिक युग में सम्यक् दर्शन का महत्त्व' विषय पर 14 मार्च को अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम में आयोजित इस व्याख्यान में मुख्य वक्ता प्रो. शाह ने कहा कि सम्यक् दर्शन बहुत ही महत्त्वपूर्ण विषय है। 2300 साल पहले आचार्य आर्यभद्रबाहु ने 'उवसग्गहर स्तोत्र' की रचना की थी, जो बहुत प्रसिद्ध है। उसमें चिंतामणि रत्न और कल्पवृक्ष प्राप्त कर लेने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण सम्यग्दर्शन को बताया गया है। हमारे देखने की सही दृष्टि महत्त्व रखती है। एटीट्यट पोजेटिव होने पर सफलता और नेगेटिव होने पर विफलता का सामना करना पड़ता है। केवल चर्मचक्षु से देखने को गलत और अन्तर्चक्षु को जरूरी बताते हुए प्रो. शाह ने बताया कि हर वस्तु की महिमा अन्तर्चक्षु से देखने से ही दिखाई देती है। सम्यक् का अर्थ है सच्चा। हमारे देखने का भाव इसमें निहित होता है। हमारा देखना इतना स्पष्ट नहीं है, क्योंकि हम विचारों से गुजरा हुआ देखते हैं, वह विशुद्ध नहीं होता। उन्होंने सम्यक् दर्शन को आवश्यक बताते हुए कहा कि व्यक्ति का अहंकार और अज्ञान ही उसे सम्यक् दर्शन से दूर करता है, तब तक हम मिथ्यात्व में पड़े रहते हैं। प्रो. शाह ने कहा कि अहंकार और अज्ञान के दूर होने से ही सम्यक दर्शन मिल पाता है। उन्होंने इसके लिए उचित काम करने से जीवन से सिद्धि मिलना, अशुद्ध कर्म को नहीं करने का भाव जागृत करना, बुरे को बुरा और अच्छे को अच्छा समझना, जिसे संसार गलत समझे उस बात को आदर का स्थान नहीं देना को मान लिया जाए तो जीवन की दिशा बदल जाती है। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति के विशेषाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने कहा कि सम्यक् दर्शन प्राप्त होने पर भ्रम दूर हो जाते हैं और हम रचनात्मक बन जाते हैं। प्रारम्भ में जैन विद्या तथा तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने स्वागत वक्तव्य के साथ विषय पर प्रस्तावना प्रस्तुत की और आचार्य तुलसी के जीवन पर प्रकाश डाला। दूरस्थ शिक्षा के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने मुख्य वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम समणी प्रणव प्रज्ञा के मंगलाचरण से प्रारम्भ किया गया। अंत में समणी नियोजिका डॉ. समणी अमलप्रज्ञा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सभी शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक कार्मिकों के साथ विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

स्व. पूनमचन्द भूतोड़िया स्मृति व्याख्यानमाला आयोजित
अखंडता भारत का मूल वैभव व विरासत है- प्रो. भारद्वाज

संस्थान की महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ के आचार्य महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में आयोजित स्व. पूनमचन्द भूतोडिया स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 3 जनवरी को 'अखण्ड भारतः संस्कृति, सम्प्रभुता एवं सामर्थ्य' विषय पर व्याख्यान देते हुए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के दक्षिण एशियाई अध्ययन केन्द्र के पूर्व अध्यक्ष प्रो. संजय के. भारद्वाज ने कहा कि भारत विश्व की प्राचीनतम एकमात्र सभ्यता, जो अपनी आध्यात्मिक सांस्कृतिक विरासत के साथ आधुनिक युग में भी प्रज्ज्वलित है। सृष्टि के आरंभ से इस पृथ्वी ने अनेक सभ्यताओं को जन्मते, बनते और विच्छिन्न होते देखा है। भारत की अखंडता और इसके सांस्कृतिक स्वरूप को आज के वातावरण में ठीक से नए विज्ञान के आलोक में देखने और समझने की जरूरत है। जब कोई भारतीय संस्कृति की बात करता है तो यह देखना होगा कि यह कोई भौगोलिक इकाई है या सीमा बंधन से मुक्त कोई वस्तुस्थिति। उन्होंने अखंडता को भारत का मूल सांस्कृतिक वैभव और विरासत बताया। भारतीय भूखंड के रूप में टूटने और बिखरने की पीड़ा अवश्य है, लेकिन विखंडन के बाद भी संस्कृति का मूल जीवित रहना वास्तविकता है।

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि भारत की अखण्डता, सम्प्रभुता एव सामर्थ्य का आधार हमारा सांस्कृतिक वैभव है। उन्होंने जैन दर्शन के आधार पर भारत की प्राचीन संस्कृति का उल्लेख करते हुए कहा कि प्राचीन और अर्वाचीन की यही शक्ति यह प्रमाणित कर रही है कि विश्व के लिए भारत अनिवार्य है। मानवता और मानवीय मूल्यों के विकास के लिए विश्व की निर्भरता का केंद्र भारत ही होने जा रहा है, जैसा यह पहले था। इस अवसर पर मुख्य वक्ता प्रो. संजय भारद्वाज का कुलपति प्रो. दूगड. ने शॉल, मोमेन्टो व साहित्य भेंटकर अभिनंदन किया। प्रारम्भ में जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुमुक्षु बहनों के मंगल संगान से हुआ। अंत में प्रो. नलिन के. शास्त्री ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर पुलिस उप-अधिक्षक राजेश ढाका, केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिहार के डॉ. जुगलकिशोर दाधीच, प्रो. रेखा तिवाडी, डॉ. प्रद्युम्नसिंह सहित आदि उपस्थित थे।

रक्तदान शिविर के आयोजन में 47 यूनिट रक्त का संग्रहण छात्राओं ने रक्तदान के लिए बढ़-चढ़ कर लिया हिस्सा

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में 16 मार्च को आयोजित रक्तदान शिविर में कुल 47 यूनिट रक्तदान किया गया। शिविर का शुभारम्भ करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को रक्तदान करना चाहिए, जिससे उसके दिल की सेहत में सुधार, दिल की बीमारियों और स्ट्रोक के खतरे को कम किया जा सकता है। इससे जीवन खतरे में पड़े लोगों की मदद होने के साथ ही रक्तदान करने वाले व्यक्ति के लिए भी यह स्वास्थ्यदायी रहता है।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आयोजित इस रक्तदान शिविर में इस अवसर पर विशेषाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री, कुलसचिव प्रो. बीएल जैन, प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, उप कुलसचिव विनीत सुराणा आदि मौजूद रहे। शिविर में एनएसएस की सभी स्वयंसेवी छात्राओं के अलावा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं शिक्षा विभाग की बीएड व एमएड की छात्राध्यापिकाओं एवं सभी स्नातकोत्तर विभागों के विद्यार्थियों के साथ विश्वविद्यालय के स्टाफ ने भी भाग लेकर रक्तदान किया। शिविर में रक्त संग्रहण के लिए स्थानीय राजकीय चिकित्सालय की ब्लड बैंक टीम ने अपनी सेवाएं दी, जिनमें एसएमओ डा. पीएस आरोड़ा, नर्सिंग ऑफिसर जयसिंह शेखावत, सुमन मेघवाल व अन्य चिकित्साकर्मियों में नरेन्द्र सिंह, ओमसिंह, धर्मेन्द्र काला, रामचन्द्र बांगड़ा, जितेन्द्र व किशनलाल शामिल थे। शिविर में एनएसएस प्रभारी डा. आभासिंह एवं डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ के नेतृत्व में एनएसएस व एनसीसी की छात्राओं ने स्वयंसेवी के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की।

एक दिवसीय शिविर में श्रमदान कर किया सफाई कार्य

संस्थान के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम व द्वितीय के संयुक्त तत्त्वावधान में युवा दिवस पर 12 मार्च को एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में छात्राओं ने श्रमदान करते हुए द्वारा क्षेत्र के जाटों का उतरादा बास एवं तुलसी महिला छात्रावास के आस-पास सफाई का कार्य किया। द्वितीय सत्र में शिक्षा विभाग के साथ संयुक्त तत्त्वावधान में सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता डॉ. विनोद कुमार ने विवेकानन्द के जीवन आदर्श पर प्रकाश डाला। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने युवाओं को परिस्थितियों से न घबराकर उसका सामना करने की सलाह दी। इस एक दिवसीय शिविर का संयोजन डॉ. रविन्द्र. सिंह राठौड एवं डॉ. आभा सिंह द्वारा किया गया। युवा दिवस पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में भी कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने अध्यक्षता करते हुए स्वामी विवेकानंद के विचारों को ओजस्वी एवं प्रेरणा स्रोत बताया। कार्यक्रम में छात्रा खुशी जोधा, प्रियंका, तनीषा भोजक आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. बलबीर सिंह ने किया तथा आभार ज्ञापन प्रेयस सोनी ने किया।

2047 के भारत पर युवा संवाद में 'भारत के पंचप्राण' पर परिचर्चा आयोजित

सीमा प्रथम, प्रियंका द्वितीय और पायल मीणा तृतीय रही

विश्वभारती संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा भारत सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय, द्वारा निर्देशित 'भारत के पंचप्राणः एक युवा परिचर्चा' विषय पर आधारित 'युवा संवाद-इंडिया एट 2047' का आयोजन 8 अप्रेल को किया गया। तीन सत्रों में आयोजित इस परिचर्चा के मुख्य वक्ता एवं विशेषज्ञ के रूप में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि पंचप्राण ही वे शक्तियां हैं, जो हमें विकसित भारत की ओर ले जाएगी। उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं का उदाहरण देते हुए हमारी धरोहरों को नष्ट करके हमारी संस्कृति को मिटाने का भरसक प्रयास आक्रान्ताओं द्वारा पूर्व में किया गया था। नालन्दा विश्वविद्यालय को जला कर हमारी बौद्धिक सम्पदा को नष्ट करने का प्रयास किया गया। मुख्य अतिथि प्रो. रेखा तिवारी ने देश के विकास में युवाओं के योगदान को महत्त्वपूर्ण बताया। परिचर्चा के उद्घाटन सत्र में डॉ. आभा सिह द्वारा कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि पंचप्राण के मार्ग पर चल कर एक विकसित भारत की संकल्पना को मूर्त रूप दिया जा सकता है।

परिचर्चा में सीमा प्रथम रही

परिचर्चा के तृतीय सत्र में छात्राओं ने पंचप्राण पर अपने विचार व्यक्त किए। इस परिचर्चा में प्रथम स्थान पर सीमा रही, द्वितीय स्थान पर प्रियंका और तृतीय स्थान पर पायल मीणा रहीं। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ समन्वयक-राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई प्रथम ने कहा, हमारी विरासत अमिट है और विश्व के सबसे ज्यादा युवा भी भारत में ही हैं और आज सारा विश्व मानने लगा कि भारत विश्वगुरु है। संकल्प शक्ति, कर्तव्य और गरिमा के साथ हमें आगे बढ़ना है। कार्यक्रम का संचालन एनएसएस इकाई द्वितीय की समन्वयक डॉ. आभा सिंह ने किया। कार्यक्रम में डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. लिपि जैन, डॉ. बलबीर सिंह, अभिषेक चारण, अभिषेक शर्मा एवं प्रमोद ओला आदि एवं सभी विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

सात दिवसीय विशेष शिविर में स्वयंसेविकाओं ने सर्वे, रैली, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी

संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों यूनिट्स का विशेष सात दिवसीय शिविर (22-28 मार्च 2023) आयोजित किया गया। शिविर के उद्घाटन समारोह में एनएसएस प्रभारी डा. आभा सिंह ने बताया कि सरकार ने एनएसएस की समाज सेविकाओं को एक सर्वे फार्म भरवाने का जिम्मा सौंपा गया, जिसमें 15 से 29 वर्ष की आयु के ऐसे युवा वर्ग को, जो न उच्च शिक्षा में है और न ही रोजगार में संलग्न है, से इन फार्मों को भरवाया गया। डा. आभासिंह ने स्वयंसेविकाओं को ऐसे युवाओं की जानकारी के लिए दिए गए सर्वे में फॉर्म को भरने का कार्य समझाया। एनएसएस प्रभारी डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने एनएसएस शिविर के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डा. बलवीर सिंह व सभी एनएसएस स्वयंसेविकाएं उपस्थित रही।

खानपुर में घर-घर जाकर सर्वे

सात दिवसीय शिविर के दौरान 23-24 मार्च को स्वयंसेविकाओं ने गांव खानपुर का सर्वेक्षण किया। इन स्वयसेवी छात्राओं को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी और कुलसचिव प्रो. बीएल. जैन ने हरी झण्डी दिखा कर खानपुर के लिए रवाना किया। स्वयंसेविकाओं ने वहां टीम बना कर सर्वे का कार्य शुरु किया। सर्वे में गांव के सरकार द्वारा मांगी गयी जानकारी प्रत्येक घर से लेकर भरी गयी। राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई प्रथम की प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने सर्वे कार्य के सम्बंध में स्वयंसेविकाओं को उपयोगी निर्देश दिये, जिनसे आसानी से आंकड़े संकलित किए जाने संभव हुए। ईकाई द्वितीय के प्रभारी डॉ. रविन्द्र सिह राठौड़ ने स्वयंसेविकाओं के साथ गांव के घरों का निरीक्षण किया तथा सरकार द्वारा औपचारिक शिक्षा या नियमित रोजगार में नही रहने वाले युवाओं का सर्वेक्षण करवाया। शिविर के अन्त में गांव की जानकारी स्थानीय स्कूल से प्राप्त की, जिसके लिए सहयोग के लिए वहां के प्रधानाचार्य को धन्यवाद दिया।

साइबर सुरक्षा रैली निकाली गई

सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान स्वयंसेविकाओं द्वारा 27 मार्च को साइबर सुरक्षा हेतु रैली निकाली गई। रैली का प्रारम्भ जैन विश्वभारती संस्थान से होकर संस्थान परिसर, स्टाफ क्वार्टर्स, छठी पट्टी, शनि मंदिर के रास्ते पहली पट्टी तक निकाली गई। रैली का संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभारी डॉ. आभा सिंह द्वारा किया गया। रैली में डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. प्रगति भटनागर आदि ने सहभागिता की।

शिविर के समापन पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

सात दिवसीय शिविर का समापन 28 मार्च को सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ किया गया। समापन समारोह में स्वयंसेविकाओं एवं नीलम ने शिविर के अनुभवों को साझा किया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ सामाजिक सहयोग, समर्पण और सेवा का भाव भी होना जरूरी बताया। एनएसएस इकाई प्रथम की समन्वयक डॉ. आभा सिंह ने बताया कि शिविर में पांच दिन की गतिविधियां विश्वविद्यालय परिसर में ही आयोजित की गई, जबकि दो दिन खानपुर ग्राम में विभिन्न कार्यक्रम किए गए, जिनमें पोस्टर प्रतियोगिता, स्वच्छता रैली, अतिथि व्याख्यान एवं खानपुर ग्राम का सर्वे किया गया। इन कार्यक्रमों के अलावा साईबर सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम भी रखा गया। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. बलवीर सिंह, प्रेयस सोनी, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, प्रमोद ओला आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अन्त में इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने अपने विचार रखते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

जी-20 कार्यक्रम

भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार एवं कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में संस्थान के सभी विभागों में भारत में हो रहे जी-20 सम्मेलन के संबंध में आयोजित जनजागृति कार्यक्रमों की श्रृंखला संबंधी विवरण इस प्रकार है-

जी-20 थीम पर छात्राओं ने बनाए रंग-बिरंगे पोस्टर

संस्थान में कार्यक्रम श्रृंखला में 2 फरवरी को पोस्टर बनाए गए। संतोष ठोलियां, खुशी जोधा, रिंका गुर्जर, प्रियंका कंवर, निधि चौरड़िया, विशाखा जांगिड़ आदि छात्राओं ने जी-20 सहयोग संगठन के उद्देश्य, आपसी सहयोग के बिंदुओं एवं सदस्य राष्ट्रों की एकरूपता-एकजुटता थीम को आधार मानकर पोस्टर तैयार किए। छात्राओं द्वारा बनाए गए पोस्टरों का दूरस्थ तथा ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने छात्राओं द्वारा बनाए गए पोस्टरों का अवलोकन किया और इसे रचनात्मक प्रयास बताया। गत दिसंबर माह में राजस्थान के उदयपुर शहर में आयोजित जी-20 के शिखर सम्मेलन के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा यह अभियान के अंतर्गत इन कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इस संगठन के उद्देश्य एवं गतिविधियों की जानकारी को समाज तक पहुंचाना इन कार्यक्रमों का मुख्य प्रयोजन है। छात्राओं ने पोस्टर बनाने का कार्य कार्यक्रम के संयोजक डॉ. बलबीर सिंह तथा सह संयोजक अभिषेक शर्मा के निर्देशन में संपन्न किया।

'जी-20 सम्मेलन' सम्बंधित कार्यक्रम श्रृंखला
'सामाजिक चुनौतियां एवं समाधान' विषय पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 'वर्तमान सामाजिक चुनौतियां एवं समाधान' विषय पर 13 अप्रेल को एक प्रश्नोतरी कार्यक्रम का आयोजन अंबेडकर जयंती पर किया गया। भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बाबा साहब अम्बेडकर के आदर्शों को जीवन में अपनाने की जरूरत बताई। कार्यक्रम में छात्राओं ने अनेक सामाजिक चुनौतियों तथा उनके समाधान सम्बंधी सुझाव प्रस्तुत किए। ऐश्वर्या सोनी, खुशी पारीक, ज्योत्स्ना कंवर, अभिलाषा स्वामी ने भी अपने विचार रखते हुए चुनौतियों का समाधान केवल सेमिनार या भाषण से नहीं बल्कि जमीनी स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम का संयोजन एवं आभार ज्ञापन डॉ. गिरधारी लाल शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में समस्त शिक्षा संकाय सदस्य तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

खानपुर व आसोटा ग्रामों में दी जी-20 के संगठन व उद्देश्यों की जानकारी

'जी-20 सम्मेलन' से सम्बंधित कार्यक्रमों की श्रृंखला में शिक्षा विभाग की प्रसार गतिविधियों के माध्यम से 24-25 मार्च को दो दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें खानपुर ग्राम के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में तथा अगले दिन आसोटा ग्राम के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा विभाग की छात्राओं ने जी-20 देशों के संगठन, उनकी अध्यक्षता, कार्यक्रमों आदि के बारे में इन विद्यालयों के विद्यार्थियों को विस्तार से जानकारी दी और बताया कि भारत का जी-20 की अध्यक्षता का विषय- 'वसुधैव कुटुम्बकम' या 'एक पृथ्वी-एक कुटुंब-एक भविष्य' है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी शर्मा ने बताया कि संस्थान में प्रति माह 'जी-20 सम्मेलन' से सम्बंधित का आयोजन किया जा रहा है। डॉ. आभा सिंह व डॉ. लिपि जैन ने अंत में आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में दोनों विद्यालयों के प्राचार्य, शिक्षक, विद्यार्थी तथा शिक्षा विभाग की छात्राएं उपस्थित रहे।

मतदान की अनिवार्यता पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 'भारतीय लोकतंत्र मे मतदान अनिवार्य होना चाहिए' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 15 फरवरी को किया गया, जिसमें सपना, अभिलाषा, मोनिका जोशी, मंजू, मेघा, दीपिका स्वामी और ममता गोरा ने हिन्दी भाषा में भाग लिया।

अंग्रेजी भाषा में दिव्या पारीक, भावना चौधरी और स्मृति कुमारी ने भाग लिया। प्रतियोगिता में हिन्दी में अभिलाषा ने पक्ष में और ममता गोरा ने विपक्ष में प्रथम स्थान बनाया। अंग्रेजी में पक्ष में भावना चौधरी व विपक्ष में स्मृति कुमारी विजेता रही।

नेशनल केडेट कोर (एन.सी.सी.)

एनसीसी से आर्मी ज्वायन कर भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं- कर्नल बेदी
कमांडिंग ऑफिसर ने किया एनसीसी गतिविधियों का निरीक्षण

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय कैडेट कोर का निरीक्षण (एनसीसी) का निरीक्षण 29 मार्च को 3 राज गर्ल्स बटालियन यूनिट जोधपुर के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल नवदीप सिंह बेदी ने किया और अनुशासन, कुशलता और अन्य गतिविधियों को प्रशंसनीय पाया। उन्होंने इस अवसर पर एनसीसी कैडेट्स की सभी आवश्यक गतिविधियों का संचालन देखा। कर्नल बेदी ने कैडेट्स को आर्मी में जाने के बारे में छात्राओं को पूर्ण जानकारी देते हुए भारतीय सेना में ज्वायन करने पर भविष्य की उज्ज्वलता के बारे में बताया। संस्थान में इस मौके पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी एनएसीसी कैडेट्स छात्राओं ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। इस अवसर पर कर्नल नवदीप सिंह बेदी, हवलदार मनप्रीत, सुबेदार मेजर अजित सिंह, जीसीआई दशरथ कंवर का स्वागत-सम्मान किया गया। कार्यक्रम में वंदना, सपना व पूजा इनाणियां ने नृत्य प्रस्तुति दी। अभिलाषा ने कविता पाठ किया। निशा, गरिमा व शुभा ने अपने एनसीसी के अनुभवों को साझा किया। प्रारम्भ में शुभा ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अंत में एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट डा. आयुषी शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन संतोष व तेजस्विनी ने किया।

जी-20 के लक्ष्य व गतिविधियों पर कार्यक्रम आयोजित

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा भारत सरकार के निर्देशानुसार जी-20 थीम को आधार मानकर संस्थान में चल रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में एनसीसी एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वाधान में 26 अप्रेल को प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने जी-20 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बतलाया कि यह संगठन सदस्य राष्ट्रों के मध्य वित्तीय एवं आर्थिक क्षेत्र में सहयोग एवं समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए क्रियाशील है।

वर्तमान में हमारा राष्ट्र इसकी अध्यक्षता कर रहा है। इसी परिपेक्ष्य में राष्ट्रीय स्तर पर करीब 200 कार्यक्रम आयोजित किए जाने का लक्ष्य भारत सरकार ने रखा है। इसके अलावा विश्वविद्यालय एवं विद्यालय स्तर पर भी अनेक कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस वर्ष जी-20 की थीम 'वसुधैव कुटुंबकम्' रखी गई है। भारत में ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन का मुख्य लक्ष्य जी-20 के लक्ष्य एवं गतिविधियों की जानकारी प्रत्येक भारतीय नागरिक के पास पहुंचाना है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बलबीर सिंह ने किया। अंत में एनसीसी प्रभारी डॉ. आयुषी शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

एनसीसी छात्राओं को 'बी' व 'सी' सर्टिफिकेट्स का वितरण

संस्थान में संचालित 3 राज गर्ल्स बटालियन की एनसीसी कैडेट्स को एटीसी केम्प की परीक्षाएं उतीर्ण करने पर 19 मई को 'बी' और 'सी' सर्टिफिकेट वितरित किए गए। ये प्रमाण पत्र यहां छात्राओं को जोधपुर बटालियन से आए हवलदार महावीर सिंह तथा आचार्य कालूकन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रदान किए। इस अवसर पर बताया गया कि राष्ट्रीय कैडेट कोर देश का सबसे बड़ा संगठन है, जिसमें लगभग 15 लाख से अधिक एनसीसी कैडेट हैं। कैडेट्स का प्रशिक्षण समाज में अच्छा नागरिक बनने की दिशा में जीवन में एकता और अनुशासन अपनाना सिखाता है। एनसीसी में कैडेट्स का सर्वांगीण विकास संभव होता है।

'पानी बचाओ, जीवन बचाओ' विषय पर संवाद कार्यक्रम आयोजित

जल संरक्षण और शुद्धीकरण के अनेक प्रयोगों पर चर्चा

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत संस्थान में 'पानी बचाओ, जीवन बचाओ' विषय पर 26 अप्रेल को संवाद का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष व रजिस्ट्रार प्रो. बीएल जैन ने कहा कि पानी का सदुपयोग हमेशा करना चाहिए। प्रदूषित हुए जल को भी स्वच्छ बनाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने पानी की बर्बादी को कम करने, उपयोग किए गए पानी का पुनः उपयोग करने, भूजल को रिचार्ज करने, अपशिष्ट जल को रिसाइकिल करने के बारे में जानकारी प्रदान की। इस संवाद कार्यक्रम में भावना, भूमिका, खुशी, पूजा, अनिता, रतन, मुस्कान, नीतू, मनीषा, पलक, कविता, देविका, मोनिका, प्रगति, प्रमिला, हिमांशी, चिंकी आदि ने भाग लिया और बताया कि घर की छत पर वाटर हार्वेस्टिंग का प्रयोग, वर्षा के जल को एकत्रित करके, अधिक से अधिक बांधों के द्वारा, टांका, बावड़ी आदि के द्वारा हम जल को संरक्षित कर सकते हैं। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अमिता जैन ने बताया कि जल एक जीवनदायी प्राकृतिक संसाधन है। उन्होंने भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए जल संरक्षण और जलस्रोत पुनरुद्धार के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए हर खेत को पानी, नदी उत्सव, अमृत सरोवर आदि अनूठे अभियानों के बारे में बताया। छात्राओं ने संवाद में बताया कि पिछले साल 24 अप्रेल को 'अमृत सरोवर' मिशन का शुभारंभ किया गया था, जिसका उद्देश्य देश के प्रत्येक जिले में 75 जल निकायों में सुधार और कायाकल्प करना है। कार्यक्रम में लगभग 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

'वैश्विक कल्याण के लिए वैश्विक विज्ञान दिवस' थीम पर मनाया राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

संस्थान के शिक्षा विभाग में 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। वैश्विक भलाई के लिए मनाए जाने वाले इस दिवस के कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने बताया कि राष्ट्रीय विज्ञान दिवस इस वर्ष की थीम 'वैश्विक कल्याण के लिए वैश्विक विज्ञान' रखी गई है, क्योंकि भारत जी-20 की अध्यक्षता करेगा और वैश्विक कल्याण के लिए अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेगा। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओतप्रोत यह देश सभी के परोपकार का कार्य करता रहा है और करता रहेगा, क्योंकि उसकी सद्भावना 'सर्वेसन्तु निरामया' की रही है।

खुशाल जांगिड़, डा. मनीष भटनागर, छात्राध्यापिका कान्ता सोनी, छात्राध्यापिका रानी आदि ने मानव जीवन के लिए विज्ञान की भूमिका बताई। कार्यक्रम का संचालन डा. मनीष भटनागर ने किया। अंत में डा. अमिता जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया

संस्थान के शिक्षा विभाग में 7 अप्रेल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कार्यक्रम में दिनचर्या को स्वास्थ्य को प्रभावित करने में महत्त्वपूर्ण बताते हुए इसके असंयमित होने से होने वाले विभिन्न रोगों की जानकारी दी। उन्होंने नकारात्मक चिंतन से दूर रहने और सदैव सकारात्मक बने रहने की जरूरत बताई। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 7 अप्रेल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम में वैश्विक स्तर पर विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्लूएचओ द्वारा चलाए गए विभिन्न स्वास्थ्य उपक्रमों की सराहना की। उन्होंने इस अवसर पर मानसिक स्वास्थ्य का महत्त्व बताते हुए योगा एवं प्रेक्षाध्यान को जीवन की दैनिकचर्या में सम्मिलित करने का सुझाव दिया।

वैश्विक स्तर पर हिन्दी की अधिकारिक पहचान जरूरी

विश्व हिन्दी दिवस पर 10 जनवरी को आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा है कि जहां एक ओर राष्ट्रीय स्तर पर अधिकारिक मान्यता मिलने के उपलक्ष्य में 14 सितंबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है, वहीं विश्व पटल पर हिंदी को आधिकारिक पहचान दिलाने की कवायद में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

विश्व हिंदी दिवस के मौके पर प्रत्येक वर्ष, वर्षभर के लिए एक थीम निर्धारित की जाती है और वर्ष 2023 के लिए यह थीम 'मातृभाषा की महत्ता को सुरक्षित रखते हुए हिन्दी को जनमत की भाषा बनाना' रखी गई है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के समय से शुरू हुई इस दिवस की महत्ता में स्व. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सराहना करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि ये वे शख्सियत हैं, जिन्होंने हिंदी को विश्व पटल पर वह सम्मान दिलाया, जिसकी वह सदैव से आधीकारिणी रही है। उन्होंने देव भाषा संस्कृत से हिंदी के वर्तमान स्वरूप तक सशक्त होते भारतीय वैभव को अपने शब्दों में अभिव्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण द्वारा किया गया।

फ्रेशर पार्टी का आयोजन, कान्ता सोनी को मिस फ्रैशर का खिताब

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में नवागंतुक छात्राओं के लिए फ्रेशर पार्टी का आयोजन 19 जनवरी प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता और प्रो. रेखा तिवारी के मुख्य आतिथ्य में किया गया। छात्राओं ने पुष्पगुच्छ भेंट कर अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में 'मिस फ्रेशर' का खिताब कांता सोनी को, 'मिस ब्रेनी' का खिताब स्नेहा बोहरा को तथा 'मिस' का खिताब सिमरन बानो को मिला। कार्यक्रम में अनेक रंगारंग प्रस्तुतियां छात्राओं द्वारा दी गई। पूजा ईनानिया ने कालबेलिया नृत्य, टीना ने प्रेरणादायी गीत एवं सादिया बानो द्वारा स्वरचित कविता प्रस्तुत की। बीएससी की छात्रा खुशी जोधा ने कॉलेज की विशेषताओं को पीपीटी प्रेजेंटेशन के माध्यम से मुखरित किया। मुख्य अतिथि प्रो. रेखा तिवारी ने युवा शक्ति की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बच्चों को कार्यशील बने रहने का सुझाव दिया। अध्यक्ष प्रो. त्रिपाठी ने प्रस्तुतियों की सराहना की। कार्यक्रम का शुभारंभ बी.ए. की छात्रा पूनम एवं इशिता ने गणेश वंदना द्वारा किया। कार्यक्रम का संचालन आयोजक समिति की सदस्य डॉ. प्रगति भटनागर, श्वेता खटेड़ तथा अभिषेक शर्मा ने की। कार्यक्रम के आयोजन में आकांक्षा शर्मा, विशाखा जाँगिड, डिंपल जांगिड, सना, तानिया, निधि चोरड़िया, ममता अग्रवाल, राधिका चौहान की भी सहभागिता रही।

राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार सरदार पटेल पर आंतरिक व्याख्यान आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आंतरिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में 18 मार्च को आयोजित आंतरिक व्याख्यान में प्रेयस सोनी ने 'जूनागढ़, कश्मीर एवं हैदराबाद का एकीकरण' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। व्याख्यान में सोनी ने बताया कि भारत विभाजन के पश्चात देशी रियासतों के एकीकरण का कार्य यदि सफलतापूर्वक नहीं किया जाता, तो आज जिस भारत का स्वरूप हम देख रहे हैं वह लगभग असंभव होता। सरदार पटेल ने अपनी योग्यता के आधार पर तत्कालीन परिस्थितियों को भांपते हुए जूनागढ़, कश्मीर और हैदराबाद जैसी रियासतों का भारत में विलय करने हेतु जो कदम उठाए, उन पर सोनी ने विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। सोनी ने पाकिस्तान तथा भारत के विरोधियों द्वारा की जा रही साजिशों के खिलाफ सरदार पटेल की रणनीति की अहमियत पर भी प्रकाश डाला। अंत में अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रो. त्रिपाठी ने व्याख्यान को भारतीय एकीकरण की तात्कालिक परिस्थितियों एवं चुनौतियों के यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाला सच्चा दर्पण बताया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'वर्तमान में तुलसी साहित्य की प्रासंगिकता' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत

'वर्तमान में तुलसी के साहित्य की प्रासंगिकता' विषय पर 29 अप्रेल को आयोजित व्याख्यान में हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने कहा है कि तुलसीदास के साहित्य में सामाजिक और राजनीतिक जीवन आदर्श, नैतिक मूल्य, सामाजिक सौहार्द और समन्वय भावना, आदर्श जीवन मूल्यों का प्रवर्तन, समतामूलक समाज की संरचना सन्निहित है। तुलसी के काव्य में नारी सम्मान की गाथा, तात्कालिक समाज में व्याप्त भुखमरी और बेरोजगारी का चित्रण भी तुलसी साहित्य में आया है। उन्होंने आदर्श रामराज्य की कल्पना करते हुए सभी समस्याओं का हल भी सुझाया है। तुलसी के काव्य में सभी जगह लोकमंगल की भावना समाहित है। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आयोजित मासिक व्याख्यानमाला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया कि वर्तमान प्रासंगिकता की दृष्टि से नैतिक मूल्यों में गिरावट, बढ़ते अपराधीकरण, भ्रष्टाचार, गरीबी और बेरोजगारी तथा अवसरवादी राजनीति आदि विसंगतियों पर तुलसी ने अपने काव्य से करारा प्रहार किया है। व्याख्यान के बाद चर्चा में तुलसी एवं भक्तिकालीन विभिन्न काव्यधाराओं पर अन्य संकाय सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए। अंत में अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने व्याख्यान की विषयवस्तु को मानव मात्र के लिए उपयोगी बताया।

मासिक व्याख्यानमाला में राज्य का दार्शनिक एवं सैद्धांतिक स्वरूप बताया

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में मासिक व्याख्यानमाला के अंतर्गत राजनीति विज्ञान के सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने 08 फरवरी को राज्य के दार्शनिक एवं सैद्धांतिक स्वरूप को व्याख्यायित किया। डॉ. सिंह ने राज्य व व्यक्ति के आपसी संबंधों को प्रस्तुत किया और राज्य के उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धांतों के बारे में जानकारी दी। राज्य के बारे में अलग-अलग विचारकों द्वारा प्रतिपादित राज्य विषयक विचारधाराओं पर आधारित व्यक्तिवादी आदर्शवादी, उदारवादी, मार्क्सवादी, समाजवादी आदि प्रमुख अलग-अलग स्वरूपों को भी बताया गया। अंत में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने अध्यक्षीय वक्तव्य में बताया कि विश्व में संप्रभुता के नित नए मायने गढ़े जाने से एक आदर्शराज्य की कल्पना को पुनःस्थापित करने की महती आवश्यकता है। व्याख्यान समन्वयक अभिषेक चारण ने संयोजन किया। अंत में इतिहास के सहायक आचार्य प्रेयस सोनी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती मनाई

संस्थान के शिक्षा विभाग में 11 अप्रेल को महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती मनाई गई। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने इस अवसर पर कहा कि महात्मा फुले महान ने समाजसुधारक, विचारक, दूरद्रष्टा, क्रांतिकारी थे, जिन्होंने अछूतों व अतिशूद्र कहे जाने वाले तबके के लोगों के उत्थान के लिए विविध कार्य किए। उन्होंने महिला शिक्षा पर बल दिया और बालविवाह व विधवा विवाह का विरोध किया। उन्होंने किसानों की हालम सुधारने की दिशा में भी कार्य किया। कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाएं व संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती 11 अप्रेल पर आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि समाज सुधारक ज्योतिराव गोविंदराव फुले ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत काम किया। उन्होंने स्त्री शिक्षा, स्त्री स्वतंत्रता, विधवा विवाह, बाल विवाह का प्रतिकार आदि समाज सुधारों को सर्वोपरी रखते हुए अपने जीवन को स्त्री जीवन के सम्मान एवं स्वाभिमान हेतु समर्पित कर दिया।

संस्कारों को पुनर्स्थापित करना आवश्यक

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 30 मार्च को आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्श जीवन एवं उनके द्वारा कर्म को सर्वोपरि रखे जाने वाले संस्कारों को पुनर्स्थापित करने को वर्तमान जीवन की महती आवश्यकता बताया। कार्यक्रम में स्नेहा बोहरा, तेजस्विनी शर्मा, अभिलाषा शर्मा, संतोष ठोलिया, पूनम राय आदि छात्राओं ने भी अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम के प्रारम्भ में कार्यक्रम-समन्वयक अभिषेक चारण ने रामवन्दना प्रस्तुत की। अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

डा. अम्बेडकर जयंती मनाई

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती पर प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में 13 अप्रेल को कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रो. त्रिपाठी ने कार्यक्रम में कहा कि डॉ. अम्बेडकर के शैक्षिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक विचारों एवं उनके दलितोत्थान सम्बंधी कार्यों पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रारंभिक जीवन के संघर्षों को बताया।

डा. बलवीर सिंह ने आदर्श राज्य की अवधारणा के वैचारिक आधार पर बाबासाहेब अंबेडकर को 'आधुनिक मनु' की संज्ञा दी। कार्यक्रम में छात्रा खुशी जोधा एवं प्रियंका सोनी ने भी अंबेडकर के बारे में अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन अभिषेक चारण ने किया।

पराक्रम दिवस पर किया सुभाष बोस को याद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन तथा संरक्षण में सुभाषचंद्र बोस जयंती 23 जनवरी को संस्थान में पराक्रम दिवस के रूप में मनाया गया। शिक्षा विभाग में पराक्रम दिवस पर 23 जनवरी को आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि सुभाष चंद्र बोस पराक्रम, साहसी, वीर योद्धा, शौर्य शक्ति, ओजस्विता के धनी थे। उन्होंने संपूर्ण भारत में पराक्रम की चेतना भर दी थी। नेताजी बोस ने जीवन में कभी गुलामी को नहीं अपनाने पर बल दिया। अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह के लिए पूरे समाज को संगठित करने का प्रयास किया। कार्यक्रम में छात्राओं ऊषा सारण, प्रमिला, ईमान बानो व काजल ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के विचारों, नारों, कविताएं व उनके देश के प्रति समर्पण भाव को व्यक्त किया। छात्रा पूजा, शबाना, ज्योति व लक्ष्मी ने नेताजी के शौर्य व पराक्रम की गाथा और उनके उद्घोष को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन प्रभारी प्रमोद ओला ने किया।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में पराक्रम दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि सुभाष चंद्र बोस संपूर्ण देश में एक महान जननायक के रूप में जाने जाते हैं। उनका त्याग, बलिदान एवं राष्ट्रवाद की भावना का दृष्टिकोण युवाओं के लिए सदैव प्रेरणादायक है, इनसे प्रेरणा लेकर युवा वर्ग अपने राष्ट्र के प्रति सम्मान एवं समर्पण की भावना और गुणों का विकास कर सकते हैं। कार्यक्रम में छात्रा सना ने भी सुभाषचंद्र बोस की जीवनी के बारे में बताया।

शहीद दिवस पर शांति सभा का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में महात्मा गांधी के प्रयाण दिवस 30 जनवरी को शहीद दिवस के रूप में मनाया गया व शांति सभा आयोजित की गई। शांति सभा में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि महात्मा गांधी भारतीय सनातन संस्कृति एवं भारतीय जीवन मूल्यों में आस्था रखने वाला ऐसा फकीर था, जिसके सत्याग्रह के आगे दुनिया की तमाम सामरिक शक्तियां नतमस्तक हुई। अहिंसक प्रवृत्ति को अपने जीवन में उतारकर दुनिया के लिए वे प्रेरक बने। कार्यक्रम का संयोजन अभिषेक चारण ने किया। सभा के अंत में समस्त संकाय सदस्यों एवं छात्राओं द्वारा दो मिनट का मौन रखा गया।

आदि शंकराचार्य एवं महाकवि सूरदास की जयंती मनाई गई

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में जगद्गुरु आदिशंकराचार्य की जयंती व संत सूरदास जयंती पर 25 अप्रेल को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि भक्तिकालिन दार्शनिक पीठिका के अंतर्गत अद्वैतवाद के प्रवर्तक शंकराचार्य के मात्र 16 वर्ष की अल्पायु में संपूर्ण वैश्विक ज्ञान को अपने अंदर समाहित करने की अलौकिक क्षमता विकसित कर चुके थे। उन्होंने बताया कि शंकराचार्य ने 5 वर्ष की उम्र में ही तात्कालिक गुरुकुल व्यवस्था में प्रवेश लिया एवं 7 वर्ष की उम्र में संपूर्ण गुरुज्ञान प्राप्त कर लिया। इसके साथ ही प्रो. त्रिपाठी ने संत कवि सूरदास जयंती पर भक्तिकालीन कृष्ण भक्ति काव्यधारा के अग्रणी संत कवि सूरदास के जीवनवृत्त पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के संयोजक अभिषेक चारण ने अंत में आभार ज्ञापित किया।

फाल्गुनी गीतों पर छात्राओं का धमाल, सामूहिक भोज का आनंद लिया

संस्थान के शिक्षा विभाग में छात्राध्यापिकाओं ने 4 मार्च को होली के गीत-संगीत के साथ नृत्य की प्रस्तुतियां देते हुए जमकर धमाल मचाया। छात्राओं ने परस्पर गुलाल लगाया और छुट्टियों से पूर्व सभी सहेलियों ने होली खेली। छात्राओं में रेणु, रुचिका, कविता, डिम्पल, सीमा स्वामी, रजनी स्वामी, दमयंती, शोभा सेवदा, निकिता, पूनम, पूजा, कंचन, नेहा आदि ने नृत्यों की प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का संयोजन डा. सरोज राय ने किया। इस अवसर पर सामूहिक भोज के रूप में विभिन्न देशी व्यंजनों को बनाकर छात्राओं द्वारा रसास्वादन किया गया। शिक्षा विभाग के साथ राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वावधान में मिल्लेट्स यम्मी कुकिंग कार्यक्रम और होली पर्व कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्राओं ने बाजरा और मक्की के आटे से बने विभिन्न व्यंजन तैयार किए। सभी छात्राओं ने फिर मिलकर साथ में उनका भोजन किया।

मिल्लेट्स कुकिंग कार्यक्रम में छात्राओं ने बनाए मोठ-बाजरे के लजीज व्यंजन

संस्थान के शिक्षा विभाग एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्त्वावधान में मिल्लेट्स यम्मी कुकिंग कार्यक्रम और होली पर्व कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्राओं ने बाजरा और मक्की के आटे से बने विभिन्न व्यंजन तैयार किए। इनमें दाल-बाटी-चूरमा, बाजरा की रोटी और केर-सांगरी की सब्जी, प्याज व प्याज की सब्जी, मोठ व मूंग की सब्जियां, मक्की के पकोड़े आदि अनेक व्यंजन शामिल थे। सभी छात्राओं ने फिर मिलकर साथ में उनका भोजन किया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष व कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने कहा कि भारतीय त्यौंहार हमारी संस्कृति की विशेषता है। ये आपसी भेदभावों को भुलाने और एकता के सूत्र में पिरोने का काम करते हैं।

कार्यक्रम संयोजक डा. सरोज राय ने विश्व मिलेट्स वर्ष मनाए जाने के बारे में जानकारी देते हुए देसी अनाज और अन्य देसी खाद्य पदार्थों की पोषकता और लाभ की जानकारी दी। कार्यक्रम में एनएसएस प्रभारी डा. आभासिंह, डा. अमिता जैन, डा. विष्णु कुमार, डा. गिरधारीलाल, जगदीश यायावर आदि एवं सभी छात्राएं उपस्थित रही।

फागोत्सव पर रंगारंग कार्यक्रम

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में होली अवकाश से पूर्व 4 मार्च को फागोत्सव के रूप में एक रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उनका साफा पहनाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में होली के नृत्य, गायन व विभिन्न खेल आदि आयोजित किए गए। इनका संचालन में स्नेहा बोहरा, ईशा प्रजापत, गार्गी जांगिड़, आकांक्षा शर्मा, राधिका चौहान, ममता अग्रवाल, पूजा शर्मा, निधि चौरड़िया, युक्ता वर्मा, खुशबू सोनी, प्रियंका भंसाली आदि छात्राओं ने किया। इस अवसर पर प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. बलबीर सिंह, अभिषेक चारण, सुश्री श्वेता खटेड़, अभिषेक शर्मा, सुश्री देशना चारण, कुशाल जांगिड़ आदि उपस्थित रहे।

रामनवमी पर्व मनाया

संस्थान के शिक्षा विभाग में रामनवमी पर 29 मार्च को आयोजित कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने राम को भगवान विष्णु का सातवां अवतार बताया और भगवान श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम बताते हुए कहा कि उनका जीवन पूरी तरह से अनुशासित और मर्यादित रहा था। उन्होंने अनुशासन और मर्यादाओं के लिए शिक्षार्थियों को रामायण व अन्य संबंधित कृतियों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

पुरुषार्थ के लिए संकल्प का पर्व है भारतीय नववर्ष

संस्थान के शिक्षा विभाग में 22 मार्च को भारतीय नववर्ष कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि चैत्र मास में शुरू होने वाले इस नववर्ष पर्व को विभिन्न स्थानों पर विभिन्न रूपों में मनाया जाता है। यह नववर्ष सबके जीवन में सुख, समृद्धि और सफलता से परिपूर्ण एवं शुभकामनाओं से ओतप्रोत है। नववर्ष पर अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिए पुरुषार्थ का संकल्प लिया जाता है। इसे संकल्प पूर्ण होने का पर्व माना जाता है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड, डॉ. सरोज राय, डॉ. मनीष भटनागर, प्रमोद ओला आदि संकाय सदस्य एवं शिक्षा विभाग की बी.ए.-बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
PUBLICATION LIST

SL	Publication	Writer/Editor	Price
BOOKS			
01.	जैन–प्रबोधन : जैन दृष्टि	प्रो. बच्छराज दूगड़	140
02.	पूज्यपादेन आचार्यमहाप्रज्ञेन प्रणीता जैनन्यायपंचाशती (न्यायप्रकाशिकाव्याख्यायुता)	पं. विश्वनाथ मिश्र	100
03.	प्राकृत भाषा प्रबोधिनी	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	250
04.	जैनधर्मदर्शन का ऐतिहासिक विकासक्रम	डॉ. सागरमल जैन	700
05.	आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान	प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. बी.एल. जैन	450
06.	आचार्य महाप्रज्ञ का हिन्दी साहित्य का अवदान	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	300
07.	जैन आगमों का सामान्य ज्ञान (प्रथम एवं द्वितीय भाग)	डॉ. महावीर राज गेलड़ा	250
08.	अपभ्रंश साहित्य का इतिहास	प्रो. प्रेम सुमन जैन	950
09.	Bhagavati Aaradhana	Dr. Dalpat Singh Baya	1995
10.	Teaching English : Trends and Chaalenges	Dr. Sanjay Goyal	300
11.	Anekanta : Philosophy and Practice	Prof. Anil Dhar	250
12.	Studies in Jaina Agamas	Prof. Dayanand Bhargav	550
13.	Various Dimensions of Social Culture	Prof. Damodar Shastri, Dr. Bijendra Pradhan, Dr. Hemlata Joshi	350
14.	Jain View of Reality: A Hermeneutic Interpretation	Dr. Samani Rohini Prajna	450
15.	Corporate Sector and Value Orientation	Dr. Jugal Kishor Dadhich	170
16.	Jain Philosophy : A Scientific Approach to Reality	Ed. Prof. Samani Chaitanya Prajna, Narayan Lal Kachhara, Narendra Bhandari, Kaushala Prasad Mishra	150
17.	Psycho-Social & Psycho-Biological Studies to Investigate Effects of Yoga-Preksha-Dhyan on Aggressiveness and Academic Performance of School Children	Prof. Viney Jain	250
ENCYCLOPEDIA			
01.	जैन पारिभाषिक शब्दकोश	मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा	995
02.	जैन न्याय पारिभाषिक कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	500
03.	दृष्टांत कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	375
04.	Jain Paribhasika Sabdakosa	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrutavibha	1125
05.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. I	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
06.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. II	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
MONOGRAPH SERIES			
01.	Introduction to Jainism	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125
02.	Jain Doctrine of Reality	Dr. Samani Shreyas Prajna, Dr. Samani Amal Prajna	125
03.	Jain Doctrine of Knowledge	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha	125
04.	Jain Doctrine of Karma	Prof. Samani Riju Prajna, Sarika Surana	125
05.	Jain Doctrine of Anekant	Dr. Samani Shashi Prajna	125
06.	Jain Doctrine of Naya	Prof. Anekant Kuamr Jain	125
07.	Jain Doctrine of Nine Tattvas	Prof. Pradyuman Singh Shah	125
08.	Jain Doctrine of Six Essentials	Dr. Arihant Kumar Jain	125
09.	Jain Doctrine of Aparigraha	Prof. Sushma Singhvi, Dr. Rudi Jansma	125
10.	Jain Doctrine of Nyaya	Prof. Samani Riju Prajna, Dr. Samani Shreyas Prajna	125
11.	Jain Doctrine of Dreams	Dr. Sadhvi Rajul Prabha	125
12.	Jainism : A Living Realism	Prof. S.R. Vyas	125
13.	Jain Doctrine of Aayushya	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha	125
14.	An Introduction to Preksha Meditation	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125
15.	Political Thought of Jainism	Naresh Dadhich	125
16.	Notion of Soul (Atma) in Jainism	Samani Rohini Prajna	150

Acharya Mahaprajna Naturopathy Centre

(A Commitment for A System of Life; Made of Humility and Empathy)

FEATURES:

- Comfortable Stay and Hospitality
- Detox and Rejuvenation
- Spiritual Environment
- Experienced Doctors
- Full Day Treatment
- Therapeutic Food
- Outdoor Gym
- Yoga Studio

THERAPIES:

- Colon Therapy
- Mud Therapy
- Hydrotherapy
- Steam/Sauna Bath
- Shirodhara, Panchkarma
- Stone Therapy
- Cupping Therapy
- Circular Jet, Spine Jet
- Jacuzzi .....and many more

Accommodation	Rates
Dormitory	Rs. 25,000/-
Semi-Deluxe	Rs. 42,000/-
Deluxe	Rs. 60,000/-

Specialized Treatment Programs:

Detox Program, Pain Management, Weight Loss Program, Allergy & Asthma Care, Diabetes Care, Wellness, Special Yoga Therapies

Separate Treatment Facility for Males & Females

Book Now

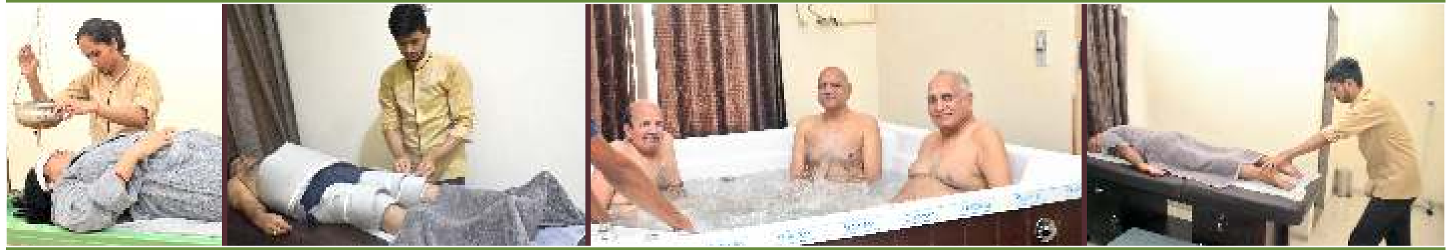

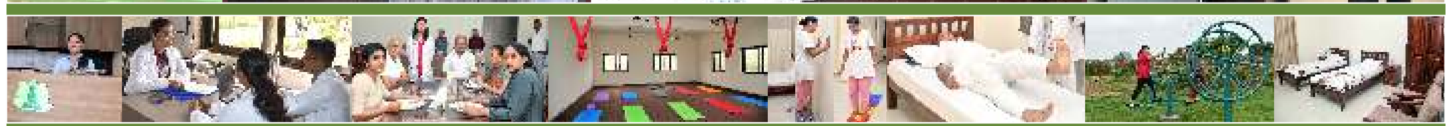

FOR REGISTRATION

+91-8209184651 ammcn001@gmail.com https://naturopathy.jvbi.ac.in